स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

अगस्त 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

आगम रत्नाकर आचार्य सम्राट् श्री आत्मारामजी म. सा. 148वाँ जन्मोत्सव

आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. 83वाँ जन्मोत्सव

पर जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से

कोटिशः वंदन - नमन - अभिनंदन !!

सूरत - आचार्य भगवंत पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में जारी धार्मिक गतिविधियां।

चेन्नई - युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में जारी धार्मिक गतिविधियां।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 08 | अगस्त- 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560

एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10
जैन योग एवं अध्यात्म...	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म.सा.	11-12
श्रमण संघ का सौभाग्य...	- युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	13-14
एकांत सुख के लिए धर्म...	- डॉ. श्री समकितमुनिजी म.सा.	14
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	15-16
जोरावरमल जी म.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	17-18
चातुर्मासिक धर्म यज्ञ...	- प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा.	19
रत्न ही रत्न में...	- प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'	20
धर्म की असली परिभाषा...	- सलाहकार श्री रमणीकमुनिजी म.सा.	21
जैन जगत की अमर...	- साध्वी डॉ. श्री सूर्याजी म.सा.	22
सन्यासी बड़ा या गृहस्थ	- श्री संदीप गौतमचंद बाफना जैन	23-24
ओलंपिक और हार-जीत	- श्री अरुण कुमार जैन	25
आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषि	- श्री एस. सुरेशचंद लुणावत जैन, चेन्नई	26-27
क्षमा का अमृत	- श्री पदमचंद गांधी जैन, जयपुर	28-29
आधुनिक युग में आदर्श...	- श्री मनोजकुमार कांतिलाल कात्रेला, पुणे	30-31
विनय मोक्ष का द्वार	- श्री बी. शांतिलाल पोखरणा जैन, विजयनगरम	32
दक्षिण भारत में जैन...	- डॉ. बी. रमेश गादिया जैन, बैंगलोर	33-34
श्रुत साधिका महासती...	- डॉ. दिलीप धींग	35-36
आत्मशुद्धि का महापर्व	- डॉ. प्रेमसुख सुराणा जैन, अजमेर	37-40
हर बात अनुपम थी उनकी	- श्री प्रफुल्लकुमार सी. कोटेचा जैन, मदुरांतकम	41
सफल जीवन का रहस्य	- डॉ. संपत सेठी	42
भूकंप आपदा...	- रिंकल कुम्भट जैन	43
जैनत्व की झांकी...	- सौ. शुभांगी मनोजकुमार कात्रेला, पुणे	44-45
समाचार प्रकाश		46
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449	10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108	12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत	98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे	98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर	93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर	98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद	92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई	98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई	94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर	98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली	98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर	78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली	98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता	98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना	70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे	98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई	98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी	87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर	94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष

श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली	98104 35108

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे	98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे	98903 01635

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर	93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर	98452 21302

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत	70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई	98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर	83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर	94480 81348

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	98220 31788

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर	98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर	92149 63701

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती	98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर)	98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर	98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद	92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली	93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना	98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर	98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत	98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

- सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	**रु. 1000/-**
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर 99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे 88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद 93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर 98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर 98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर 98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर 98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी 98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक 95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली 98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा 94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर 89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर 89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

सम्पादकीय

E-mail: ajvk1973@gmail.com

समाज में संगठन की आवश्यकता !

- अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

आदरणीय पाठकगण-आत्मप्रिय बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र !

समाज मनुष्यों का एक ऐसा समूह है जिसमें सार्वभौमिक रूप से मानव रुचि की समानता पाई जाती है। वे मनुष्य जो समान रूचि, समान धर्म व समान मान्यता मान्यताओं का पालन करते हैं उसे समाज कहा जाता है। समाज केवल व्यक्तियों का समूह मात्र नहीं अपितु यह तो व्यक्तियों के बीच के संबंधों की व्यवस्था है और संबंधों की व्यवस्था जागरूकता के द्वारा होती है। समाज का महत्व इस बात से भी पता लगता है कि जब कोई व्यक्ति अच्छा कार्य करता हूँ तो कहा जाता है कि आपने समाज में अपने सम्मान को बढ़ाया है। बुरा कार्य करने वाले भी समाज से डरते हैं।

समाज की आवश्यकता हमें मानव जाति के कल्याण के लिए है। मनुष्य के मन में मानवता, दया, प्रेम, करुणा विशेष रूप से ये गुण होते हैं। इस कारण अपने आस-आस के लोगों के सहयोग के लिए सामाजिक व्यवस्थाएं की जाती है। संस्थाओं का निर्माण करने के पीछे भी यही उद्देश्य होता है कि अपने समाज के लोगों का भला हो सके। किसी भी संस्था के निर्माण व उसे गतिमान रखने के लिए कुछ व्यवस्थाएं की जाती है। कुछ को पद प्रदान किए जाते हैं कि वे अधिकार पूर्वक व्यवस्था को संभाल सकें। कुछ लोग सेवा कार्य में जुटे रहते हैं। सभी के सहयोग से कार्य आगे बढ़ता है। एक दूसरे पर विश्वास करते हुए पारस्परिक सहध्योग करते रहना - यही किसी भी संस्था या समाज के लिए सफलता का प्रथम चरण है।

जब सभी अपना-अपना सहयोग देते हैं तो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष उन सभी सेवा व सामाजिक कार्यों में पुण्य के भागी बन जाते हैं जो संस्था द्वारा किए जा रहे हैं। जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा किए जा रहे सभी कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग देने वाले सभी पदाधिकारी कार्यकर्ता हृदय से धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इन सभी योजनाओं से जुड़कर अपनी सहभागिता प्रस्तुत की।

बंधुओं, वर्तमान समय की मांग है कि सेवा और सहयोग के साथ-साथ हम संगठन पर भी विचार करें। आपसी एकता किसी भी समाज के विकास का आधार है और आपसी फूट किसी भी समाज के पतन का माध्यम विघटन किसी भी समाज के लिए शुभ नहीं, इसमें हानि समाज की ही है। इतिहास साक्षी है कि जो समाज संगठित होकर रहा उसने सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए। आपसी मतभेद होना कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि मानव चिन्तनशील प्राणी है। सबका अलग-अलग मन तो अलग-अलग मत होना भी स्वाभाविक ही है, परन्तु ज्ञानी महापुरुष कहते है कि मतभेद को मतभेद ही रहने देना चाहिए। मतभेद के कारण मनभेद उचित नहीं। आपस के विचार-वैमनस्य के कारण मन में किसी के प्रति कुंठा पालना या वैर की भावना उचित नहीं है। भगवान महावीर ने कहा है :-

मित्तिमे सव्व भूएसू वैरं मज्झं न केणई।

सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव रखना, किसी भी जीव से वैर भाव न रखना यही भगवान महावीर के सच्चे अनुयायी होने का लक्षण है। संसार के सभी मानव यदि अपने मन में यही सुन्दर भाव रखें तो संसार ही स्वर्ग है। आशा करता हूँ कि हम सब भी एक बनें, नेक बनें व अपने-अपने उत्तर दायित्वों का निर्वहन करते रहें।

हमारा जैन धर्म आत्म धर्म है व पर्युषण महापर्व आत्म आराधना का पर्व है। आठ दिनों के पर्युषण पर्व में हम ज्ञान वाचना द्वारा महान आत्माओं के जीवन चरित्र सुनते हैं व संवत्सरी महापर्व पर आलोचना, प्रतिक्रमण व क्षमापना के द्वारा आत्मा का शुद्धिकरण करते हैं। जाप-पाठ-सामायिक एवं तपस्या के माध्यम से कर्मों की निर्जरा का प्रयास सभी साधकों का रहता है। आईये एक सितम्बर से आठ सितम्बर तक होने वाले इस आत्म शुद्धि के महायज्ञ में आप सभी धर्म आराधना कर अपने चित्त में मैत्री भाव, करुणा भाव माध्यस्थ भाव व प्रमोद भाव को बढ़ाते चलें। आप सभी को पर्युषण पर्व व संवत्सरी महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं एवं अपने सामाजिक कर्तव्य व दायित्व निर्वहन में हुई ज्ञात, अज्ञात भूलों के लिए सभी से क्षमा याचना ! पाठकगण भी सच्चे हृदय से क्षमा पर्व की आराधना करें, उदार हृदय से क्षमा दान व निराभिमानिता से क्षमा याचना कर चित्त को सरल व शुद्ध बनाएं ❖❖

अध्यक्षीय उद्गार

स्थानकवासी सम्प्रदाय आगे बढ़े !

E-mail : rjachallani@gmail.com

– आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष – जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

आदरणीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

जैन स्थानकवासी जैन समाज सदियों से एक ऐसी विचारधारा से आता है, जिसमें सदैव स्व के हित की परवाह किये बिना दूसरों के हित की चिंता और सुखसाता का मानस रखती है। जैन स्थानकवासी सम्प्रदाय भारत के श्वेतांबर जैनों का एक आधुनिक उपसंप्रदाय है। श्रमण संघ इसकी मातृ संस्था है जो दशकों से स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय का नेतृत्व करती आ रही है और जिन धर्म का प्रचार-प्रसार कर रही है।

मेरा और हम सभी का सदैव से मानना है कि हम सभी को श्रमण संघ के नेतृत्व में ही रहकर आगे बढ़ना है और बढ़ाना है। श्रमण का विस्तार हो इसको लेकर युवाचार्यश्रीजी ने वर्तमान चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा **'श्रमण संघ निष्ठा पत्र'** का विमोचन किया था ताकि श्रमण संघ में आस्थावान श्रावक-श्राविकाओं का डाटा एकत्रित कर इसका संरक्षण जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा किया जा सके। हम सभी को श्रमण के झण्डे तले ही रहना है, अन्य सम्प्रदायों में जाकर उनका गुणगान नहीं करना चाहिए। भूतकाल में जो गलतियाँ हो चुकी है, उसको सुधारा जा सकता है।

उपरोक्त मन की बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि हाल ही में चेन्नई चातुर्मास में एक घटना सामने आई है, जिसमें हमारे श्रमण संघ के बंधुवर अन्य सम्प्रदाय / गच्छ के चातुर्मास अपने क्षेत्र में करवा रहे हैं और वे अन्य सम्प्रदाय / गच्छ वाले हमारे श्रमण संघीय पूज्य साधुवृंद के विषय में आलोचनात्मक बातें श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष खुलकर बोल रहे हैं और वे सब शांत होकर यह आलोचनाएं सुन भी रहे है। उन्होंने कर्नाटक गज केसरी, खद्दरधारी, घोर तपस्वी पूज्य श्री गणेशीलालजी म.सा. एवं श्रमण सूर्य, मरुधर केसरी, पू. श्री मिश्रीमलजी म.सा. के प्रति आलोचनात्मक बातें प्रवचन के दौरान कहीं, जिसको सहन नहीं किया जाएगा। क्यों हमारे ही श्रमण संघ के बंधुवर अन्य सम्प्रदाय/ गच्छ के चातुर्मास अपने क्षेत्र में करवा रहे ? क्यों अपने श्रमण संघ के साधुवृंद की आलोचना करवा रहे है और सुनकर शांत बैठे है ? यह सब घटना क्यों हुई ? यह सब जानकारी सभी को होने के बावजूद सभी शांत बैठे हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए, दूसरे के बहकावे में न आएं। हम सभी को श्रमण संघ के प्रति ही सच्ची निष्ठा और आदर भाव रखना चाहिए। आचार्य सम्राट् परम पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. की निश्राय में ही सच्ची आस्था और निष्ठा रखनी ही चाहिए।

स्थानकवासी सम्प्रदाय सदैव आगे बढ़े, दूसरे सम्प्रदाय के क्षेत्र में कोई भी अन्य सम्प्रदाय प्रवेश न करें। हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक सम्प्रदाय में, चाहे वह कोई भी हो, किसी भी गच्छ का हो, उसमें प्रत्येक विषय जैसे संस्कृत, अंग्रेजी, प्राकृत अन्य सैकड़ों भाषाओं पर पकड़ रखने रखने वाले विद्वान साधु-साध्वीवृंद मौजूद है। मुझे ही माने, ऐसा क्यों कहा जा रहा है? ज्ञान तो चहुंओर उपलब्ध है, ज्ञान लेना और देना चाहिए परन्तु किसी के सम्प्रदाय, किसी की निष्ठा, किसी आस्था को ठेस पहुंचाना सरासर गलत है। इसलिए अभी भी समय है, जो घटना हुई है, उस पर अपना विरोध दर्ज कराएं और हुई गलती को सुधारकर भविष्य में ऐसी घटना दोबारा न इसका अनुसरण किया जाए, ऐसी भावना रखता हूँ।

हमारी जैन कॉन्फ्रेंस समाज के उत्थान के प्रयासों में सदा ही अग्रसर रही है। जैन कॉन्फ्रेंस के सामने अनेक महत्वपूर्ण लक्ष्यों को लेकर हम चले और अनेको कार्य जैन भवन, जैन कॉन्फ्रेंस हेतु भी किये। मैं मानता हूँ कि इतने महत्वपूर्ण कार्य किसी एक व्यक्ति के प्रयासों से नहीं बल्कि हम सभी के संयुक्त प्रयासों से ही होने संभव हो पाए है। आप सभी महानुभावों के सक्रिय सहयोग से ही मैं उन्हें निभाने का प्रयास कर पाया हूँ। मैं आप सभी से नम्र प्रार्थना करता हूँ कि भाईयों हम सभी मिलकर समाज एवं धर्म की दिल से सेवा करने की प्रतिज्ञा करें और हमारी जैन कॉन्फ्रेंस की गरिमा को और भी ऊंचाई की ओर बढ़ाये।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से आप सभी को पयुर्षण पर्व एवं संवत्सरी महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं। वर्ष भर में जाने-जाने में मुझसे अथवा मेरे परिवार से किसी के प्रति अपशब्द बोले गये हो अथवा असताना हुई हो तो क्षमा याचना करता हूँ, खमत खामणा, मिच्छामि दुक्कडम् !

जैन योग एवं अध्यात्म साधना

- आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

जैन दर्शन में योग को समझने से पूर्व हमें जैन दर्शन को समझना होगा। जैन दर्शन से पहले हमें दर्शन को समझना होगा। दर्शन अर्थात धारणा-प्रत्येक दर्शन की अपनी धारणा है, जिसकी जो धारणा है, उस धारणा के अनुसार उसका ध्यान हो जाता है। अतः योग में धारणा, ध्यान, समाधि का विषय आता है। जैन दर्शन की धारणा है - (1) सत्य, सत्य है - मैं आत्मा हूँ। (2) ध्यान-जीव का जीव में स्थित होना। (3) समाधि-निर्विचार, निर्विकल्प हो जाना।

'सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणी मोक्ष मार्गः' सत्य का बोध होना, सत्य पर श्रद्धा होना और सत्य में जीना ये ही मोक्ष मार्ग है।

आगमों में कहा है-**"सच्चं खू भगवं"** सत्य ही भगवान है। सत्य वो है जो शाश्वत है, अविनाशी है। जो भूत में भी था, वर्तमान में भी है भविष्य में भी रहेगा। उस सत्य को जानना, समझना, उसकी धारणा मानना, उस पर श्रद्धा करना, उसमें जीना ही धर्म है। इसे ही जैन दर्शन में अस्तित्व कहा है। **अस्तित्व का बोध होना ही जैन दर्शन की शुरुआत है।** अतः जैन दर्शन के मूल आगम आचारांग सूत्र की शुरुआत अस्तित्व बोध से होती है। वहाँ जीव का अज्ञान बताते हुए कहा है कि बहुत से जीव ये नहीं जानते मैं कौन हूँ? मेरा स्वरूप क्या है? मेरा लक्ष्य क्या है?

जैन दर्शन में पहली धारणा आत्मा की है। मैं आत्मा हूँ-आत्मा हूँ तो कैसा हूँ? तो आत्मा के गुण-धर्म इसमें आते हैं-आत्मा अष्ट गुणों से युक्त है, जिसमें अनंत ज्ञान, अनंत-दर्शन, अनंत सुख, अनंत शक्ति, निराकार, अगुरु लघु, क्षायिक सम्यक्तव, अटल अवगाहना से युक्त हूँ, मैं समृद्ध हूँ, सम्पन्न हूँ, परिपूर्ण हूँ।

आत्मा का धर्म ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव है। मैं आत्मा हूँ तो पूरे लोक में अनंत जीवों में मेरे समान आत्मा है, अभेद दृष्टि से हम सभी आत्मा समान हैं। भेद दृष्टि से शरीर भिन्न है और आत्मा भिन्न है। भेद विज्ञान के द्वारा आत्मबोध प्राप्त कर आत्मा पर श्रद्धा करना और आत्मा का आत्मा में स्थित होना इसमें जैन दर्शन की शुरुआत भी है व पूर्णता भी है।

जैन दर्शन में योग की साधना दो तत्वों के ज्ञान से प्रारंभ होती है। वे दो तत्व हैं जीव और अजीव, जिसे जैन दर्शन में षटद्रव्य भी कहते हैं।

(1) जीव आत्मा जब अज्ञान में, विभाव में होता है तब एक भूल करता है, वह भूल है परतत्व को स्व तत्व मान लेना। इसे ही जैन दर्शन में मिथ्या दर्शन कहा है। अजीव तत्व पर है। जीव तत्व स्व है। स्व और पर का भेद करने से जैन दर्शन की योग की साधना प्रारंभ होती है, इसे ही सम्यक् दर्शन कहते हैं।

जैन योग का आधार है सम्यक् दर्शन, सत्य का दर्शन, सत्य की धारणा। सत्य है मैं आत्मा हूँ। असत्य है मैं देह हूँ। मैं व्यक्तित्व हूँ। मेरा नाम है, लिंग है, पद है, प्रतिष्ठा है। मैं कुछ हूँ, पुद्गल को अपना मानना, पुद्गल के आधार पर अपना पराया मानना, राग-द्वेष करना यहाँ संसार खड़ा होता है।

सम्यक् दर्शन के आधार पर मुक्ति का महल खड़ा होता है। जैन योग के सात अंग है, जिन्हें हम सात तत्व भी कहते हैं। जैन योग को हम क्रमशः समझेंगे।

जीव-आत्मा-शाश्वत सत्य, यात्रा जीव की है। अस्तित्व जीव का है। जीव चार गति से मुक्त होकर अपने लक्ष्य सिद्ध शिला की ओर बढ़ने वाला है। केन्द्र बिन्दू आत्मा है।

अजीव-देह व देह से जुड़ा संसार, पुद्गल जिसका स्वभाव सड़ना-गलना बदलना है। परिवर्तनशील संसार है, वह अजीव का है।

आस्रव-संसार का कारण जिससे कर्म विभाव दशा में, अज्ञान दशा में जीव के साथ जुड़ते हैं। जिसमें मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कशाय, अशुभ योग आते हैं।

संवर-मुक्ति का कारण, जिससे कर्म का आगमन रूकता हैं और यात्रा मुक्ति की ओर प्रारंभ होती है। इसके 5 भेद हैं। (1) सम्यक्त्व (2) व्रत (3) अकषाय (4) अप्रमाद (5) शुभ योग।

बन्ध-जो कर्म विभाव दशा में जीव के साथ जुड़ते हैं। जिससे कार्मण शरीर बनता है उसे बन्ध कहते हैं। कर्म आठ

प्रकार के हैं, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, अन्तराय। बन्ध के चार भेद हैं- प्रकृतिबन्ध, प्रदेषबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध।

निर्जरा-बन्धे कर्म क्षय करते हुए, अपने गुणों को प्रकटाने की कला है-निर्जरा। इसके बारह भेद हैं। 6 बाह्य व 6 आभ्यंतर। इसमें हम देह को तपाते हुए, आत्मा पर लगे कर्म क्षय करते हुए पूर्णता की ओर बढ़ते हैं।

मोक्ष-मोह को क्षय कर सर्व कर्मों से मुक्त होकर आत्मा की अपने स्वभाव में नित्य स्थिति मोक्ष है। सशरीर मोक्ष केवली दशा, अशरीर मोक्ष सिद्ध शिला।

इस मुक्ति को प्राप्त करने में जैन योग में निम्न साधन बताये हैं -

(1) सम्यक्तव-भेद-विज्ञान, आत्म-ज्ञान, स्वरूप पर श्रद्धा में परिपक्वता।

(2) व्रत-अणुव्रत, महाव्रत आदि।

(3) अप्रमत्तदशा- होश, विवेक की साधना।

(4) अकषाय-स्वभाव में स्थिरता, ज्ञाता-दृष्टा भाव की साधना।

(5) योग-मन-वचन, काया के योग का निरोध कर मन से पार जाकर जीव का जीव में स्थिर रहने के लिए साधना बताई है।

सामायिक साधना : सामायिक साधना में जीव को केन्द्र बिन्दु बनाकर जीव संकल्प करता है।

इसमें साधक-योग का प्रत्याख्यान करता है, यानि संकल्प करता है कि मैं जीवन पर्यन्त या दो घड़ी के लिए, तीन करण, तीन योग से अर्थात् करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदू नहीं, न मन से, न वचन से, न काया से। कोई प्रवृति न करते हुए अपने स्वभाव में स्थित होता है यानि जीव 48 मिनिट के लिए निर्विचार, निर्विकल्प समाधि में अखण्ड शुक्ल ध्यान में स्थित होता है, उसे ही लोगस्स सूत्र में उत्तम समाधि कहा है। "आरुग्ग बोहिलाभं, सामहिवर मुत्तमं दिन्तु"। अर्थात् मुझे आत्मबोध प्राप्त हो, उत्तम समाधि प्राप्त हो इसे ही शुक्ल ध्यान कहा है।

ऐसी समाधि अखण्ड एक घड़ी 24 मिनिट प्राप्त कर ले तो क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त कर लेता है। दो घड़ी 48 मिनट अखण्ड शुक्ल ध्यान में रहे तो साधक केवल ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इसकी क्रमशः साधना निर्जरा के आभ्यंतर तप में प्राप्त होती है।

प्रायश्चित-आलोचना-प्रतिक्रमण व तदुभय से प्रायश्चित करता है। आगे के लिए विवेक रखता है।

विनय-भेद ज्ञान से अहंकार को क्षय कर विनय में स्थित होता है।

वैयावृत्त्य-आत्मार्थी साधकों की साधना में सहयोगी बनकर सेवा करना।

स्वाध्याय-स्व का अध्ययन करना शरीर व आत्मा का भेद ही स्वाध्याय है।

ध्यान-आर्त ध्यान, रौद्र ध्यान अर्थात् पुद्गल का चिंतन। धर्म ध्यान द्वारा जीव का चिंतन करना व शुक्ल ध्यान में निर्विचार, निर्विकल्प समाधि में प्रवेश करना यही उत्तम समाधि है। उत्कृष्ट अवस्था में जीव केवल ज्ञान प्राप्त करता है।

कायोत्सर्ग-जड़ और जीव का भेद कर देह को पराया मानकर मोह कर्म को क्षय करने की साधना है कायोत्सर्ग।

इस प्रकार हम जैन योग से अध्यात्म को आत्मसात कर वर्तमान में जीवन मुक्त दशा एवं अशरीरी अवस्था सिद्ध शिला को प्राप्त कर सकते हैं। ❖❖

जीवन का मकसद

एक गांव में एक वृद्धा रहती थी। कहने को तो उसके दो पुत्र थे, लेकिन दोनों ही उसे गांव में अकेली मरने के लिए छोड़कर दूर शहर में जा बसे थे। वृद्धा दिन भर घूम-फिर कर इधर-उधर से भोजन इकट्ठा करती और किसी तरह अपना पेट भर लेती। उसे अपना जीवन निरर्थक लगने लगा था। वृद्धा जिस गली में रहती थी, उसके नुक्कड़ पर एक छोटा सा नाला था, जिसकी वजह से वहां कीचड़ हो जाती थी। एक रात वहां एक राहगीर को सहारा देकर घर ले गई और उनकी देखभाल करने लगी। वह ठीक हो गया। उस दिन से वृद्धा एक दीपक जलाकर नुक्कड़ पर रखने लगी, जिसे वहां रोशनी हो जाती और राहगीर बचकर निकल जाते। वृद्धा रोज ऐसा करने लगी। उसे जीने की एक राह मिल गई थी।

- रमेश जैन (दिल्ली)

श्रमण संघ का सौभाग्य - गुरु आनन्द

- श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

पयसा कमलं कमलेन पयः,
पयसा कमलेन विभाति सरः ।
निशया च शशी, शशिना च निशा,
निशया शशिना च विभाति नमः ।।

संस्कृत सुभाषित का भावार्थ है - पानी से कमल की और कमल से पानी की तथा कमल और पानी के कारण सरोवर की शोभा है। रात्रि से चंद्र की, चन्द्र से रात्रि की तथा रात्रि एवं चन्द्र के कारण नभोमंडल की शोभा होती है। यही बात समूह, समुदाय में भी देखी जाती है। इसी का आदर्श एवं जागृत उदाहरण स्वरूप रहे। श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचाग्र सम्राट् श्री आनंदऋषिजी म.।

बाल्यावस्था में माता हुलसा के वात्सल्यपूरित अनुभवपूर्ण सकारात्मक शिक्षाओं के सुसंस्कार प्राप्त हुये। किशोर अवस्था तथा युवावस्था में गुरुवर्य पू. श्री रत्नऋषि जी म. की सुलझी हुई दूरदृष्टि युक्त सोच का सुयोग्य मार्गदर्शन मिला। धर्म प्रभावना, संघसेवा करते हुये जैनाचार्य पूज्य श्री अमोलकऋषि जी म., जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म. आदि वरिष्ठ संतों का स्नेहमय सन्निध्य उपलब्ध हुआ। स्वयं के भीतर स्थिति अनेक सद्गुणों का भंडार समय-समय पर निमित्त पाकर प्रकट होता गया। पुरुषार्थ हेतु सर्वथा, समग्रतः प्रतिक्षण कटिबद्ध रहे।

सुसंस्कार, सुयोग्य मार्गदर्शन, स्नेहशील सत्सान्निध्य के फलस्वरूप एक परिपूर्ण, सद्गुण सम्पन्न, सुस्वभावी धीर-गंभीर व्यक्तित्व का निर्माण हुआ। यह व्यक्तित्व ऐसा था, जिसके भीतर समाज-संघ के लिये गहरी संवेदना थी। समाज में व्याप्त अशिक्षा, संघ में आगम-दर्शन, न्याय-तत्व, व्याकरण के प्रति उपेक्षा को आपने निकट से देखा अनुभव किया। अशिक्षा को दूर करने के लिए श्री तिलोक जैन ज्ञान प्रसारक मंडल-पाथर्डी, जैन छात्रावास बोदवड़ आदि अनेकों शिक्षण सहयोगी संस्थाओं की स्थापना तथा संचालन के लिये प्रबल प्रेरणा प्रदान की। उसी तरह जैन धर्म शिक्षण प्रसारक संस्था-नागपूर, श्री रत्न जेन पुस्तकालय-पाथर्डी आदि के माध यम से अनेक ग्रन्थों का, सत्साहित्य का प्रकाशन करवाया। जब आपने इन संस्थाओं के निर्माण की प्रेरणा तथा सत्साहित्य प्रकाशन की व्यवस्थाओं को प्रोत्साहन दिया, वह समय रुढ़िवादी विचारधाराओं का था। यह कार्य अत्यंत दुसह था, तथापि समाज के भविष्य को लक्ष्य में रख आपने यह कार्य संपन्न किया।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्य था ज्ञानसाधना के प्रति चतुर्विध संघ की उपेक्षा को दूर करने का। श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड-पाथर्डी की स्थापना आपश्री की प्रेरणा से ईस्वी सन् 1936 में हुई। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषि जी म. के संस्कृत के अध्यापक पंडितवर्य श्री राजधारीमणिजी त्रिपाठी के साथ विचारविमर्श के द्वारा यह कार्य प्रारंभ हुआ। अनेक गणमान्य विद्वानजनों के निर्देशन में परीक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम तैयार हुआ। पाठ्यक्रम तथा परीक्षा बोर्ड के साथ देश के सुदूर प्रान्तों में इसका प्रचार-प्रसार किया गया। पेशावर, रावलपिंडी से लेकर जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध यप्रदेश आदि में जैन समाज में इन परीक्षाओं की धूम मची। परीक्षा हेतु बच्चों, महिलाओं तथा अनेकों संत-सती जी में रुचि जागी।

इस समग्र परीक्षा व्यवस्थाओं को संभालने के लिये आर्थिक सहयोग नितांत आवश्यक था। आचार्य भगवंत ने अपनी साधु मर्यादाओं का निर्वाह करते हुये समाज के श्रेष्ठी जनों को प्रेरित किया। दूरदर्शी तथा गुरुभक्त श्रावक वर्ग भी आचार्य श्री जी की भावना तथा कार्य की महत्ता को जानकर यथाशक्ति अपना-अपना योगदान करने लगे। आचार्य श्री जी की अपनी कार्यशैली थी। वे हमेशा यही कहते कि कार्य मजबूत हो, लम्बे समय तक चलने वाला हो, चिरस्थायी हो इस तरह की व्यवस्था बनें। यही कारण है कि अस्सी (80) वर्ष बीत जाने पर भी परीक्षाबोर्ड को आर्थिक परेशानियों से जूझना नहीं पड़ा। आज भी परीक्षा बोर्ड आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ है तथा कार्यरत है।

शिक्षण संस्था, परीक्षा बोर्ड के साथ आपने अधिक ध्यान दिया। संध संगठन, परस्पर सामंजस्य पर आचार्य भगवंत के विचरण में जहां कहीं भी संघ सदस्यों में परस्पर सिकी प्रकार की अनबन, खटपट हो तो उसे मिटाने हेतु प्रेरणा देते। विदर्भ, मालवा, राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में आपश्री के सत्प्रयासों से संघ में परस्पर सौहार्द का वातावरण बना। ईस्वी सन् १९६५ में आपश्री की सत्प्रेणा से दिल्ली का महासंघ बना। आपके वाणी-व्यवहार-संयम-सादगी ने दिल्ली वालों को आपका दीवाना बना दिया। समस्त दिल्ली महानगर के श्रीसंघों ने आपके निर्देशों का सम्मान करते हुये महासंघ की निर्मिति की। संघ संगठन हेतु आपने श्रमण संघ स्थापना से पूर्व भी आपने दो बार राजस्थान तक की पदयात्रा करके संगठन के प्रति अपनी भावनाएं साकार की।

संघ-समाज के प्रति आपके इस प्रकार की विविध गतिविधियों के कारण सम्पूर्ण भारत के जैन समाज की आपके प्रति विशेष आस्था रही। आपके दर्शन हेतु सम्पूर्ण देशभर से श्रद्धालुगण आपके चरणों में पहुँचते रहे। यह गुरुदेव एवं गुरुभक्त का विशेष सम्बन्ध, रिश्ता आपके रूप से अधिक स्पष्ट रूप से समाज में उभर कर आया। आपके व्यक्तित्व कृतित्व से संघ सुशोभित हुआ। और संघ समाज के प्रति आस्था से आपका आभामंडल अलंकृत हुआ। इन दोनों के सुयोग से मात्र स्थानकवासी समाज नहीं अपितु जैन समाज गौरवान्वित हुआ।

❖❖

एकांत सुख के लिये धर्म स्पर्शना आवश्यक है

- आगमज्ञाता पू. डॉ. श्री समकितमुनिजी म.सा.

संसार के सभी प्राणी ऐसी सुखमय व्यवस्था की अभिलाषा करते हैं जो कभी भी समाप्त ना हो अर्थात् स्थायी हो। यूं भी कहा जा सकता है कि वे सभी एकांत सुख के अभिलाषी हैं, एकांत सुख की प्राप्ति केवल और केवल धर्म की शरण में जाने से ही संभव है। एकांत सुख प्रदाता धर्म को प्राप्त करना बहुत ही कठिन होता है, धर्म का आचरण सहित दैनिक जीवन में पालन करना तो और भी कठिन है। शास्त्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि दस तत्वों का मिलना अत्यंत कठिन है। ये क्रमशः मनुष्य भव, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल, दीर्घ आयु, परिपूर्ण इन्द्रियाँ, निरोग शरीर, सद्गुरु का समागम, आगम श्रवण, शुद्ध श्रद्धा व धर्म स्पर्शना।

इनमें धर्म स्पर्शना की प्राप्ति बेहद मुश्किल है। धर्म पर श्रद्धा रखने वाले सम्यक्तवी जीव चारों गति में मिलते हैं किन्तु पूर्ण रुप से धर्म की स्पर्शना करने वाले सिर्फ एक ही गति में मिलते हैं और वह गति है, मनुष्य गति। धर्म आचरण करने की योग्यता मनुष्य को प्राप्त होती है। मानव यदि संत नहीं बन सकता हो, तो कोई बात नहीं किन्तु उसे श्रेष्ठ श्रावक बनकर धर्म की आराधना अवश्य करनी चाहिये। एकांत सुख प्राप्त करने की दिशा में धर्म स्पर्शना का होना बेहद उपयोगी व आवश्यक है। पुण्योदय से आप सभी को ये दस तत्वों की प्राप्ति हुई है। अतः इस अवसर का लाभ उठाकर परम सुख की प्राप्ति करना अब आपके हाथ में है।

एक बार चातुर्मास का ऐतिहासिक अवसर हमें प्राप्त हुआ है। यदि हम इस बार चूक गये तो बहुमूल्य जिंदगी में हम एक वर्ष पीछे चले जायेंगे। अतः आप सभी तप-जप और त्यागपरक आत्म साधना करते हुये धर्म स्पर्शना करने के प्रति सजग रहें। इस चातुर्मास में स्वयं का परिचय प्राप्त करें। 'मैं कौन हूँ' इस बात की जानकारी हासिल करें। जिस पल हम स्वयं को जान लेते हैं, ठीक उसी पल हमें आत्मज्ञान की प्राप्ति हो जाती है, आत्मज्ञानी का जीवन महाजीवन बन जाता है, हमें अपने आपको खोना नहीं है, अपितु आत्मा को पाने में खोना है।

बहुत सुहाना सफर आया है। अतः लाभ उठा लें। आगे का सफर स्वतः ही सुहाना हो जायेगा। सफर को सुहाना बनाना है या फिर सूना-सूना। यह आप लोगों पर निर्भर है। आत्मा को पाने के लिये हर सम्भव प्रयास करना चाहिये। ❖❖

(गतांक से आगे ...)

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

प्रथम अजमेर साधु-सम्मेलन और राजस्थानी परिदृश्य

वृहत साधु-सम्मेलन का प्रथम बार अजमेर में होना निश्चित होने से सभी स्थानकवासी जैन साधुओं को यह सूचना दी जा चुकी थी। अतः सं. 1989 का चातुर्मास उठते ही सभी साधुओं का विहार भी अजमेर की ओर होने लग गया था, आगन्तुक साधुओं का स्वागत करना राजस्थान के साधुओं का परम कर्त्तव्य था, इस दृष्टि से मरुधरा से सक्रिय संत पू. श्री मरुधर केसरीजी म.सा. ने ब्यावर में, 'मरुधर प्रान्तीय साधु-सम्मेलन' के अगले चरण में पूरक द्वितीय प्रांतीय अधिवेशन के आयोजन की प्रेरणा दी। तदनुसार ब्यावर में प्रान्तीय साधु-सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन में सभी वरिष्ठ संत-साध्वीजी म.सा. पुनः मिले और उन्होंने सर्वसम्मति से एक समिति का गठन किया। जिसका नाम रखा गया- "अ.भा. साधु-सम्मेलन स्वागत समिति" इसके संचालन का भार श्री मरूधर केसरीजी म.सा. को सौंपा गया। समिति के द्वारा सर्वसम्मति निर्णय हुआ कि आगामी वृहद् सम्मेलन में पंजाब, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों के सन्तों के सम्मिलित होने की स्वीकृति आ चुकी है और अजमेर राजस्थान का हृदय है। हम मारवाड़ी मेवाड़ी होकर भी राजस्थानी हैं। अतः हम राजस्थानी (मरुधरीय) सन्तों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम आगन्तुक सन्तों का हार्दिक स्वागत करें, उनको सहयोग दें। हमारे यहां पधारने वाले समस्त साधर्मी सन्तों की सेवा-भक्ति करना हमारा सर्वोच्च कर्त्तव्य है। स्वागत के लिए किये गये निर्णयानुसार पंजाब से पधारने वाले सन्तों के स्वागत का भार स्वामी श्री पन्नालालजी महाराज को सौंपा गया और उनका सेवा कार्य-क्षेत्र किशनगढ़ से ब्यावर तक सीमित किया गया। महाराष्ट्र से पधारने वाले सन्तों के स्वागत का भार श्री गणेशीलालजी स्वामी और श्री बख्तावरमलजी महाराज को सौंपा गया। उनका सेवा क्षेत्र भीलवाड़ा से ब्यावर तक रखा गया। इसी प्रकार आबूरोड़ से ब्यावर तक सौराष्ट्र-गुजरात से पधारने वाले सन्तों के स्वागत का भार स्वामी श्री छगनलालजी महाराज तथा श्री मरुधरकेसरीजी म.सा. को सौंपा गया।

पू. श्री मरुधर केसरीजी म.सा. को जो विशिष्ट उत्तरदायित्व मिला, उसके निर्वाह के लिये आपश्रीजी ब्यावर से विहार करके सैंदड़ा, बर, झूटा, सांडिया, सोजत, पाली, सुमेरपुर आदि होकर अपने सन्तदल के साथ शिवगंज पधारे। वहाँ दरियापुरी सम्प्रदाय के सन्त श्री पुरुषोत्तमचन्दजी म., श्री हर्षचन्दजी म. तथा श्री भायचन्दजी म. आदि सन्त पधार गए थे। उनका स्वागत करके उनकी सुखसाता पूछकर उनके साथ स्वयं सेवक देकर आपश्रीजी आगे बढ़े। लगभग 15 मील का विहार करके सज्जन रोड़, पिंडवाड़ा पहुँचे। वहाँ रात्रि निवास करके प्रातः 5 मील विहार किया कि मार्ग में ही खम्भात सम्प्रदाय के पूज्य श्री छगनलालजी म. ठाणा 4 से आते हुए दिखाई दिये। उनसे सुखसाता पूछकर उनके साथ वापिस 5 मील, जहाँ से विहार किया था, वहीं वापस आए। वहाँ उन्हें ठहरा कर तथा आहार पानी कराकर सन्तों के साथ तीन स्वयं सेवकों को देकर आपश्री ने विहार किया।

वहाँ से 12 मील पर कइवल्ली स्टेशन पहुँचे और दूसरे दिन वहाँ से 5 मील का विहार करके आबूरोड़ (खराड़ी) पहुँचे। वहाँ योगनिष्ठ पं. त्रिलोकचन्दजी स्वामी, श्री चतुर्भुजजी स्वामी (कच्छी) आदि ठाणे 2 से मिले। उन्हें स्थानीय जैन धर्मशाला में ठहराया, आहार पानी कराया।

इसी बीच आबूरोड़ में ही श्री दुर्लभजी भाई का तार मिला कि शतावधानी मुनि श्री पंडित रत्नचन्द्रजी म. को काठियावाड़ के संघपतिजी ने सम्मेलन में भेजने की स्वीकृति स्वास्थ्यगत कारणों से नहीं दी है, अतः मन्त्री मुनि श्री मरुधर केसरीजी, स्वामी श्री छगनलालजी को लेकर काठियावाड़ पधारे। समय बहुत ही अल्प था। इसलिए आपने संघसेवा हेतु सम्मेलन की तिथियों का समय अत्यन्त निकट समझ कर उग्र विहार किया। आपश्री कभी तो 30-30 मील और कभी 46-

46 मील तक का विहार करके शीघ्र काठियावाड़ श्री संघपतिजी के पास पहुँचें। संघपति से काफी बातचीत करके स्वीकृति प्राप्त की और उक्त सन्तों को साथ में लेकर धीरे-धीरे पालनपुर होते हुए आबूरोड़ वापिस लौट ही रहे थे कि मार्ग में ही गौंडल सम्प्रदाय के स्वामी श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को पक्षाघात (लकवा) हो गया। अतः चित्रासणी स्टेशन से टेलीफोन द्वारा पालनपुर संघ के श्रावकों को सूचना दी गई। वहाँ से श्रावक लोग डॉक्टर को लेकर आए, डॉ. के परामर्श के अनुसार स्वामीजी को उपचार के लिए ठा. 2 से पालनपुर वापस भेजना पड़ा। तत्पश्चात् बोटाद सम्प्रदाय के स्वामी श्री माणकचन्दजी महाराज ठाणे 3, सायला सम्प्रदाय के स्वामी श्री मणिलालजी महाराज ठाणे 3, शामजी स्वामी ठाणे 3 तथा लीम्बड़ी सम्प्रदाय के शतावधानी पं. मुनि श्री रत्नचन्द जी स्वामी ठाणा 5 एवं अन्य सन्त आदि कुल ठा. 32 सन्तों को लेकर आपश्री आबूरोड़ पधारे। वहाँ तीन दिन विराजे।

यहाँ माउन्ट आबू से योगीराज श्री शान्ति विजयसूरिजी म. का कुछ प्रमुख श्रावकों द्वारा सन्देश प्राप्त हुआ कि एक बार आपको माउन्ट आबू पधारना होगा, अन्यथा आपको गुरुदेव की शपथ होगी। अतः विवश होकर योगीजी के अनुरोध पर श्री मरुधर केसरीजी म. ने कुछ सन्तों को रेलपटरी के मार्ग से शनैः-शनैः अजमेर की दिशा में विहार करवा दिया और आप स्वयं 11 ठाणे गुजराती सन्तों सहित 4 दिन माउन्ट आबू पर रखा और विभिन्न दर्शनीय स्थान दिखाये।

वहाँ से अनादरा, सिरोड़ी, बेड़ा, सिरोही, अरटबाड़ा, शिवगंज आदि होकर आप सन्तदल सहित सांडेराव पधारे। इन मार्गवर्ती सभी गाँवों में श्वेताम्बर मूर्ति पूजकों के संघ हैं। सर्वत्र व्याख्यान वाणी का अपूर्व ठाठ रहा। लोगों ने अच्छी सेवा भक्ति की। कई जगह मारवाड़ी स्थानकवासी श्रावक भी दर्शनार्थ आये। गुजराती संतों को मारवाड़ के सज्जनों ने सत्कार करके अभिभूत कर लिया। जनता ने उन्मुक्त हृदय से संतों का स्वागत किया। मार्ग में प्रत्येक कदम पर पंक्तिबद्ध होकर जनता में जैन-जैनेत्तर लोग सन्तों के स्वागत एवं दर्शनों के लिए उपस्थित रहते थे। उसी समय ब्यावर में 19 सम्प्रदायों के एक सौ उन्नीस संत उपस्थित थे। मालवा क्षेत्र से मालव केसरी पूज्य श्री सौभाग्यमलजी म.सा. एवं स्वामी श्री ताराचन्दजी म.सा. का पदार्पण हो चुका था।

प्रथम अजमेर सम्मेलन में प्रवेश व व्यवस्थापन :

प्रातःकाल सभी सन्तों का अजमेर-नगर प्रवेश होने वाला था, इसलिए स्थानीय श्रावकों की ओर से सन्तों के स्वागत की जोर-शोर से तैयारियाँ हो रही थीं। स्वयं सेवक लोग केसरिया पोशाक में सजे हुए अत्यन्त उत्साह के साथ ध्वजोत्तोलन करते हुए संतों के स्वागतार्थ नगर के बाहर उपस्थित थे। गगनभेदी जय-जयकार के नारों से सारे नगर को गुँजायमान करते हुए करीब 251 संतों को पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ अजमेर संघ ने नगर प्रवेश कराया। सभी सन्तों को सुविधानुसार सुमेर भवन, केसरीसिंहजी की हवेली के नौहरे एवं सूरतरामजी की कचहरी से लाखन कोटड़ी आदि स्थानों की व्यवस्था की गई थी। तदनुसार पूज्य श्री जवाहरलालजी म. सूरतरामजी की कचहरी में, पू. श्री ज्ञानचन्दजी म. के संघाड़े के सन्त कचहरी के पास ही एक मकान में, करीब 116 सन्त सुमेर भवन के कमरों में विराजमान हो गये। व्याख्यान मण्डप श्री सुमेर भवन के विशाल प्रांगण में सुसज्जित किया गया था। मीटिंग के लिए भी हवेली के साथ ही चौक में पंडाल बनाया गया था।

सम्मेलन की व्यवस्था और प्रारम्भ : अ. भा. वृहत् साधु-सम्मेलन का आयोजन मेयो कॉलेज के बाहर वामकक्ष में सड़क पर किये जाने की योजना थी। तदनुसार वहाँ एक विशाल 'लोकाशाह नगर' बनाया गया, जहाँ अनेक सुविधाओं से पूर्ण अतिथिशाला में प्रतिनिधि सदस्यों के आवास की व्यवस्था थी। यहीं जैन कॉन्फ्रेंस का कार्यालय भी एक कक्ष में पूर्ण व्यवस्थित हो चुका था। प्रतिनिधि सदस्यों की सेवा के लिए करीब 1500 स्वयं सेवक अपने प्रधान कर्नल बाबू श्री सुगनचन्दजी नाहर के निर्देशन में पूर्ण तत्परता से कार्यरत थे। लगभग 1 लाख 45 हजार श्रावक-श्राविकाओं ने अजमेर सम्मेलन के अधिवेशन में प्रतिनिधि रूप में भाग लिया और 32 ही सम्प्रदायों के भारत विख्यात तेजस्वी, प्रतिभा सम्पन्न करीब 251 सन्त और 80 सतियों ने पधारकर इस वृहत् सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। मन्त्रणा मण्डल में केवल 76 सन्त प्रतिनिधि सदस्यों के रूप में विराजते थे। *(... क्रमशः)*

साभार :- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

विशिष्ट वैरागी, ज्ञानाभ्यासी, स्वामीजी श्री जोरावरमलजी म.सा.

सन्त-महापुरुषों ने विश्व भर में सात्विक स्नेह की सुनिर्मल सरस सरिता बहाई है। अपने तपःपूत जीवन से जन-मानस को जागृत किया और अपने सदाचरणों से सर्वत्र सद्गुणों की सौरभ फैलाई। ऐसे जिन नर-रत्नों के नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं, उनमें एक नाम पूज्य स्वामीजी श्री जोरावरमलजी म.सा. का भी है।

मेड़ता के पास, गोटन स्टेशन के अति निकट लघुतम ग्राम 'सिहु' में श्री रिद्धकरणजी बोथरा एवं श्री मगनकंवर बाई के गृहांगन में वि.सं. 1936 अक्षय-तृतीया को आपका जन्म हुआ। बचपन में ही आपके पिताश्री का स्वर्गवास हो गया। पिताजी की मृत्यु को देख बालक जोरावर को वैराग्य उत्पन्न हो गया। अनेक परीषहों को सहन कर माता और पुत्र दोनों ही दीक्षित हो सके थे। दोनों की दीक्षा का घटनाक्रम इस प्रकार है -

एकदा आगमज्ञा गुरुणीजी श्री चौथाजी म.सा. अपनी शिष्या मण्डली के साथ सिहु पधारीं। महासती श्री चौथाजी अपने समय की सुप्रसिद्ध ख्याति प्राप्त साध्वी रत्ना थी। सतीजी के प्रतिभापूर्ण प्रवचनों का प्रभाव मगनकंवरबाई पर ऐसा पड़ा कि उनके हृदय में वैराग्य की भावना हिलोरें लेने लगीं। जब सतीजी श्री चौधाजी म. ने सिहु से प्रस्थान किया तो मगनकंवरबाई अपने पुत्र जोरावर को लेकर सतीजी के साथ सिहु से रवाना हो गई।

जब महासतीजी फलोदी (वर्तमान में मेड़ता रोड़) पहुंची तो मगनकंबरबाई ने अपना निर्णय महासतीजी के समक्ष प्रस्तुत कर दिया और स्वयं ही श्वेत वस्त्र धारण कर लिये तथा अपने ससुराल सूचना भिजवा दी कि मुझे तथा जोरावर को दीक्षा लेना है। अतः आप हमारे लिए अनुमति भेज दीजिये, जिससे दीक्षा व्रत को सुलभता के साथ ग्रहण कर सकें। इस सूचना के पाते ही मगनकंवरबाई के जेठजी मेड़ता रोड़ पहुंचे और क्रोध से आग-बबुला होकर उन्होंने श्वेत वस्त्रधारिणी मगनकंवरबाई को लाठियों से पीटना पारंभ कर दिया।

जेठजी ने मगनकंवरबाई पर लगभग 20 बार लाठियों का वार किया। इतना होने पर भी मगनकंवरबाई, अपने विचारों से विचलित नहीं हुई। अकम्पभाल से मगनकंवरबाई ने अपने जेठ से कहा कि आपकी ओर से 20 बार लाठियों का प्रहार हो गया है। अब 21वाँ प्रहार आपके ऊपर मेरा होगा अर्थात् मुझे अवश्यमेव संयम ग्रहण करना ही है।

मगनकंवरबाई की यह बात सुनकर उनके जेठ के मुख से यह बात फूट पड़ी कि "तुम खुशी से दीक्षा ग्रहण कर सकती हो, पर जोरावर को मेरे साथ भेज दो।"

अपने जेठ के मुख से इतना सुनते ही मगनकंवरबाई ने कहा- "बस हो गया मेरा कार्य सिद्ध।" आपने मुझे तो दीक्षा लेने की अनुमति प्रदान कर ही दी और जोरावर पर तो एकमात्र मेरा ही स्वाधिकार है, अतः मैं स्वयं आज्ञा देकर उसे दीक्षित कर दूंगी। क्योंकि कहा भी है -

संयममय जीवन ही जीवन का सार है, आचार का आचरण ही, जीवन का निखार है, वीतराग साधना से ही मिलेगी-शांति और कर्मों से मुक्ति सत्य, अहिंसा, विनय, वैयावृत्य ही जीवन का शृंगार है।

इस प्रकार मगनकंवरबाई ने तो स्वयं भागवती दीक्षा ग्रहण की ही, साथ में अपने होनहार प्रिय पुत्र जोरावर को भी दीक्षा दिलवा कर 'जयमल संघ' को एक अनमोल रत्न भेंट किया।

वि.सं. 1936 की अक्षय-तृतीया को स्वामीजी श्री जोरावरमलजी म. का जन्म दिवस था और वि.सं. 1944 की अक्षय-तृतीया दीक्षा दिवस था।

नागौर में उस समय के सुप्रसिद्ध वैयाकरण और चर्चावादी सन्त परम श्रद्धेय स्वामीजी श्री फकीरचन्दजी म. के शिष्य रत्न बनें। स्वामीजी श्री फकीरचन्दजी म. के 16 शिष्य थे। उनमें स्वामीजी सबसे लघु शिष्य थे। बचपन से ही स्वामीजी में सर्वतोमुखी प्रतिभा थी, अतः उनका अध्ययन अतीव उच्चतम रहा। योग्यतम गुरुदेव की सेवा में रहकर शिष्य योग्यतम बने, इसमें अतिशयोक्ति भी क्या ?

स्वामीजी ने संस्कृत, प्राकृत, आगम, चूर्णी, टीका, भाष्य, काव्य, छन्द शास्त्र एवं ज्योतिष आदि का गंभीर अध्ययन किया। अपने समय के वे आगमों के एक तलस्पर्शी ज्ञाता, विचक्षण विद्वान् माने जाते थे। वे उग्र क्रियावादी नहीं तो कोरे ज्ञानवादी भी नहीं थे। उनमें ज्ञान एवं क्रिया का सुन्दरतम संगम था। स्वामीजी श्री जोरावरमलजी म. 'यथा नाम तथा गुण' उक्ति के अनुसार सचमुच जोरावर थे। उनके चेहरे पर चमकता हुआ ओज था। किसी भी व्यक्ति की हिम्मत एकदम उनके सामने बोलने की नहीं होती थी।

यद्यपि उनका विचरण राजस्थान में ही हुआ था फिर भी उनका वर्चस्व जैन एवं जैनेतर समाज में सर्वत्र छाया हुआ था। स्वामीजी सही बात को ही पकड़ते थे, पर उनकी पकड़ बहुत सुदृढ़ होती थी। आगम के आधार पर तर्क की कसौटी पर कसकर वे विरोधियों को ऐसा करारा जबाब देते कि विरोधी व्यक्ति स्वयं में उपशान्त हो जाते।

स्वामीजी सुधारवादी भी थे। अनेक स्थानों पर उन्होंने परम्परा से प्रचलित अनेक कुप्रथाओं का निवारण किया। बारात में रात्रि भोजन, ढ़ोल पर कुलीन औरतों का नाचना, विवाह आदि में औरतों का गन्दे गीत गाना-आदि कुप्रथाएं आपने ओसवाल समाज में बन्द करवाई। अछूत जाति के प्रति भी स्वामीजी की बड़ी हमदर्दी थी।

साधु समाज में क्रिया की ढ़िलाई स्वामीजी म.सा. को बिलकुल नहीं सुहाती थी। चाहे अपनी सम्प्रदाय के ही साधु क्यों न हो, जिनमें वे क्रिया की ढ़िलाई देखते तो उनसे वे अपना सम्पर्क कभी नहीं रखते थे। इस बात को लेकर स्वामीजी साधु समाज में कुछ कठोर प्रकृति वाले भी जाने जाते थे।

स्वामीजी में एक खास विशेषता थी कि यदि साधु समाज की गलत प्रवृतियों को देखकर श्रावक समाज में उन साधुओं के प्रति अश्रद्धा का वातावरण बन जाता तो वे समाज में पुनः उनकी जाजम जमाने में भी कभी नहीं चूकते थे।

स्वामीजी जैन आगमों के गहन अभ्यासी थे। आगम ज्ञान के प्रसार हेतु उनके मन में बड़ी उत्कण्ठा थी। वे फरमाते थे "आगम ज्ञान ही आत्म-ज्ञान की कुंजी है।" उन्हीं के सुयोग्य सुशिष्य युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी म. 'मधुकर मुनि' ने उनकी इस अन्तर्भावना को सफल बनाया। आज जैन आगमों का सरल हिन्दी अनुवाद, विवेचन, सर्व साधारण को सुलभ हो रहा है।

स्वामीजी म. का 42 वर्ष संयमी जीवन रहा। अन्त में उन्होंने थंवाल' में वि.सं. 1986 ज्येष्ठ शुक्ला 4 को समाधि मरण प्राप्त किया।

❖❖

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 अगस्त से 20 सितम्बर 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस		पुण्य स्मृति दिवस	
आचार्य श्री अमोलकऋषिजी म.सा.	23 अगस्त	स्वामी श्री रंगलालजी म.सा.	28 अगस्त
प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म.सा.	06 सितम्बर	आचार्य श्री अमोलकऋषिजी म.सा.	28 अगस्त
आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा.	15 सितम्बर	मेवाड़ केसरी श्री मोहनलालजी म.सा.	28 अगस्त
श्री शुक्लचंद्रजी म.सा.	15 सितम्बर	श्री माणकचंदजी स्वामी म.सा. 'बोटाद सं.'	30 अगस्त
आचार्य प्रवर श्री जयमलजी म.सा.	16 सितम्बर	मेवाडी श्री हस्तीमलजी म.सा.	16 सितम्बर
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	18 सितम्बर		
युवा प्रज्ञ श्री अमरेशमुनिजी म.सा.	18 सितम्बर		

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

चातुर्मासिक धर्म यज्ञ में भेद विज्ञानी आत्म - ज्ञानी बने

- प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा.

चातुर्मास प्रारंभ हो चुके हैं, जिसे हम इस वर्ष धर्म-यज्ञ के रूप में स्वीकार रहे हैं। धर्म अर्थात् स्वभाव। अधर्म अर्थात विभाव। विभाव दशा में जीव कार्मण शरीर को बढ़ाता है, उस कार्मण शरीर को पतला करने के लिए यज्ञ की आवश्यकता है। यज्ञ में साधक आहुतियां देता है। हमें कर्मों की आहुतियां देनी है। इस धर्म यज्ञ में हमें त्याग करना है। क्योंकि आगमों में गुरुजनों से सुना है, त्याग में धर्म है। त्याग किसका करें, जिससे अधर्म छूट जाये, सिर्फ धर्म ही रह जाये।

अधर्म का मूल कारण है - मिथ्यात्व। मिथ्यात्व अर्थात् असत्य। भ्रमित दशा, पागलपन की दशा। इस असत्य का त्याग करता है, जिसे तत्वार्थ सूत्र में फरमाया है -

''सद्सतोरविशेषाद् यदश्च्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्।।

अ.1 सू. 33 तत्वार्थ सूत्र

सत् (वास्तविक) और असत् (काल्पनिक) पदार्थों में भेद नहीं करने से यदश्च्छोपलब्ध, (चाहे जैसा मानने के कारण) मिथ्या दृष्टि का ज्ञान उन्मत्त की तरह अज्ञान रूप ही होता है।

हमें त्याग मिथ्या दृष्टि का करना है। विपरीत श्रद्धा वाले जीव को विश्व का यथार्थ ज्ञान नहीं होता। दृष्टि बदलते ही सारा अज्ञान-ज्ञान में बदल जाता है।

अरिहंत-परमात्मा फरमाते हैं जीव ने केवल एक मात्र पाप किया मिथ्यादर्शन, उसके कारण उसने अनादि से प्रति समय कर्म बन्धन बांधे, मिथ्यादृष्टि भले ही कोई क्रिया न भी करें फिर भी वह प्रतिपल प्रतिक्षण कर्म बन्धन करता है।

जैसे एक व्यक्ति को भ्रम हो जाये कि यह रस्सी नहीं सांप है तो उसकी दशा कैसी हो जाती है, वैसे ही मिथ्यादृष्टि की दशा है। इसी कारण वह शेष 17 पाप भी करता है।

जीवन में प्रत्येक जीव को सुख चाहिए। वह सुख प्राप्त करने के लिए, जीवन में पुद्‌गलों को एकत्रित करता है। पुद्‌गलों का चिंतन करता है। उसे लगता है ये भौतिक सुख सुविधाएं मुझे सुख देगी। उन्हें प्राप्त करने के लिए जीवन का बहुमूल्य समय लगा देता हैं, उसे सुख तो नहीं मिलता, किन्तु उसे सुख की भ्रांति मिलती है, सुखाभास को सुख मानकर उसे पाने के तत्त्व आधि-व्याधि, उपाधि से वह ग्रस्त हो जाता है।

आधि-मन की - अर्थात् मन चिन्ताओं से भर जाता है, प्रतिपल, प्रतिक्षण मन क्रियाशील रहता है। उसे लगता है ये परिस्थितियां अनुकूल हो जायेगी तो मैं सुखी हो जाऊंगा, परिवार सुखी हो जायेगा, किंतु और दुःख बढ़ता जाता है।

परिणामस्वरूप उसके जीवन में **व्याधि अर्थात रोग** प्रवेश कर जाते हैं। वह मूल कारण को नहीं समझकर, शरीर के रोग की चिन्ता में ग्रस्त हो जाता है। रोग को दूर करने के लिए वह धन कमाता है, साता के लिए साधन एकत्रित करता है, उसे ही उपाधि कहते हैं।

उपाधि - उनसे भ्रमित होकर, सुखी होने के लिए जितने सुख सुविधा के पदार्थ एकत्रित किये, धन एकत्रित किया, ये मुझे सुख देंगे, वे सुख तो नहीं देते, किन्तु उनकी चिंता उसे दुःखी करती है। मिथ्यादृष्टि - धन कमाते समय आर्त-रौद्र ध्यान करता है, उसे संग्रहित करके, उसकी सुरक्षा की चिंता करता है और वो चला जाये तो दुःखी होता है। इस प्रकार व्यक्ति, वस्तु, स्थान का चिंतन आर्त्त रोद्र ध्यान है।

इस धर्म यज्ञ में हमें मिथ्या दृष्टि की आहुति देनी है, अर्थात् त्याग करना है और सम्यक्त्व को, सत्य को, सम्यक्‌दर्शन को प्राप्त करना है और धर्म ध्यान से शुक्लध्यान की ओर बढ़ना है। जो जिनवाणी अरिहंत प्रभु की कृपा से प्राप्त हुई, जिसके लिए निमित्त है सद्‌गुरु। जो साधक इस धर्म यज्ञ में देव-गुरु धर्म पर श्रद्धा करके, अपने मिथ्यात्व व मोह का त्याग करेगा व जिनवाणी से बोध प्राप्त कर जीव और अजीव के भेद को समझेगा, ज्ञान प्राप्त करेगा व अपने जीव पर श्रद्धा करेगा तो उसका भ्रम, उन्मत्त दशा दूर होगी और उसे वैराग्य प्राप्त होगा। असत् के प्रति जो रागभाव है वह छूटेगा, वैराग्य जीवन में आएगा। वैराग्य - अर्थात् मैं जीव हूँ, मेरे पास मेरे अलावा मेरा कुछ नहीं हैं अर्थात् मैं आत्मा अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख व अनंत शक्ति का पूंज हूँ। इसके अलावा मेरा कुछ भी नहीं है। वह हर समय अपने भीतर के सुख को प्राप्त कर आनंद, शांति, ज्ञानमय अवस्था में रहेगा। आत्म-ध्यान से शुक्ल ध्यान प्राप्त कर वर्तमान में सुख को प्राप्त कर भेद विज्ञानी, आत्म ज्ञानी बनें। ❖❖

मालव केसरी जय गुरु सौभाग्य की 40वीं पुण्यतिथि पर विशेष...

रत्न ही रत्न मैं निहाल हो गया

- प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'

रतलाम सन 1984 अप्रैल माह का कोई चिन, स्थान -मधुवन।

(एक) पूज्य गुरुदेव, मालव केसरी श्री सौभाग्यमलजी म. सा. से मैंने निवेदन किया 'मुझे कर्ममुक्ति का सीधा-सरल रास्ता बताने की कृपा करें। क्योकि आपका दीर्घ संयमी जीवन और उन सबका और स्वयं आपका भी दीर्घ विस्तृत अनुभव है।

पूज्य गुरुदेव ने अपनी गंभीर मुद्रा में फरमाया 'सुन,

1. दृढ़ श्रद्धा रखनाः तीनो काल में वीतराग वाणी पर अखंड श्रद्धा रखना। सर्वज्ञों के ज्ञान के सामने अपनी बुद्धि अल्प है। उनका ज्ञान अनंत और अपनी बुद्धि एक बूंद का अनन्तवा भाग ही है।

2. हृदय ऋजु रखना : अपना हृदय सरल रखना। मायादि कषायें संसार बढ़ाने वाली है। धर्म का बीज सरल हृदय में उगता, वृद्धि पाता और फलदाता होता है।

3. सच्चा निर्ग्रन्थ बनना : अपने मन में किसी के भी प्रति पैर की गांठ मत बांधना। यह भवो भव दुःखदायी ही होती है। कोई भी व्यक्ति कितना भी प्रतिकूल क्यों ना हो, कर्मोदय समझकर सब सहन कर लेना।

4. समभावी बनना : कितनी भी प्रतिकूल परिस्थितियाँ क्यों ना हो अपना आन्तरिक प्रसंन्नता युक्त समभाव कभी मत छोड़ना।

5. पाप का पश्चाताप करते रहना : सम्यक् श्रद्धा के परुपणा द्वारा दर्शन मोहनीय कर्म क्षय करना। चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम तभी सार्थक होगा। चारित्र साथन है, साध्य जो सम्यकत्व है। अपनी चारित्रिक कमजोरी के प्रति पश्चाताप की भावना रखना, किन्तु परूपमा में कभी शिथिल मत अमना।

इन पाँच बातों पर चिंतन-मनन करते रहना और इनमें जीओगे तो शीघ्र भुक्ति हो जाएगी।

(दो) मैंने एक दिन पूछा गुरुदेव से जीवन में कभी कष्ट नहीं आवे ऐसा कोई मंत्र बताइये।

पूज्य गुरुदेव पहले तो खूब हंसे फिर फरमाया- 'तू कई भगवान महावीर को भी बाप है? जब उनको भी कष्ट भोगने पड़े तब तू कहाँ लगता है ? इसका कोई भी मंत्र नहीं होता है, कष्टों से कैसे पार होना यह मार्ग विधि बता देता हूँ -

1. हर हाल में अपने मन को खुश रखना। कर्णोदय से अनुकूलता प्रतिकूलता आती रहती है। मन खुश रखेगा तो कष्ट, दुःख, दुःख नहीं लगेगा और नये कर्म भी नहीं बंधेंगे।

2. अपना चेहरा हमेशा प्रसन्न रखना। दुनियाँ के दुःखी मनुष्य सन्त के पास कुछ क्षण खुशी लेने के लिए आते है। सन्त का चेहरा देखकर उन्हें उदासी नहीं, प्रसन्नता मिलनी चाहिए। प्रसन्नता जिन्दादिली की निशानी है।

मैंने अपने जीवन में इन सातों बातों को जीने का प्रयत्न किया है और वास्तव में मैं सुखी और प्रसन्न हूँ। चिन्ता मेरे पास रहती ही नहीं है। धन्य हुआ मैं, जो मुझे ऐसे सद्गुरु मिले।

❖❖

गरीब कौन?

एक फकीर ने अपना अंत समय आया देख अपने शिष्यों से कहा - 'मेरे पास जो भी धन संपत्ति है उसे मैं सबसे गरीब व्यक्ति को दूंगा।' अगले दिन उसकी कुटिया के आगे निर्धनों की भीड़ लग गई पर फकरी ने उन्हें कुछ नहीं दिया। तभी उधर से अपने रथपर राजा निकला। फकरी ने धन की थैली उसकी ओर फेंक दी। राजा ने हंसकर कहा - 'तुम पागल हो गए हो क्या? मैं तो यहां का राजा हूं।' फकीर बोला - 'तुम्हारे पास अपार धन दौलत है पर संतोष नहीं तुम लालची हो इसलिए मैं तुम्हे सबसे ज्यादा गरीब मानता हूं।' राजा शर्मिंदा हो गया और उस दिन से प्रजा की भलाई मे जुट गया।

❖❖

धर्म की असली परिभाषा क्या है ?

- श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री रमणीकमुनिजी म.सा.

धर्म क्या है? धर्म का स्वरुप क्या है? धर्म की वास्तविकता क्या है? धर्म का मूल स्वभाव क्या है? धर्म व कर्तव्य में क्या अंतर हैं? इसे हम यूं भी कह सकते है कि 'वाट इज द रियल रिलीजन' इस छोटे से सवाल को अपने अनूठे अंदाज में एक अनुभवी ने, एक धर्मज्ञ व्यक्ति ने, एक धर्मज्ञ चेतना ने एक कथानक के माध्यम से, एक प्रसंग के माध्यम से अपने उत्तर को प्रस्तुत किया है। वह प्रसंग मुझे बहुत पसंद आया। धर्म मर्म से जुड़ा हुआ है। किसी जाति, किसी बिरादरी या किसी सम्प्रदाय से नहीं। यह रंगभेद, वर्ग भेद, अमीरी या गरीबी से नहीं जुड़ा हुआ है। उस भावनात्मक प्रसंग को मैं आप तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा हूँ।

कक्षा में आते ही एक नये टीचर ने छात्र-छात्राओं के समक्ष अपना लम्बा परिचय प्रस्तुत किया। बातों ही बातों में जान लिया कि इस कक्षा में तेज तर्रार लड़की कौन है। टीचर ने अपने सामने खामोशी के साथ बैठी उस लड़की से पूछा कि बिटिया-आपका नाम क्या है? लड़की खड़ी हुई और बोली जी सर, मेरा नाम जूही है। टीचर ने सोचा कि लड़की ने अपने नाम में कुछ और लगा रखा है, इसलिए फिर पूछा कि बेटा! पूरा नाम बताओ। लड़की ने फिर कहा कि सर! मेरा पूरा नाम जूही ही है। टीचर ने फिर अगला सवाल किया कि बेटा, आपके पापा का नाम। लड़की ने जबाब दिया, सर, मेरे पिताजी का नाम शमशेर है। टीचर यहां भी नही रुका। बोला कि पूरा नाम बताओ ना। लड़की का फिर वहीं जबाब। सर, मेरे पिताजी का पूरा नाम शमशेर ही है। अब टीचर कुछ सोचकर बोले - अच्छा, बेटा तुम्हारी मम्मी का नाम क्या है? बोली, सर मेरी मम्मी का नाम निशा है। अब तो टीचर के पसीने छूट गए।

टीचर को लड़की के बायो-डॉटा में जो एक चीज़ छूट रही थी, वह अभी तक नहीं मिली। टीचर की बैचेनी बढ़ती गयी। उसने आखिरी बार एक और प्रयास किया। टीचर ने यह सोचकर कि जो जानकारी वह ढूंढ़ना चाहते हैं, वह मिल जाये, इसलिए पूछा कि तुम कितने भाई-बहन हो? लड़की ने बड़ी मासूमियत से जबाब दिया कि सर जी, में अकेली हूँ। मेरे और कोई भाई-बहन नही हैं।

अब टीचर ने सीधा एक निर्णायक सवाल पूछा कि बेटे, यह बताओ कि तुम्हारा धर्म क्या है? तुम्हारी जाति क्या है? लड़की ने भी इस साधारण सवाल का सीधा सटीक उत्तर दिया कि सर, में एक विद्यार्थी हूँ। एक स्टूडेंट हूँ। यही मेरी जाति और यहीं मेरा धर्म है। ज्ञान प्राप्त करना ही मेरा धर्म है। मैं जानती हूँ कि अब आप मेरे माता-पिता की जाति और धर्म पूछेंगे तो मैं आपको बता दूं कि मेरे पापा का धर्म है- मुझे पढ़ाना, लिखाना और मम्मी की जरुरतों को पूरा करना। मेरी मम्मी का धर्म है कि मेरी देखभाल करना और पापा की आवश्यकताओं का ध्यान रखना। लड़की का जबाब सुनकर मेरे होश उड़ गये। इस बीच टेबल पर रखे पानी की ग्लास को देखने के बाद भी मैं पानी पीना भूल गया। उसका उत्तर सुनकर में विचलित हो गया। तभी लड़की न कुछ और कहना शुरु किया। जो कुछ उसने कहा, वह किसी धमाके से कम नही था। वह बोली - सर, मैं विज्ञान की छात्रा हूँ। एक वैज्ञानिक बनना चाहती हूँ। जब अपनी पढ़ाई पूरी कर लूंगी और अपने माता-पिता के सपनों को साकार कर लूंगी, तब कहीं फुरसत में सभी धर्मों का अध्ययन करने में अपना समय दूंगी। तब जो भी धर्म विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरेगा, उसे मैं स्वीकार कर लूंगी। लेकिन यदि धर्म-ग्रंथों में या फिर उनके किसी एक पन्ने में एक भी बात विज्ञान विरुद्ध बात हुई तो, मैं उस पवित्र ग्रंथ को भी अपवित्र मानने में संकोच नही करुंगी क्योंकि विज्ञान कहता है कि एक ग्लास दूध में यदि एक बूंद केरोसिन मिली हो तो वह दूध बेकार हो जाता है। मुझे केरोसिन वाला दूध पीना पसंद नहीं। लड़की की बात खत्म होते ही पूरी कक्षा में तालियों की गड़गड़ाहट हो उठी और इनकी करतल ध्वनि टीचर के कानों में गोलियों के शोर की तरह सुनाई देने पड़ने लगी। **टीचर ने आँखों पर लगे धर्म और जाति के मोटे चश्मे को उतारकर कुछ देर के लिए टेबल पर रख दिया। थोड़ा साहस जुटाकर लड़की से बिना नज़र मिलाये वह बोला बेटा, मुझे तुम पर नाज है।**

जैन जगत की अमर साधिका-उत्तर भारत सिंहनी
उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी पूज्या श्री पवनकुमारीजी म.सा.

- शासन ज्योति साध्वी पू. डॉ. श्री सूर्याजी म.सा.

वीर वसुधा पर हम जिधर देखते हैं, चारों ओर मानव की भीड़ दृष्टिगोचर होती है। सम्पूर्ण पृथ्वी मंडल मनुष्यों से आकुल हैं। समस्या इंसान की नहीं समस्या भीड़ की है। धरा पर किसी ज्योर्तिमय चेतना की आवश्यकता कल भी थी, आज भी है और भविष्य में भी सदा रहेगी। दिव्य भव्य आत्माएं इस पृथ्वी पर समय पर नर अथवा नारी के रूप में जन्म लेकर इस विराट जगत के तल पर अखंड दीप प्रज्वलित करती हैं। यह दीप ज्योति कभी मन्द नहीं होती।

ऐसा ही दिव्या भव्य जीवन रहा-मम दाद गुरुणी उत्तर भारत सिंहनी, उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी पूज्या श्री पवनकुमारीजी म.सा. का । हरियाणा के सोनीपत जनपद के देहरा मोटी गाँव में सुश्रावक श्री चिरंजीलालजी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती ज्ञानो देवी की पावन कुक्षी से सन 1936 में पूज्या गुरुवर्या ने जन्म लिया और कन्या का नाम रखा गया-अंगूरी जैन। पूर्व जन्म के पवित्र संस्कार साथ थे और दो बड़ी बहनों ने पहले भी जैन भगवती दीक्षा ली हुई थी। बचपन से धार्मिक वातावरण मिला, जिसका परिणाम यह हुआ कि 12 वर्ष की अल्पायु में ही महावीर जयंति (चैत्र शुक्ल त्रयोदशी) के दिन, सन् 1948 में अमीनगर सराय (उत्तर प्रदेश) में परम पूज्य पं. रत्न श्री पृथ्वीचंदजी म.सा. के श्रीमुख से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर ली तथा अपने जीवन को जैन शासन ज्योति महासाध्वी पू. श्री पद्मश्रीजी म.सा. के पावन चरणों में शिष्या रूप में समर्पित कर दिया। नाम रखा गया साध्वी श्री पवनकुमारीजी महाराज। दीक्षा के पश्चात् स्वयं को जप, तप, स्वाध्याय में लगा दिया। उपाध्याय प्रवर कवि रत्न श्री अमरचंदजी म.सा. के सान्निध्य में आगमों का तलस्पर्शी ज्ञान ग्रहण किया। कुल 10 वर्ष तक ही गुरुनी महासाध्वी श्री पद्मश्रीजी म. सा. का अपूर्व वात्सल्य प्राप्त हुआ। 10 वर्ष की संयम पर्याय तथा मात्र 22 वर्ष की आयु में ही गुरुवर्या का साया सिर से उठ गया। परंतु इस लघु वय में भी अपनी गुरणी जी म.सा. द्वारा दी गयी शिक्षाओं को, उनके स्नेह, वात्सल्य को अपने हृदय में धारण करते हुए संयम की परिपालना करने में जुट गए। अपने जीवन को सम्भाला, संवारा व निखारा। आज उनका संयमी जीवन हमारे लिए आदर्श है।

जब हम पूज्या गुरुणीजी म.सा. के जीवन की झांकी की और दृष्टिपात करते हैं तो अनुभव होता है कि उनका जीवन अनेक सद्गुणों की खान था। उनकी स्मरण शक्ति बहुत चमत्कारी थी व अंर्तप्रज्ञा पूर्णतः जागृत थी, जिसे एक बार देख लेते थे, दोबारा अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती थी। उसकी छवि स्मृति पटल पर सदा के लिए अंकित हो जाती थी। यहां तक की महारोग की महावेदना में भी रुग्ण अवस्था में भी एक ही स्थान पर बैठे-बैठे उन्हें ज्ञात हो जाता था की कहाँ क्या हो रहा है।

गुरुवर्या का हृदय करुणा व वात्सल्य का महासागर था। किसी असहाय, दुःखी को देखकर द्रवित हो जाते थे, स्वंय की आंखे किसी को रोता देख नम हो जाया करती थी। जो भी श्रीमंत, संपन्न श्रद्धालु दर्शनार्थ आता था, उसे स्वधर्मी, दुःखीजनों की सहायता की प्रेरणा देते रहते थे।

उनकी वाणी में एक प्रेरणा थी, दानव को मानव बना देने वाली विलक्षण शक्ति थी। जो भी आपकी ओजस्वी वाणी को श्रवण करता, कुछ न कुछ प्रेरणा पाता था। इस तेजोमय वाणी के कारण ही उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री पुष्करमुनिजी म. ने सन् 1987 में गुरुवर्या को जैन कालोनी (वीर नगर) दिल्ली के प्रांगण में उत्तर भारत सिंहनी की पदवी से अलंकृत किया था। वाणी के ऐसे अनेकों चमत्कार देखे हैं, हर घटना का वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस ने उनके सान्निध्य को प्राप्त किया, उन सभी ने ऐसे चमत्कारों का प्रत्यक्ष अनुभव किया, जो उन्होंने कह दिया-पत्थर की लकीर था। इस वचन सिद्धि और वाणी का प्रभाव उनकी उत्कृष्ट संयम आराधना का फल एवं उनका अपनी गुरुवर्या महासाध्वी श्री पद्मश्रीजी के प्रति अनन्य श्रद्धा समर्पण का भाव था। जैसा राजा जनक का अपने गुरू अष्टावक्र के प्रति, ज्ञानी गौतम का प्रभु महावीर के प्रति, शिवाजी का गुरु रामदास के प्रति भक्ति भाव था ऐसा ही समर्पण पूज्य गुरुनीजी महाराज के मन में अपनी गुरुवर्या के लिए था। पूज्या गुरुवर्या ने अपनी गुरुणीजी म. के

(शेष भाग पृ. सं. 24 पर)

सन्यासी बड़ा या गृहस्थ

- प्रस्तुति - संदीप गौतमचंद बाफना जैन, वडगांव, मावल, पुणे (महाराष्ट्र)

किसी नगर में एक राजा रहता था, उस नगर में जब कोई संन्यासी आता तो राजा उसे बुलाकर पूछता कि "भगवान ! गृहस्थ बड़ा है या संन्यास ?' अनेक साधु अनेक प्रकार से इसको उत्तर देते थे। कई संन्यासी को बड़ा तो बताते पर यदि वे अपना कथन सिद्ध न कर पाते तो राजा उन्हें गृहस्थ बनने की आज्ञा देता। जो गृहस्थ को उत्तम बताते उन्हें भी यही आज्ञा मिलती।

इस प्रकार होते-होते एक दिन एक संन्यासी उस नगर में आ निकला और राजा ने बुलाकर वही अपना पुराना प्रश्न पूछा। संन्यासी ने उत्तर दिया- 'राजन। सच पूछें तो कोई आश्रम बड़ा नहीं है, किन्तु जो अपने नियत आश्रम को कठोर कर्तव्य धर्म की तरह पालता है वही बड़ा है।'

राजा ने कहा - 'तो आप अपने कथन की सत्यता प्रमाणित कीजिये।' संन्यासी ने राजा की यह बात स्वीकार कर ली और उसे साथ लेकर दूर देश की यात्रा को चल दिया।

घूमते-घूमते वे दोनों एक दूसरे बड़े राजा के नगर में पहुँचे, उस दिन वहाँ की राजकन्या का स्वयंवर था, उत्सव की बड़ी भारी धूम थी। कौतुक देखने के लिये वेष बदले हुए राजा और संन्यासी भी वहीं खड़े हो गये। जिस राजकन्या का स्वयंवर था, वह अत्यन्त रूपवती थी और उसके पिता के कोई अन्य सन्तान न होने के कारण उस राजा के बाद सम्पूर्ण राज्य भी उसके दामाद को ही मिलने वाला था।

राजकन्या सौंदर्य को चाहने वाली थी, इसलिये उसकी इच्छा थी कि मेरा पति, अतुल सौंदर्यवान हो, हजारों प्रतिष्ठित व्यक्ति और देश-देश के राजकुमार इस स्वयंवर में जमा हुए थे। राजकन्या उस सभा मण्डली में अपनी सखी के साथ घूमने लगी। अनेक राजा-पुत्रों तथा अन्य लोगों को उसने देखा पर उसे कोई पसन्द न आया। वे राजकुमार जो बड़ी आशा से एकत्रित हुए थे, बिल्कुल हताश हो गये। अन्त में ऐसा जान पड़ने लगा कि मानो अब यह स्वयंवर बिना किसी निर्णय के अधूरा ही समाप्त हो जायगा।

इसी समय एक संन्यासी वहाँ आया, सूर्य के समान उज्ज्वल काँति उसके मुख पर दमक रही थी। उसे देखते ही राजकन्या ने उसके गले में माला डाल दी, परन्तु संन्यासी ने तत्क्षण ही वह माला गले से निकाल कर फेंक दी और कहा- "राजकन्ये। क्या तू नहीं देखती कि मैं संन्यासी हूँ? मुझे विवाह करके क्या करना है?'

यह सुनकर राजकन्या के पिता ने समझा कि यह संन्यासी कदाचित भिखारी होने के कारण, विवाह करने से डरता होगा, इसलिये उसने संन्यासी से कहा - 'मेरी कन्या के साथ ही आधे राज्य के स्वामी तो आप अभी हो जायेंगे और पश्चात् सम्पूर्ण राज्य आपको ही मिलेगा।'

राजा के इस प्रकार कहते ही राजकन्या ने फिर वह माला उस साधु के गले में डाल दी, किन्तु संन्यासी ने फिर उसे निकाल पर फेंक दिया और बोला- 'राजन् ! विवाह करना मेरा धर्म नहीं है।'

ऐसा कहकर वह तत्काल वहाँ से चला गया, परन्तु उसे देखकर राजकन्या अत्यन्त मोहित हो गई थी, अतएव वह बोली - 'विवाह करूंगी तो उसी से करूंगी, नहीं तो मर जाऊँगी।' ऐसा कहकर वह उसके पीछे चलने लगी।

हमारे राजा साहब और संन्यासी यह सब हाल वहाँ खड़े हुए देख रहे थे। संन्यासी ने राजा से कहा - 'राजन् ! आओ, हम दोनों भी इनके पीछे चलकर देखें कि क्या परिणाम होता है।'

राजा तैयार हो गया और वे उन दोनों के पीछे थोड़े अन्तर पर चलने लगे। चलते-चलते वह संन्यासी बहुत दूर एक घोर जंगल में पहुँचा, उसके पीछे राजकन्या भी उसी जंगल में पहुँची, आगे चलकर वह संन्यासी बिल्कुल अदृश्य हो गया। बेचारी राजकन्या बड़ी दुखी हुई और घोर अरण्य में भयभीत होकर रोने लगी।

इतने में राजा और संन्यासी दोनों उसके पास पहुँच गये और उससे बोले - 'राजकन्ये ! डरो मत, इस जंगल में तेरी रक्षा करके हम तेरे पिता के पास तुझे कुशलपूर्वक पहुँचा देंगे। परन्तु अब अँधेरा होने लगा है, इसलिये पीछे लौटना भी ठीक

नहीं, यह पास ही एक बड़ा वृक्ष है, इसके नीचे रात काट कर प्रातःकाल ही हम लोग चलेंगे।'

राजकन्या को उनका कथन उचित जान पड़ा और तीनों वृक्ष के नीचे रात बिताने लगे। उस वृक्ष के कोटर में पक्षियों का एक छोटा सा घोंसला था, उसमें वह पक्षी, उसकी मादी और तीन बच्चे थे, एक छोटा सा कुटुम्ब था। नर ने स्वाभाविक ही घोंसले से जरा बाहर सिर निकाल कर देखा तो उसे यह तीन अतिथि दिखाई दिये।

इसलिये वह गृहस्थाश्रमी पक्षी अपनी पत्नी से बोला- 'प्रिये ! देखो हमारे यहाँ तीन अतिथि आये हुए हैं, जाड़ा बहुत है और घर में आग भी नहीं है।' इतना कहकर वह पक्षी उड़ गया और एक जलती हुई लकड़ी का टुकड़ा कहीं से अपनी चोंच में उठा लाया और उन तीनों के आगे डाल दिया। उसे लेकर उन तीनों ने आग जलाई।

परन्तु उस पक्षी को इतने से ही सन्तोष न हुआ, वह फिर बोला-'ये तो बेचारे दिनभर के भूखे जान पड़ते हैं, इनको खाने के लिये देने को हमारे घर में कुछ भी नहीं है। प्रिय, हम गृहस्थाश्रमी हैं और भूखे अतिथि को विमुख करना हमारा धर्म नहीं है, हमारे पास जो कुछ भी हो इन्हें देना चाहिये, मेरे पास तो सिर्फ मेरा देह है, यही मैं इन्हें अर्पण करता हूँ।"

इतना कहकर वह पक्षी जलती हुई आग में कूद पड़ा। यह देखकर उसकी स्त्री विचार करने लगी कि 'इस छोटे से पक्षी को खाकर इन तीनों की तृप्ति कैसे होगी? अपने पति का अनुकरण करके इनकी तृप्ति करना मेरा कर्तव्य है।' यह सोच कर वह भी आग में कूद पड़ी।

यह सब कार्य उस पक्षी के तीनों बच्चे देख रहे थे, वे भी अपने मन में विचार करने लगे कि - 'कदाचित अब भी हमारे इन अतिथियों की तृप्ति न हुई होगी, इसलिये अपने माँ-बाप के पीछे इनका सत्कार हमको ही करना चाहिये।' यह कहकर वे तीनों भी आग में कूद पड़े।

यह सब हाल देखकर वे तीनों बड़े चकित हुए। सुबह होने पर वे सब जंगल से चल दिये। राजा और संन्यासी ने राजकन्या को उसके पिता के पास पहुँचाया।

इसके बाद संन्यासी राजा से बोला- 'राजन् !! अपने कर्तव्य का पालन करने वाला चाहे जिस परिस्थिति में हो श्रेष्ठ ही समझना चाहिये। यदि गृहस्थाश्रम स्वीकार करने की तेरी इच्छा हो, तो उस पक्षी की तरह परोपकार के लिये तुझे तैयार रहना चाहिये और यदि संन्यासी होना चाहता हो, तो उस यति की तरह राजलक्ष्मी और रति को भी लज्जित करने वाली सुन्दरी तक की उपेक्षा करने के लिये तुझे तैयार होना चाहिये। कठोर कर्तव्य धर्म को पालन करते हुए दोनों ही बड़े हैं..!!' ❖❖

(पृष्ठ संख्या 22 का शेष भाग)

नाम से ही शक्ति नगर एक्स. दिल्ली में जैन साध्वी पद्मा विद्या निकेतन स्कूल का निर्माण कराया जिसकी एक शाखा शास्त्री पार्क में भी है। जहां जरुरतमंद बच्चों को निःशुक्ल शिक्षा व जैनत्व के संस्कार दिए जाते हैं। कभी भी अपने नाम को आगे न रखकर अपनी गुरुवर्या के नाम को सदैव आगे रखा। उनका यह समर्पण भाव अद्भुत, अद्वितीय है, हमारे लिए मिसाल है। पूज्याश्री का जीवन एक खुली पुस्तक की भांति था। इस बात की प्रशंसा स्वयं पूज्य भगवन श्री रामप्रसादजी म. ने भी की थी। ज्ञान के मोती लहाते हुए, शास्त्र ज्ञान की गंगा बहाते हुए समाज सुधार का लक्ष्य रखते थे। वो ऐसी दिव्य ज्योति जिसका प्रकाश हम सबके लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। नियमों एवं विचारों में पूर्ण दृढ़ता, जो एक बार निश्चय कर लिया उससे पीछे हटने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। मैं स्वय को सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मैं उनकी पुष्प वाटिका का एक हिस्सा हूँ। भले ही कुछ वर्षों को लिए ही, मुझे उनके सान्निध्य में रहने का, उनका वात्सल्य प्राप्त करने का सुअवसर मिला।

गुरुवर्य 8 सितम्बर 2004 को इस नश्वर देह का त्याग कर मुक्ति मार्ग पर आगे बढ़ गयी। आज गुरुवर्या भौतिक देह से हमारे बीच नहीं है, परंतु उनका आशीर्वाद, उनके जीवन के सद्गुण, उनकी दी शिक्षाएं सदैव हमारा मागदर्शन करते रहेंगे तथा मार्ग प्रशस्त करेंगे। गुरुणीजी की पुण्य स्मृति पर पद्म-पवन परिवार की सभी साध्वियों सरलमना महासाध्वी श्री प्रमोदकुमारीजी, उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी श्री जितेन्द्रकुमारी जी, शांत स्वभावी महासाध्वी श्री संयमप्रभाजी, प्रवचन भास्कर डॉ. श्री सूर्याजी, साध्वी श्री गोरिशाजी, अवन साध्वी आर्याजी की ओर से कोटि-कोटि वंदन, नमन एवं भावांजलि।

ओलंपिक और हार जीत

- अरूण कुमार जैन

सुदूर पेरिस जैसे खूबसूरत शहर में ओलंपिक खेलों की बहार है, जीत हार है, दुनिया भर में खेल का बुखार है, खिलाड़ी तैयार हैं, जीत भी और हार भी सबकी खुशियों और गमों का पारावार है। हंसना और रोना आखिर जिंदगी की दौड़ में आगे रहने और पिछड़ने का दर्शन दिखा जाता है, बहुत कुछ सीखा जाता है।बरसों की मेहनत, अपनों को छोड़, घर से दूर रहकर, तैयारी करना, कम खाना, कम सोना और सीना चौड़ा कर सोना जीतने की ललक में, अब तक बिताए साल दर साल, बस एक धुन और एक विचार की देश का परचम विश्व के सामने फहराएं और कैसे भी हर हाल में जीत जाएं।

सोने, चांदी और कांसे के बीच सपने कभी सफल हुए, कभी लड़खड़ाए, कभी फंसकर रह गए, कभी जज्बा टूट गया और कभी जज्बा ही जिता ले गया। कभी नियमों की मार में उलझे, कभी मशक्कत में पिछड़ गए, हाथ से सूत्र बिछड़ गए, एक खिलाड़ी के पीछे उसे तैयार करने में कई हाथ लगे होते हैं, जो उसे निखारते हैं, खेल को सुधारते हैं, सफलता उसके चरण वंदन करे इसलिए पखारते हैं और सारा विश्व अपनी कई-कई करोड़ आंखों से उन्हें निहारते हैं। जो जीता वही सिकंदर, उसी का गुणगान होता है, सबका अपना वक्त आता है और वही महान होता है। जिस दिन प्रतियोगिता हुई उस दिन जिसका वक्त साथ दे गया, बस वही सिकंदर महान हो गया, विश्व इतिहास में, अपने देश के इतिहास में, ओलंपिक के इतिहास में सब जगह, हर कहीं वह दर्ज हो जाता है। बाकी खिलाड़ियों की उपलब्धि धीमे-धीमे से भुला दी जाती है। यह केवल खिलाड़ी के साथ ही नहीं होता, सभी जगह, सभी तरह से, हर दिन, हर वक्त यही चलता है जो चल गया उसका सितारा बुलंद और हर जगह वह चल जाता है। वक्त का यह अजीब शाहकार है, उसकी यह आदत है, उसकी तासीर है की वह जिसका सब उसका।

कमाऊ पूत किसे अच्छा नहीं लगता घर भर उसे सिर आंखों पर बैठाता है, जो कमाऊ नहीं है उसे नजरअंदाज किया जाता है, धीरे-धीरे दरकिनार किया जाता है। सेवा का मूल्य घटता है और पैसे का महत्व बढ़ता है, यह व्यावहारिक सत्य है। वचन में सिद्ध नहीं भी हो, प्रवचन में जिक्र नहीं भी हो पर वास्तव में यही परम सत्य है। अनादिकाल से नैतिक मूल्यों के पराभव से पहले भी यह बात मायने रखती थी और आज भी। कुशल प्रबंधन के आभासी पर्दे के पीछे यही सत्य था।

आप कुछ सेकंड के हजारवें हिस्से से मार खा गए हों या कुछ ग्राम वजन से दौड़ में पिछड़ गए हों, वक्त की मार से कौन बचा और कौन जीत पाया। वक्त एक ऐसा ही अजीब हमसाया है जो सदैव साथ चलता है और न जाने कब किस एक क्षण में छकाता है, छलता है, और आपके हाथ से वह सपना छीन दूर ले जाता है जो बरसों से पलता है। आपकी मेहनत एक बाढ़ के झटके से तिरोहित हो जाती है, एक हवा का झोंका तिनका-तिनका उड़ा ले जाता है, आपका वजूद एक झटके में खत्म सा हो जाता है, मगर जिजीविषा है की हारती नहीं है, हारकर भी हार मानती नहीं है, हम अपनी असफलता को, वक्त की मार को भूलकर किंतु परंतु की सीमा में, नए बहानों के साथ दूसरे कारणों पर मढ़ने लगते हैं और फिर एक बार हिम्मत जुटाकर आगे बढ़ने लगते हैं। यही खेल भावना है, यही वक्त की मार से पार पाने का तरीका है और जिंदगी का सलीका है। दुनिया का हर शख्स अपने ही समस्या के ओलिंपिक में व्यस्त है, मस्त है और हर दिन ध्वस्त है। मगर हर सुबह की नई किरण उसे जगाती है, स्मृतियों से निकालकर, फिर प्रयास कर आगे की ओर बढ़ने का साहस देती है और वक्त फिर मजाक करने लगता है, झकझोर देता है, यही जीवन का व्यंग्य है, न जाने कब जीत जाएं और जाने कब उसके दृष्टि फेरने से हार जाएं, वक्त से आखिर कौन जीत सका है फिर भी हम हारे कहां हैं। वक्त बड़ा ईमान है, बाकी बेईमान है, मत बन तू नादान, बस तू है मेहमान, क्या जोड़ जाएगा, सब छोड़ जाएगा, वक्त के पहियों पर, मत कर अभिमान। ❖❖

आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषिजी म.सा. के सुशोभित अलंकरण

शब्दांकन - घेवरचंद गोलेच्छा, टिण्डिवनम, संपादन - डॉ. भद्रेश जैन, चेन्नई

प्रस्तुति - एस. सुरेश लुणावत जैन, चेन्नई, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

अभिनंदनकर्ता - श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत, चारित्र चक्रवर्ती, दयालु कृपालु मायालु, परम श्रद्धेय महामहिम, ज्ञानमहोदधि, परोपकारी दीर्घदृष्टा महामनीषी, परम प्रतापी, शासनोद्धारक, युग प्रवर्तक, प्रसिद्ध वक्ता, आनंददाता, त्याग-तपस्या-अहिंसा और करुणा की साक्षात् प्रतिमूर्ति, बालब्रह्मचारी, प्रातः स्मरणीय, अखिल भारतीय स्थानकवासी श्रमण संघ के द्वितीय पट्टाधीश, प्रभावशाली प्रवक्ता, स्थानकवासी परम्परा के प्रखर चिन्तक, सबल संगठक, सतत् साधनाशील, सन्तरत्न, साधुता के श्रृंगार, मानवता के दिव्य प्रदीप एवं भयहर, ज्ञान-आध्यात्म, सेवा की अखंड ज्योति, परम आदरणीय, पंडित रत्न, विश्ववन्द्य, श्रमणसंघ के नायक, तपोमूर्ति, जिनशासन-शेखर, करूणा केतन, क्रान्ति-विचारक, निस्पृह साधक, चारित्र चूड़ामणि, जैन रत्नाकर, आनंद के महासागर, आनंद के मान सरोवर, करूणा का संदेश देने वाले, वात्सल्यता की साक्षात् प्रतिमूर्ति, करुणा के अवतार, योगनिष्ठ, प्राणीमात्र के प्रति समभाव का अलख जगाने वाले, मैत्री, प्रमोद युक्त अध्यात्मयोगी, आनंदमूर्ति, वर्तमान युग में सुख-शान्ति-प्रदाता, श्रमण संस्कृति के प्रतीक, श्रद्धा के सुमन, संघ सरोवर के राज आचार्य प्रवर, श्रमणसंघ के समर्थ कर्णधार, अनेक भाषाओं के पंडित, जैन आगमों तथा अन्य शास्त्रों के वेत्ता, लौहपुरुष एवं कर्तव्य परायण, प्रबल पुरुषार्थशील, लोक-संकल्प-निष्ठा, संघ-ऐक्य के लिये सतत प्रयत्नशील, तपोनिष्ठ, ज्ञानवरिष्ठ, घुमक्कड़, महायोगी, सौम्यमूर्ति, श्रमणसंघ के अधिनायक, चारित्रनायक, विश्व-वल्लभ, आदर्श ऋषिश्वर, आदर्श त्यागी, आदर्श ब्रह्मचारी, आदर्श विद्वान, जैन-कुल-कमल-दिवाकर, गणगण-रत्नाकर, आध्यात्म-योगी, आनंदमूर्ति, वर्तमान युग में सुख-शांति के प्रदाता, आराध्यदेव, संघेश, ज्योर्तिधर ऋषिराज, लाखों के आराध्य-अधिनायक, क्रियोद्धारक, उच्चकोटी के व्याख्याता, भाषा एवं साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान, श्रमणसंघ के महानायक, सत्य के संदेश वाहक, शान्तिदूत, प्रेम करुणा-मैत्री आदि भव्य भावनाओं के स्वरूप, विनम्रता के साकार रूप और अद्भूत ज्योति प्रदायक, श्रमण जीवन उपवन के सुरभित सुमन, आध्यात्म-गगन के ज्योतिपुंज, सुधाकर एवं प्रेरणा के प्रदीप, सुख के सिन्धु, आनंद इन्दु, अमर साधक, आत्मा की अक्षयनिधि, अखंड आनन्द के सागर।

जन-जीवन-भाग्यविधाता तथा जैन जगती के मनोनीत आचार्य सम्राट्, परम त्यागी, महामान्य, आचार्य भगवन्त, स्वनाम धन्य, कविकुल-भूषण, दिव्यमूर्ति, विश्व के देदीप्यमान चन्द्र/नक्षत्र, नरनाथ, पतीत-पावन, आध्यात्मिक सम्राट, जिनवाणी संदेश वाहक, दैवीय गुणों के संवाहक, सत्य के धारक, साक्षात् धर्मावतार, विश्व के महान संत, भारतीय संस्कृति के माननीय योद्धा, कार्यकर्मठ, परम श्रद्धा के पुंज, जैन संघ की उज्ज्वल विभूति कलिकाल के कल्पतरू, जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र, जैन धर्म दिवाकर, विराट् व्यक्तित्व के धनी, ज्ञान के अक्षय-सागर, जन-जन के प्यारे, सबकी आँखों के तारे, तीक्ष्ण और हाजिर जवाब देने वाले (प्रत्युत्पन्नमति), बुद्धि के अक्षय भंडार, साक्षात् सरस्वती-पुत्र, अठारह भाषाओं के ज्ञानी, श्रमण संघ की महान् जगमगाती ज्योत, सद्गुणों के समुद्र, पंचम आरे की एक अद्भुत आत्मा, महान् प्रशांत महर्षि, अनुशासन की एक जीती-जागती मशाल, शिक्षा प्रसारक, विद्या प्रेमी, कुशल प्रवचनकार, श्रमण परम्परा के नील गगन के चमकते सितारे, इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व, भारत की ऋषि-परम्परा के सच्चे महर्षि, व्याख्यान के जादूगर, धर्म-सद्भावना के पावन प्रतीक आध्यात्मिक अवतार, युग प्रधान, जैन समाज के महानतम प्रखर संत, समाज एवं संघ ऐक्य योजना के प्राण, संघठन-संघ-समाज के अग्रदूत, मानवीय वात्सल्यता के कोषागार, सर्वतोमुखी व्यक्तित्व, सत्य और न्याय के प्रमुखतम पक्षकार, सामाजिक क्रांति के प्रबल प्रणेता, जीवन निर्माता, अनेकों के प्रणेता / प्रेरणा स्रोत, शिष्य प्रशिष्यों की विपुल सम्पदा-धारक, बहुविध प्रतिभाशील, विविध विद्याओं से सम्पन्न, स्वनाम धन्य, श्रमणसंघ के महान् संतरत्नों में एक दिव्य संत रत्न, संथारे के पक्के हिमायती, उच्च कोटी के अनुशासक, समता विभूति,

भगवान महावीर के संदेश अहिंसा, मैत्री, करूणा को विश्व भर में पहुंचाने वाले यशस्वी संतरत्न, जिनके एक पाँव में कमल का फूल तथा दूसरे पाँव में पद्‌म का चिन्ह, ऐसे पुण्य-सागर आचार्य सम्राट्‌ शान्त-दान्त सागर सम गंभीर, चन्द्रमा सम निर्मल, सूर्य समान तेजस्वी, संघनायक आचार्यश्री जी आप जिनशासन रूपी आकाश मंडल में सहस्रकिरण सूर्य के समान सर्वतोभावेन प्रकाशमान, संघ के आचार्यश्री चन्द्रमा के भांति शीतल, आपश्री के प्रशांत मुख मंडल पर परम आनंद का स्रोत बहता है, परम आराध्य आचार्यश्री दीप इस अर्थ में है कि उनके द्वारा अनेक मानवों को जीवन-दर्शन सम्प्राप्त हुआ है और आधि, व्याधि और उपाधि के रोग से आक्रान्त बने हुए भी आपकी चरण-शरण में आकर आनंद देवता के सुदर्शन हुए हैं।

प्रशांत मूर्ति आचार्यश्रीजी वैडूर्य रत्न के समान हैं, इनकी दिव्य ज्योति से मानव जीवन का प्रत्येक कोण प्रकाशमान है। परम श्रद्धेय आचार्यश्रीजी क्षीर-नीर विवेकी है, जो मानव आपश्री की कल्याणकारी वाणी का सुधा-पान करता है, वह आनंद विभोर हो जाता है। परम श्रद्धेय आचार्यश्रीजी नंदनवन के सदृश है, जहाँ सद्‌गुण के सुगंधित सुमन अपनी मधुर सौरभ से महका रहे हैं और भक्तिशील मानव उस सौरभ से मधुकर की भांति लाभान्वित और समाकृष्ट है। मैं चिंतन की चांदनी में पर्यटन करता हुआ अनुभूति के आलोक में पहुंचता हूँ तो मेरा हृदय बोल उठता है कि मैं आचार्यश्रीजी को किस उपमा से अलंकृत करूँ। आचार्यश्रीजी का जीवन अगाध अपार महासागर के समान गंभीर है और अनंत असीम आकाश मंडल के समान व्यापक है, सुदर्शनीय है तथा मेरा शब्द कोष सचमुच में सीमित है, परिमित है। अतः मैं उन्हें शब्दों की सीमाओं में आबद्ध नहीं कर पाऊँगा। वास्तविकता यह है कि आचार्यश्रीजी के सागर सम जीवन को शब्दों की गागर में भर लेने का मेरा यह प्रयास उपहासास्पद ही होगा। अतः मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

राष्ट्र संत, आचार्य सम्राट्, परम आदरणीय, पंडित रत्न, जैन धर्म दिवाकर, पूज्य गुरुदेव, सम्राटों के सम्राट्ट, श्री श्री 1008 श्री श्री आनंदऋषिजी महाराज साहब के श्री चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन !

अहो गुरुदेवजी महाराज, आपके ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और संयम यात्रा की तथा आपके शरीर की तथा आपके आहार-विहार की तथा आपके रात्रि विश्राम की हम सुखसाता पूछते हैं और मंगल कामना करते हैं। यहां पर हमारा नित्य नियम सुचारू रूप से चल रहा है।

हाथ जोड़ मान मोड़ तिक्खुत्ता रा पाठ सुं, मुनिवर/ऋषिवर/गुरुवर स्वीकारो म्हारी वंदना। णमो आयरियाणं, णमो आयरियाणं, णमो आयरियाणं आचार्य भगवंत के पवित्र चरणों में हमारी भाव भरी कोटि-कोटि वंदना ! झेलो सा, झेलो सा भाव वंदना। विराज्या ऊंचा ऊंचा पाट, लाग्या धर्म का ठाठ, म्हारी वंदना झेलो सा। कैसे काटूं करम आठ, म्हाने मोक्ष री वाट । वंदना झेलो सा, म्हारी वंदना झेलो सा।

कई वर्षों पूर्व आलेखित एक परम भक्त की आचार्य भगवंत के प्रति अनन्य आस्था एवं श्रद्धा का यह सशक्त उदाहरण हैं, एक-एक उपमा से उपमित इस पत्र में अनेकानेक आचार्य सम्राट्र की विशेषताएं उजागर होती है। ❖❖

अमृत तत्व

महर्षि याज्ञवल्य की दो पत्नियां थी। एक दिन उन्होंने दोनों पत्नियों को बुलाकर कहा - 'मैं दीक्षा लेना चाहता हूं, तुम दोनों आपस में सारी संपत्ति का बंटवार कर लो।' उनकी एक पत्नी मैत्रेयी ने पूछा - 'मुझे बंटवारे में जो धन मिलेगा, क्या उस धन से ईश्वर भी मिल सकता है?' महर्षि ने उत्तर दिया - 'धन से अमृत तत्व नहीं मिल सकता।' 'यह धन से खरीदने की वस्तु नहीं हैं क्यों?' महर्षि की दूसरी पत्नी ने पूछा। महर्षि ने समझाया - 'धन से ज्ञान नहीं मिलता, न भक्ति और न ईश्वर। धन को भोगने से अभिमान होता हैं धन रखने और दान करने से भी अभिमान ही पैदा होता है।' मैत्रेयी ने महर्षि को उत्तर देते हुए कहा - 'जिससे मुझे अमृत तत्व नहीं मिल सकता, वह वस्तु मुझे स्वीकार नहीं।'

क्षमा का अमृत

- पदमचंद गांधी जैन, जयपुर (राजस्थान)

क्षमा जीवन का अमृत है। क्षमा से बढ़कर इस संसार से मुक्त करने वाला कोई तप नहीं है। क्षमा से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है। क्षमा जीवन मैत्री का प्रथम सौपान है तथा आत्म शुद्धि का द्वार है जिसके द्वारा कटुता, वैमन्यसता, राग, द्वेष मिटा कर आत्मा को शुद्ध, पवित्र एवं निर्मल व ज्योतिर्मय बनाया जा सकता है। मनुस्मृति 633 में धर्म के दस लक्षणों में क्षमा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है क्योंकि क्षमा कषाय मुक्ति की परम औषधि है। इसलिए क्रोध को क्षमा के द्वारा शान्त किया जा सकता है। क्षमा अर्थात सहनशील होना और क्रोध पैदा न होने देना तथा उत्पन्न क्रोध को विवेक और नम्रता से निष्फल कर डालना।

'क्षमा विरस्य भूषण' अर्थात क्षमा वीरो का आभूषण है, जो शक्तिशाली होकर सहनशीलता रखता है तथा किसी तरह का प्रतिकार न करते हुए क्षमा कर देता है, वही सूरवीर है। क्षमा अर्तशत्रु को जीतने का खडग है। पवित्र आचार रक्षा करने का बख्तर है। शुद्ध भावों से असहय दुःख में सम परिणामों से क्षमा रखने वाला मनुष्य भव सागर तिर जाता है। क्षमा भावना में वह शक्तिनिहित है, जिसमें मनुष्य को परम पावन जीवन जीने की सुखद राह प्राप्त होती है। क्षमा ही वह अलौकिक तत्व है, जिससे जीवन में मृदुता आती है। सद्भावना का संचार होता है, पारस्परिक कटुता मिटती है। मैत्री एवं मैत्री भावना का विकास होता है।

क्षमा मानवीय गुण : क्षमा मानवीय गुण है, इसलिए विश्व के सभी धर्मों में इस गुण की सर्वाधिक प्रतिष्ठा है। क्षमा आत्म स्वतंत्रता की रणभेरी है। इससे जीवन का कोई भी संघर्ष जीता जा सकता है, इससे निजी शक्ति एवं साहस का ज्ञान होता है। एक छोटा सा शब्द सॉरी बोलने से सामने वाले का पचास प्रतिशत गुस्सा शांत हो जाता है और यदि मुस्का कर प्रेम से विनम्रता से बोला तो गुस्सा पूरा शांत हो जाता है। ब्रट्रेण्ड रसेल ने कहा 'वह मनुष्य सुखी है जो अन्य पुरुषों के साथ अपने संबंधों को न तो अचानक तोड़ देता है और न उनमें विषैलापन उत्पन्न होने देता है। इस प्रकार क्षमा जीवन का अमृत है।' अलेक्जेण्डर पोप ने कहा 'गलती करना मानवीय कार्य है और क्षमा करना ईश्वरीय। मानव की महानता क्षमा करने में है।' संत तुकाराम ने कहा 'जिस भक्ति के हाथ में क्षमा रूपी शास्त्र है, उसका दुष्ट भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यदि दावाग्नि में तृण न पड़े तो वह स्वयं ही बुझ जायेगी। गुरु गोविन्द सिंह ने तो यहां तक कहा 'कोई कमजोर तुम्हारा अपमान करे तो तुम उसे क्षमा कर दो, यही तुम्हारी वीरता है। कुरान सरीफ हजरत मुहम्मद पैगम्बर ने स्पष्ट किया 'क्षमा याचना का मूल उद्देश्य है भाव शुद्धि हो जिसे आत्मा मल रहित होती है, जो गुस्सा पीकर लोगों को माफ कर देते है। अल्लाह ऐसी नेकी करने वालों को प्यार करते है। महात्मा गांधी ने कहा 'दण्ड देने की शक्ति होने पर भी दण्ड नहीं देना सच्ची क्षमा है। ईसामसीह को क्रोस पर लटकाते समय क्षमा का संदेश देते हुए कहा 'हे प्रभु इन्हे क्षमा करना ये अज्ञानी नहीं जानते कि ये क्या कर रहे है। प्रभु महावीर ने कहा 'जे कम्मे सूरा, ते धमम सूरा' अर्थात जो कार्य में सूर है वह धर्म में सूर है। अतः कर्म ऐसे उत्कृष्ट हो जिससे मैत्री भाव हो, कर्म तोडने के परिणाम को सुधारा जा सकता हो, जिसका सोपान क्षमा है। अर्जुनमाली, गुजसुखमाल, अनेको उदाहरण है, जिन्होंने क्षमा के द्वारा मुक्ति पायी है।

सुनने में आता है जो अमृत को पी लेता है, वह अमर हो जाता है। अमरत्व को प्राप्तकर लेता है। जैन दर्शन इसे नहीं मानता, क्योंकि जिसने जन्म लिया है वह मृत्यु को वरण करता है। लेकन यह सत्य है, जिसने क्षमा का अमृत पिया है वह निश्चित रूप से अमर हो जाता है, जन्म-मरणके बंधनों से मुक्त हो जाता है, क्योंकि जिसकी आत्म निर्मल होती है, पवित्र होती है कषाय मुक्त होती है और जो क्षमा के गुणों को अपनाता है वही क्षमा के अमृत के स्वाद चखता है। अतः स्पष्ट है क्षमा ही अमरत्व की औषधि है और अमर बनने का मंत्र भी। आज देखने में आता है। क्षमा तो मांगी पर 'क्षार' गया नहीं क्योंकि हम केवल होटो से क्षमा मांगते है, हृदय एवं अंर्तमन से नहीं, संवेदनाओं के साथ अहोभाव

से नहीं मांगते। लेकिन यह सच है हृदय से मांगी गयी क्षमा अमृत है, मृदुता है। इसमें दूसरों की कमियों को तथा भूलों को देखने का स्थान नहीं होता केवल और केवल स्नेह और मैत्री भाव होता है और जहां मैत्रीभाव होता है वहां कोई शत्रु नहीं होता केवल और केवल स्नेह और मैत्री भाव होता है तथा जहां मैत्रीभाव होता है वहां कोई शत्रु नहीं होता, लेकिन जीवन में 'खार' जब तक होता है मन में तब तक कुटिलता एवं मलिनता रहती है। अतः अनुभवी ने कहा है 'हे जीव तूने क्षमा मांगी फिर भी मन में खार रूपी राग-द्वेष है। कषाय है तो सच्ची क्षमा नहीं है। तुझे यह क्षमापना का सुनहरा अवसर मिला है। सभी जीवों के साथ मैत्री भाव रखने का साहस प्राप्त हुआ है, लेकिन फिर भी हृदय में क्रोध की ज्वाला का शमन नहीं हुआ। अतः सोच ! क्षमा का अवसर मिला यह तेरा सौभाग्य है लेकिन क्षमा की सच्ची रीत को नहीं समझा यह तेरा दुर्भाग्य है। इस प्रकार वास्तव में जिससे क्षमा मांगनी है, वहां तक हम पहुंच नहीं पाते क्योंकि हमारा अभिमान एवं इगो बीच में दीवार बन जाता है। आपसी रंजिस दुश्मनी बीच में आ जाती है तथा मैत्रीभाव नदारद हो जाता है। अतः हे देवानुप्रिय ! क्षमा अमृत तो तभी सिद्ध होगा जब दवा पीए और दर्दी का दर्द मिट जाये अर्थात आत्म का क्षार क्षीण हो जाये या गल जाय।

खामेमी सव्वे जीवा सव्वे जीवा खमन्तु में
मित्ति में सव्व भुवेसु वेरं मज्झं केणई

क्षमा का दान स्वयं अपने अंतर्हृदय से दो। इनमें कोई शर्त एवं अपेक्षा नहीं हो। सभी जीव मुझे क्षमा करे, लेकिन जरूरी नहीं कि वे मुझे क्षमा करेंगे। हम केवल याचना करते है, उन पर दबाव नहीं बनाते तथा न कोई शर्त रखते एवं स्वार्थ रखते यदि ऐसा होता तो क्षमा केवल औपचारिक होती है। जगत के सभी प्राणी मेरे मित्र है यह बात निस्वार्थ भाव से ग्रहण करनी है और जब जगत के सभी मित्र होते है और किसी से वेरभाव नहीं होता है तो शत्रु रहित बनना स्वतः सिद्ध हो जाती है।

क्षमाशील बनना एक प्रक्रिया है : क्षमा कोई साधारण शब्द नहीं इस की पात्रता के लिए सतत साधना की आवश्यकता होती है। इसकी प्रक्रिया को अपनाना पड़ता है। क्षमा करना एवं क्षमा मांगने का भावनात्मक संबंध होता है, जिसका परिणाम कषायमुक्त होना है। क्षमाशील बनने के लिए साहस, विश्वास, सहनशीलता, स्वाध्याय, दर्शनविशुद्धि, ध्यान आदि बारह भावना तथा मैत्री, प्रेमाद, करुणा और मध्यस्थ भा आदि इन सभी प्रकार की भावनाओं के साथ प्रार्थनाओं को नियमित अभ्यास करना एवं कराना आवश्यक है। ऐसा करने से भीतर में व्याप्त क्रोध, मान, माया, लोभ अदि कषायों की महत्ता से क्षमा धर्म उत्पन्न होता है। विचारों में उदारता एवं विशालता पनपति है। वैर को नष्ट करने की भावपूर्ण क्रिया की जाती है, वही सच्ची क्षमापना है।

क्षमा साधना के उपाय : क्षमा के अमृत से अन्तर्मन की अग्नि को शांत किया जा सकता है, इसके लिए क्रोध के निमित्त के कारणों को खोजना तथा की गई गलतियों एवं भूलों पर ध्यान देना होगा। दोष निमित्त को नहीं स्वयं को देवें। यह सोचे, दोष मेरा है भूल मेरी है, मैं ही निमित्त हूँ। यदि ऐसा सोचेंगे तो क्रोध का निग्रह होगा। क्रोध रूपी कषाय को जीतने के लिए सरल बनना होगा, बाल स्वभाव का का चिंतन करना होगा। इससे हमारे भीतर में ग्रंथियाँ उत्पन्न नहीं होगी। इसलिए गलतियों को नजरअंदाज करना करना भी लाभदायक बन जायेगा। यदि आपसे कोई गलती हो भी गई हो तो यह समझने का प्रयास करें कि मेरे पूर्वकृत कर्म थे जो उदय में आये हैं ऐसा समझने से मन में सरलता प्रकट होगी। क्षमा साधना के लिये सोचें - 'धारण करने से चित स्वस्थ रहता है। अतः तू क्षमा धारण कर, क्षमा अमृत की धारा है जो क्रोध के विष को मार देती है। क्षमा रूपी शस्त्र धारण कर, क्षमा अमृत की धारा है जो क्रोध के विष के मार देती है। क्षमा रूपी शस्त्र जिसके हाथ में है दुर्जन उसका क्या बिगाड़ सकता है। क्षमा की शीतल धारा अंतःकरण के ताप को शांति से अप्लान्वित करती है। क्षमा अंतःकरण के ताप को शांत करती है। इस प्रकार के क्षमा के गुणों का चिंतन करने से हृदय एवं मन शांत होता है। इस प्रकार क्षमा का अमृत जब बरसता है तो क्रोध की अग्नि तो शांत होती है। साथ में सर्वत्र मैत्री भी नजर आती है क्योंकि जहां क्षमा है वहां शत्रु का उदय नहीं हो सकता। क्षमा से चित में प्रसन्नता आती है आत्मा विशुद्ध बनती है, निर्मय बनती है। ❖❖

आधुनिक युग में आदर्श जैन स्थानक भवन कैसा हो ?

- मनोजकुमार कांतिलाल कात्रेला जैन, पुणे (महाराष्ट्र)

प्रभु भगवान महावीर स्वामी ने केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद तीर्थ की स्थापना की। चतुर्विध तीर्थ यानि चार तीर्थ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका। ये चार तीर्थ, जैन आगम के मान्यता के अनुसार है, तीर्थ के ये चार स्तंभ कहलाते है। तीर्थ स्थापना करने का उद्देश्य था, आत्मसाधना करके आत्मा का कल्याण करना। सम्यक् दर्शन, ज्ञानपूर्वक चारित्र्य और धर्म का शुद्ध पालन।

आदर्श जैन स्थानक बनाने की कल्पना करने के पहले हमें ये सोचना है कि स्थानक भवन क्यों बनाना है? क्या करना है? आज हम ऐसे विषय पर चिंतन कर रहे है कि स्थानक निर्माण कैसे हो? इसका मतलब हम कही तो अूरापन महसूस कर रहे है या बदलाव होना चाहते है।

वर्तमानकाल, समाज तेजी से बदल रहा है। सामाजिक रिती-रिवाज, शैक्षणिक व्यवस्था का ढाँचा बदल रहा है। धार्मिक कार्यक्रम एक इवेंट हो रहा है, यह आने वाले पल के लिए धोके की घंटी हो सकती है।

जैन स्थानक यानि, जहाँ पर साधुजी-साध्वीजी ठहर कर धर्म आराध कर सकते है। जहाँ श्रावक-श्राविका स्वाध्याय, साधना, धर्म आराधना आदि करते है। वह जगह शत प्रतिशत पवित्र स्थान होना चाहिए। जैन स्थानक भवन का प्रांगण ऐसा हो, जहां अंदर प्रवेश करते ही राग, लोभ, मोह, माया ये चार कषायों की जंजीर टूट पड़े।

जैन स्थानक भवन में मुख्य सभा मंडप, प्रार्थना स्थल, साधुजी-साध्वीजी और बाहर गांव से आये हुये महानुभावों के ठहरने के लिए कमरे, भोजनशाला, पार्किंग व्यवस्था हो। जैन स्थानक में एक वाचनालय, ग्रंथालय भी होना अनिवार्य है, जहाँ सभी जैन तत्व विचारों की पुस्तुके / किताबें / गंथ पढ़ने के लिए उपलब्ध हो।

आज कल तो भव्य-दिव्य स्थानक तो बन जाते है, लेकिन वहां मन नहीं ठहरता, इसके कारण भी हम सभी ढूढ़ने होंगे। पुराने वक्त में संपर्क सुविधा न होते हुए भी लोग एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। परन्तु अब आधुनिक युग में सभी सुविधा होते हुए भी पविार, समाज, एक संग नहीं दिखाई दे रहा है।

अच्छा स्थानक आदर्श हो, सभी लोग साथ रहकर धार्मिक, संस्कारयुक्त आदर्श पीढ़ी बनाने के लिए एक अच्छा स्थानक का निर्माण हो। वहाँ लोग एक-दूसरे की पूछताछ करें, धर्म आराधना करे, सहयोग करें।

स्थानक भवन में टीमवर्क का होना बहुत जरूरी होता है। कोई भी संघ हो, स्थान हो, वर्तमान युग में कार्य की दिशा में एक विशेष विचारशैली होनी चाहिए। टीम वर्क का मतलब है कि सब साथ चलकर कार्य करे, विकास करे। एक ही व्यक्ति सारा काम संभल नहीं सकता। अनेक लोगों की जरूरत होती है। आज के काल में सभी अंगों से विचार करना जरूरी है। जैन स्थानक एक जगह न होकर एक परिवार होना चाहिए। जैन स्थानक के बारें में हमें, हम सभी के मन में अपनेपन की भावना महसूस होनी चाहिए। ये जिम्मेदारी संघ के ट्रस्टी और सभी सदस्यों की होती है।

जैन स्थानक में सभी के साथ एक जैसा बर्ताव होना चाहिए। समान बर्ता, सम्मान मिलना चाहिए, वहाँ गरीब-अमीर, ऊंच, नीच का भोद ना हो। स्थानक के ट्रस्टी को सेवक का लेबल लगाना चाहिए। सेवक यानि सेवा करने वाला, सेवा का मतलब है समर्पण, एक-दूसरे के प्रति सम्मान। जब तक हमारे स्थानक से जुड़े लोगों के मन में नम्रता, समर्पण सेवा और त्याग के भाव नहीं होंगे, तब तक स्थानक का महत्व और उपयोग नहीं हो सकता।

स्थानक के सदस्यों के द्वारा रोज प्रार्थना, धार्मिक कार्यों द्वारा जैन प्रणाली विचारों को आगे बढ़ाना होगा। जैन स्थानक निर्माण में बहुत जरूरी तत्व है, वफादारी, सच्चाई और पारदर्शिता। जैन स्थानक यानि एक परिवार का निर्माण। परिवार निर्माण का अर्थ है एक से अनेक का निर्माण, स्व से सर्व का निर्माण, शून्य से सृष्टि का निर्माण।

जैन स्थानक में कभी मतभेद, झगड़ा ना हो, हमें समझना चाहिए कि हम एक समाज के, एक ही परिवार के सदस्य है। घर की बात घर तक ही सीमित रहनी चाहिए। रागद्वेष मत करे, एक दूसरे के प्रति प्रेमभाव रखना चाहिए। स्थानक में बच्चों की पाठशाला, किशोर, युवाओं के लिए रचनात्मक

कार्यक्रमों का आयोजन हो, स्थानक में सूचना, प्रस्ताव हेतु एक सूचना पेटी हो। सामूहिक धर्म चर्चा में सभी सदस्यों की सूचना का सम्मान करें, कोई भी निर्णय सभी के सहमति से लिया जाए।

स्थानक में एक मदद समिति जरूर हो, अपने आस-पास में कई लोग ऐसे भी है, जिन्हें कई प्रकार की मदद जरूरत होती है वहां हम आज भी नहीं पहुंच पा रहे है। जैन स्थानक एक युनिट है, हमें दूसरे यूनिट के साथ अर्थात अन्य स्थानकों से संपर्क में रहकर युनाईटेड बनना होगा।

जैन स्थानक की एक नियमावली हो, उसका सभी को पालन करना अनिवार्य है। जैन स्थानक के अंदर कोई भी व्यक्ति के नाम का नामफलक नन हो, बस अरिहंत का वास हो। जैन स्थानक में बर्थडे, शादी, आदि कार्यक्रम न हो। सिर्फ धार्मिक और शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन हो। जैन स्थानक निर्माण यानि स्नेह का निर्माण, जैन स्थानक निर्माण यानि समर्पण का निर्माण, जैन सथानक निर्माण यानि शक्ति का निर्माण, जैन स्थानक निर्माण यानि सद्भाव का निर्माण, जैन स्थानक निर्माण यानि मानसिक ऐक्य / एकता / संघठन का निर्माण। ऐसे भव्य सुविधायुक्त, धर्ममय स्थानक भवन का सभी को इंतजार है। ऐसे मंगलमय, आदर्श स्थानक का निर्माण हो यही मंगलमय भावना।

❖❖

जैन भवन, नई दिल्ली में एक आधुनिक सुविधाजनक अतिथि गृह, शुद्ध-सात्विक जैन भोजनशाला, एवं अत्याधुनिक ए.सी. सांस्कृतिक सभा हॉल 24/7 उपलब्ध

श्री आॅल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के केन्द्रीय कार्यालय जैन भवन, 12 शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 में एक आधुनिक सुविधानक अतिथि गृह ठहरने हेतु 24/7 उपलब्ध है।

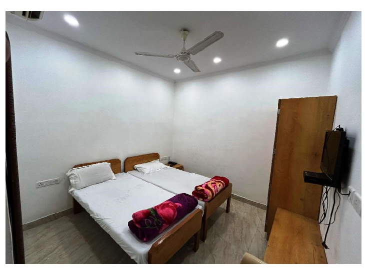

यहाँ आप अपने निजि कार्य हेतु आने पर आसानी से ठहरकर विश्राम कर सकते हैं। यहाँ पर आपको साफ-सुथरे ए.सी. कमरों के साथ-साथ शुद्ध-सात्विक जैन भोजनशाला मिलेगी, जहां पर आप जैन भोजन के रूप में नाश्ता, दोपहर और शाम के खाने का आनंद उठा सकेंगे।

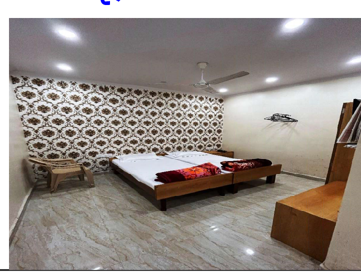

पत्रिका में दिये गये संपर्क सूत्रों पर कॉल करके एडवांस बुकिंग कर आप इन सभी सुविधाओं का लाभ आसानी से उठा सकते हैं। सभी जैन बंधुवर अपने परिवार सहित दिल्ली आने पर उपरोक्त वर्णित सुविधाओं का लाभ अवश्य उठायें।

विनय मोक्ष का द्वार

- बी. शांतिलाल पोखरणा जैन, विजियानगरम् (आन्ध्र प्रदेश)

विनय मोक्ष का द्वार है,
बिना विनय न हुआ भव पार है ।
अहंकार शून्य के भावो से -
प्रतिफलित होता विनय ।
विनय जीवन का शृंगार है !

ज्ञान आराधना ही विनय से, तभी -
आत्म ज्ञान के विवेक को जगा पाओ,
विनय है ज्ञान प्रकाश का पुंज, तभी -
अन्तर तम को प्रकाशित कर पाओगे ।
विनय हृदय का हार है !

जप-तप-ज्ञान प्राप्त होता विनय से,
विनय से सम्यकत्व का भाव पाओगे ।
विनय है मूल धर्म का -
धर्म को हर भव साथ पाओगे ।
विनय जिन शासन की शान है ।

विनयवान शिरोमणी गणधर गौतम,
हर भव याद किये जायेंगे ।
विनय है भव सागर का जहाज -
जिन वाणी का सबल ले, पार हो जायेंगे ।
विनय गुणीजनों के प्रति मंगल भाव है,
विनय मोक्ष का द्वार है ।।

❖❖

वीतरागता हो तो ऐसी

एक बार राजा जनक गुरु अष्टावक्र के पास बैठे थे। सूचना मिली कि राजमहल में आग लग गई है। राजा जनक शांत बैठे रहे कि जिसने लगाई है वह ही बुझाएगा। वहीं एक ब्राह्मण था। वह भागने लगा। पूछा कि क्या बात है तो वह बोला - 'मेरी झोंपड़ी महल से सटी हुई है। उसमें एक ही लंगोटी है। वह जल जाएगी तो कल क्या पहनूंगा।'

❖❖

दक्षिण भारत में जैन धर्म

- डॉ. बी. रमेश गादिया जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)

आज से हजारों साल पहले उत्तर भारत में 12 साल का भयंकर अकाल पड़ा। उस से गृहस्थ के साथ-साथ साधु समुदाय भी प्रभावित हुआ। उस समय बहुत से जैन आचार्य और साधु-साध्वियों ने चतुर्विध संघ के श्रावक-श्राविकाओं के साथ हिमालय और बहुत से दक्षिण भारत में पधारें।

अपने सिद्धांतों और संयमी सदाचारी जीवन से दक्षिण भारत के बहुत से लोगों ने जैन धर्म अपनाया। महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल में जैन धर्म इतना फैला कि अनेकों राजाओं, महामंत्रियों, सेनापतियों और जनसाधारण ने जैन धर्म अपना लिया। जैन धर्म राज्य धर्म और राष्ट्र धर्म, बन गया। जैन साधु-साध्वियों, श्रावक श्राविकाओं ने स्थानीय भाषा में यथा मराठी, तेलुगू, तमिल, कन्नड़ और मलयालम भाषा में जैन दर्शन के सिद्धांतो के अलावा आयुर्वेद, ज्योतिष आदि भिन्न विषयों पर साहित्य की रचनाएं की। इसकी बहुत सी पांडुलिपि दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिरों और मठों में आज भी उपलब्ध है। समय के साथ-साथ दिगंबर जैन समाज का ह्रास होता गया। कालांतर में मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात की ओर श्वेताम्बर जैन संप्रदाय का प्रभाव बढ़ने लगा।

पिछले दो सौ साल से विदेशी शासन के काल से जैन श्रावकों और साधुओं का आगमन पुनः दक्षिण भारत में फैलने लगा। अंग्रेजों के साथ-साथ व्यापार हेतु जैनी दक्षिण में आने लगें। साथ ही साथ जैन आचार्य साधु-साध्वियों के आगमन दक्षिण भारत में हुए। विगत दो दशकों में अनेक जैन मंदिरो का निर्माण होने लगा।

पिछले कुछ सालों से दक्षिण भारत के स्थानीय लोगों में जैनियों के उनके मंदिरों के प्रति भी श्रद्धा भक्ति की जगह द्वेष् भाव ज्यादा दिखाई देता है। जैनियों के प्रति उठती नफरत को सब महसूस कर रहे हैं।

आइए इसकी गहराई में जाकर चिंतन मनन करें। हजारों साल पहले जैन मंदिरो और आजकल के जैन मंदिरों में एक भेद स्पष्ट दिखाई देता है। प्राचीन मंदिर साधारण (चूने मिट्टी से बने) होते हैं. आज कल के मंदिर संगमरमर और मंहगे ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित है। ऐसा नहीं कि उस समय के श्रावक धनी और समृद्ध नहीं थे। उस समय मंदिरों के स्थान पर जैन विद्वान और साहित्य पर जोर देते थे। उस समय कश्मीर से ताड़ पत्र मंगवा कर जैन साहित्य लिखा जाता था। इसके अलावा उस समय के जैनाचार्य और प्रबुद्ध श्रावकों ने स्थानीय भाषा और स्थानीय लोगों को जोड़ने का प्रयास किया, लेकिन जैसे-जैसे जैन धर्म, धनी वणिकों के हाथ में गया और जैनी अपने-अपने संप्रदाय गच्छ पंथ के व्यामोह में सिमटने लगा। जन साधारण इससे दूर होता गया। जैन धर्म जो कभी राज्य धर्म और राष्ट्र धर्म था वह अपनी संकीर्ण विचारधारा से सिमटता हुआ शनै-शनै समाप्त हो गया। यही इतिहास देश विदेश में हर धर्म संप्रदाय में दोहराया। इस कटू सत्य को हम समझे।

आज भले ही दक्षिण में बड़े बड़े भव्य मंदिर बन रहे हैं, लेकिन आज भी जैनियों की वही मानसिकता है। अपने-अपने संप्रदाय गच्छ पंथ के चहुंमुखी विकास के लिए प्रयासरत हैं। लेकिन स्थानीय लोगों के, उनकी भाषा के अभिवृद्धि के लिए कोई-कोई प्रयास नहीं हो रहा है। यह उपेक्षा, धीरे-धीरे नफरत और घृणा में बदल रही है। जैन मंदिरों में बढ़ा आडंबर भी इसका एक कारण है। इसके अलावा जैनियों के विवाह समारोह में विकराल रुप धारण करते जा रहे-व्यर्थ के आयोजन से भी दक्षिण भारत के स्थानीय लोग बहुत आक्रोश में है।

दक्षिण भारतीय संघ, संस्थाओं द्वारा उठ रहा विरोध भी भविष्य की डरावनी तस्वीरें दिखा रहा है। हमें अभी सावधान होना बहुत जरूरी आवश्यक है। दक्षिण भारत के गरीब लोग देखते हैं कि जैन मंदिरों में, चौमासे में, शादी विवाह समारोह में, ये मारवाड़ी (इसमें राजस्थान के अलावा गुजरात, पंजाब और उत्तर भारत के भी शामिल हैं) लोग हम गरीब मजबूरों से लूटकर हजार करोड़ रूपए पानी की तरह बहा रहे हैं। उनके लिए 25 कौम के सभी उत्तर भारतीय सभी मारवाड़ी

ही है।

इसके कारण में गहराई से खोजें तो दो कारण स्पष्ट दिखाई देते हैं। पहला कारण उपर बताया जा चुका है। बढ़ता दिखावा। दूसरा मुख्य कारण है दक्षिण भारतीयों से अलगाव। उनकी भाषा, सभ्यता और संस्कृति से न जुड़ने के कारण उन्हें लगता है कि बाहर से आकर ये लोग हमें लूटते हैं। जैसे आलेख में पहले ही बताया गया है कि हजारों साल पहले जैनियों का दक्षिण में प्रवेश हुआ उस समय उन्होंने दक्षिण की भाषा, सभ्यता और संस्कृति को अपनाया। आजकल अपने अपने दायरे में सिमट गए हैं।

जरा निष्पक्ष होकर चिंतन मनन करें कि हजारों साल पहले जब जैनियो, आचार्यों, साधु-साध्वियों दक्षिण भारत में पधारे, तब कितने मुश्किलों का सामना किया होगा। भाषा सभ्यता और संस्कृति कितनी अलग रही, फिर अपने कष्टों को सहन किया यहां की भाषा सभ्यता और संस्कृति से परिचय प्राप्त किया। आज भी मराठी, तेलुगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम भाषा में अनेक साहित्य दक्षिण के मठ मंदिरों में सुरक्षित है।

हाल ही में बैंगलोर में एक संस्था द्वारा मारवाड़ी समाज को खुले आम चुनौती दी। पिछले दिनों चेन्नई के राजनेता ने हिंदी भाषी के विरोध में जहर उगला।

आज प्रबुद्ध उत्तर भारतीय समाज को इस दिशा में एक ठोस कदम उठाना होगा। सबसे पहले मंदिरो च और शादी विवाह समारोह में बढ़ते आडंबर पर रोक लगानी होगी। दूसरा दक्षिण भारत के स्थानीय लोगों को विश्वास में लेना होगा। ❖❖

लीला

एक बार एक बादशाह की बेगम बीमार पड़ गई। कई तरह के इलाज कराए, लेकिन कोई इलाज माफिक नहीं आ रहा था। अंत में एक बेहद पहुंचे हुए हकीम ने बताया कि - 'यदि अमुक-अमुक लक्षणों वाले आदमी का कलेजा कहीं से मिल जाए तो बीमारी से बचने की कुछ उम्मीद हो सकती है।' बादशाह को अपनी बेगम से बहुत मोहब्बत थी। वैसा आदमी खोजने के लिए मुनादी करवा दी गई। चारों तरफ राज सेवक दौड़ा दिए गए। बादशाह रोज उनसे पूछता, हिदायतें देता फटकार लगाता कि वैसा आदमी अब तक क्यों नहीं मिला।

आखिर राजा के कर्मचारी एक लड़के को ले ही आए। उसके गरीब मां-बाप ने कुछ धन के एवज में अपने लख्ते-जिगर को राज कर्मचारियों को सौंप दिया। काजी ने फतवा दिया कि - 'बादशाह की बेगम को बचाने के लिए किसी की जान लेना गुनाह नहीं है।' लड़का बादशाह के सामने खड़ा था।

हकीम अपनी तैयारी करके बैठ गए। जल्लाद ने तलवार उठाई उस वक्त लड़का आसमान की तरफ देखकर हंस पड़ा। बादशाह ने इशारे से जल्लाद को रोका और लड़के से पूछा - 'लड़के! तू हंसा क्यों?' लड़का बोला -

'मां-बाप जो कि संतान की रक्षा के लिए अपने प्राण दे देते हैं उन्हीं ने मारे जाने के लिए बेच दिया। काजी जो न्यायमूर्ति कहलाता है, उसने एक बेकसूर की हत्या का फतवा दे दिया।

बादशाह जो प्रजा का रक्षक है, अपनी निर्दोष प्रजा के एक बालक की हत्या करवा रहा है। इसी असहाय अवस्था में पहुंचकर मैं दीन-दुनिया के मालिक की ओर देखकर हंसा कि ऐ मेरे मालिक! इस संसार की लीला तो देख ली अब तेरी लीला देखनी है। जल्लाद की उठी हुई तलवार का तू क्या करेगा?'

मुझे माफ कर बेटा यह तलवार अब फिर नहीं उठेगी। बादशाह ने उससे क्षमा मांगी और उसे पर्याप्त धन-दौलत देकर वापस उसके मां-बाप के पास भिजवा दिया ❖❖

श्रुत-साधिका महासती पूज्या डॉ. श्री मंजूश्रीजी म.सा.

- डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर (राजस्थान)

जून-2019 की बात है। चेन्नई के धर्मनिष्ठ श्रावक वीरभ्राता शांतिलालजी सिंघवी जैन का फोन आया। उन्होंने बताया कि श्रमणसंघ की वरिष्ठ विदुषी साध्वी आगम-वारिधि डॉ. मंजूश्रीजी का 75वाँ अमृत जन्मोत्सव 16 जून 2019 को पुणे के नजदीक भिवरी स्थित जयति जैनम् साधना तीर्थ में मनाया जा रहा है। ज्ञान, वय और संयम-पर्याय में स्थविरा साध्वीजी ने मुझे याद किया है और इस अवसर पर होने वाले कार्यक्रम में मेरी उपस्थिति चाही है। उनके विलक्षण विद्वत्प्रेम से मैं इसलिए विस्मित हुआ कि उससे पहले साध्वीजी से परिचय नहीं था।

उनके अमृत महोत्सव के शुभारंभ पर मैंने पहली बार उनके दर्शन, वन्दन और सान्निध्य का लाभ लिया। उन्होंने मेरी सतत् साहित्य-साधना पर बहुत प्रमोद व्यक्त किया। शुभाशीष प्रदान किया। उनकी पुस्तक 'मंजुल श्रुत आलेख' के विमोचन का सौभाग्य मुझे प्रदान किया। यह कार्य किसी धनपति से भी करवाया जा सकता था, लेकिन उन्होंने वैसा नहीं किया। उन्होंने कहा - 'एक लेखक ही किसी लेखक के श्रम को समझ सकता है। मैं चाहती थी कि आप जैसा श्रुत उपासक ही इस पुस्तक का विमोचन करे।' साध्वीजी के इस अनूठे दृष्टिकोण और मंगल आशीर्वचन पर मैं मुग्ध था। उनका कहना था कि धनवान के योगदान का मूल्यांकन भी हो और ज्ञानसाधक के परिश्रम का भी मान-मूल्यांकन हो। यह अनेकांत दृष्टि समाज को बहुत आगे ले जा सकती है।

उक्त अवसर के पांच वर्ष बाद 16 जून, 2024 को भिवरी में साध्वीजी का 80वाँ जन्मोत्सव मनाया गया। इस उपलक्ष्य में भिवरी में जैन विद्या शोध केन्द्र का विधिवत शुभारंभ किया गया। साध्वीजी की भावना थी कि एक ऐसा जैन विद्या शोध केन्द्र बने, जहां नित नए अनुसंधान, लेखन और प्रकाशन के कार्य गतिमान रहे। नए विद्वानों का निर्माण हो। आज इस विचार को सही रूप में साकार करके साध्वीजी को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है। वस्तुतः जैन विद्या की उपासना के क्षेत्र में संघर्ष अधिक एवं यथेष्ट मूल्यांकन व प्रोत्साहन का अभाव है। श्रुताराधना में ऐसे अभाव से संस्कृति की सरिता का प्रांजल जल न्यून भी होता है और दूषित भी। संस्कृति का नैसर्गिक प्रवाह मंदतर होता है तथा रुक-रुककर आगे बढ़ता है। सदैव आबाद रहने वाले घाट सूने-सूने लगते हैं। जल-पंछियों और प्रवासी परिंदों की कलरव और अठखेलियाँ बीते जमाने की बात हो जाती है।

ऐसी विकट परिस्थिति में संकल्प की धनी विशिष्ट साधिका पूज्या डॉ. श्री मंजूश्रीजी म.सा. ने ऊसर धरा पर महकता उपवन लगाया है। जयति जैनम् साधना तीर्थ एक ऐसा ही जंगल में मंगल करने वाला ज्ञान-ध्यान की साधना का विकसित होता उद्देश्यपूर्ण उपक्रम है। समाज के प्रबुद्ध और उदारमना महानुभाव यहाँ साध्वीजी के युगीन सपनों को साकार करने के लिए संकल्पित बने रहकर उनकी सच्ची श्रद्धार्चना कर सकते हैं।

पूज्या साध्वीजी के सपने कोई उनके अपने सपने नहीं, वे सबके सपने हैं। भारत की गौरवशाली श्रमण संस्कृति को महिमान्वित करने वाले सपने हैं। उनकी भावना थी कि प्राकृत, संस्कृत जैसी प्राचीन शास्त्रीय भाषाओं में गुंफित विपुल साहित्य का युग की भाषा में विमर्श हो तथा युग की समस्याओं के समाधान के लिए उसका प्रचार-प्रसार और उपयोग हो।

पूज्या डॉ. मंजूश्रीजी म.सा. जैन धर्म की स्थानकवासी परम्परा की महान विदुषी श्रमणी थी। स्थानकवासी परम्परा ज्ञान की साधना करके अपने आत्मज्ञान को प्रकट करने पर विशेष बल देती है। लेकिन विचारणीय यह है कि विगत कुछ वर्षों से इस परम्परा में श्रुतज्ञान के अध्ययन व अनुसंधान की उपेक्षा देखी गई है। किसी भी धर्म, संस्कृति और परम्परा को विकसित और जीवंत बनाए रखने के लिए नवीन अनुसंधान और नवसृजन भी आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति में यह जैन शोध केन्द्र अपना गौरवपूर्ण योगदान कर सकें, ऐसा समाज का प्रयत्न होना चाहिये।

साध्वीजी का शोध ग्रंथ 'जैन दर्शन और कबीर : एक तुलनात्मक अध्ययन' एक अस्पर्शित विषय पर अद्वितीय

अन्वेषण है। यह ग्रंथ उनकी गहन शोध दृष्टि, प्रकाण्ड वैदुष्य और दीर्घ परिश्रम दर्शाता है। इस ग्रंथ में उनकी निष्पक्षता और गुणग्राहिता जैसे अनेक गुण प्रकट हुए हैं। सन्दर्भ-योग्य यह श्रेष्ठ शोध कार्य तो एक उदाहरण मात्र है। जैन शोध केन्द्र के माध्यम से ऐसे प्रयास होने चाहिये कि शोधार्थी और साहित्यकार विभिन्न विषयों पर नवीन भाषा शैली में अनुसंधान और नवसृजन को बढ़ावा दें। जैन शोध केन्द्र को सक्रिय बनाकर इस कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है।

पूज्या साध्वी डॉ. मंजूश्रीजी म.सा. के संयम-पथ में प्रेरणा के अनेक प्रकाश-स्तंभ निर्मित हुए। साध्वी-जीवन में रहते हुए अनेक कठिनाइयों व संघर्षों के बावजूद विश्वविद्यालय स्तर की उच्च शिक्षा अर्जित करना और अव्वल रहने के बावजूद घोषित स्वर्ण-पदक अस्वीकार करना किसी को भी अचंभित कर सकता है। श्रमणोचित निस्पृहता व समता के साथ मूल्यपरक शिक्षा और ज्ञानार्जन के प्रति उनकी अप्रमत्तता चकित करती है। धार्मिक, सामाजिक और शैक्षणिक जगत की समस्याओं के निवारण में उनकी यह समदृष्टि और समन्वित दृष्टि समाधान का मार्ग प्रशस्त करती है।

विद्यार्थियों की कमीं के कारण पूना विश्वविद्यालय में जब प्राकृत विभाग के बन्द होने की स्थिति आई तो साध्वी डॉ. मंजूश्रीजी ने समाज को ललकारा कि जिस नगर में जैनों के दस हजार से अधिक घर हों, वहाँ जैनागमों की भाषा का विभाग बन्द करने की स्थिति आ जाए, यह चिंता की बात है। पूज्या साध्वीजी के साहस और प्रयत्न से समाज जागा और विश्वविद्यालय में प्राकृत विभाग गतिमान रह सका।

साध्वीजी ने न सिर्फ विद्यार्थी और शोधार्थी तैयार किये, अपितु प्राकृत और जैन विद्या के अध्ययन की महत्ता के पक्ष में अनुकूल वातावरण भी तैयार किया। विश्वविद्यालय स्तर पर जैन विद्या (जैनोलोजी) के अध्ययन व अनुसंधान की दृष्टि से साध्वीजी का यह कदम समाज को प्रेरणा देता है।

साध्वी डॉ. मंजूश्रीजी एक विदुषी अन्वेषक होने के साथ ही, गद्य और पद्य में मौलिक सृजन करने वाली साहित्य-मनीषी भी थी। अनछुए विषयों पर उनके चिंतनपूर्ण लेख और शोधालेख कई नये विषयों और तथ्यों से अवगत कराते हैं। अच्छे गीत लिखने के साथ उन्हें लयबद्ध तरीके से सुमधुर स्वर में प्रस्तुत करने में भी वे दक्ष थी। उन्होंने काव्य को सिर्फ पढ़कर ही नहीं, उसे गाकर और सुनाकर भी गहराई से समझा और समझाया है।

पूज्या साध्वीजी की क्रांतधर्मिता अनेक अवसरों पर मुखर हुई थी। उनका कहना था कि जैन धर्म और संस्कृति के उन्नयन में श्रमणियों और श्राविकाओं के योगदान की उपेक्षा नहीं होनी चाहिये। उनके महाप्रयाण पर उनके गुण स्मरण। उन्हें शत-शत नमन !

❖❖

हृदय में स्थान

संत अलवार ने अपनी जरूरतें बहुत ही कम कर ली थी। उनकी झोपड़ी भी इतनी ही थी कि उसमें केवल एक ही आदमी सो सकता था। एक बार रात में भारी वर्षा हो रही थी।

अचानक किसी ने उनकी झोपड़ी का दरवाजा खटखटाया। अलवार ने दरवाजा खोला। एक आदमी गीले कपड़ों में थर-थर कांप रहा था, वह रास्ता भटक गया था। उसने झोपड़ी में रात भर रूकने की प्रार्थना की। संत ने कहा - 'अंदर आ जाओ, मेरी कुटिया में एक आदमी सो सकता है, लेकिन दो आदमी बैठ सकते हैं। हम दोनों बैठकर रात काट लेंगे।' वह आदमी अंदर आ गया तो संत ने दरवाजा बंद कर लिया। थोड़ी देर बाद किसी ने फिर दरवाजा खटखटाया। एक आदमी पानी से तर-बतर सर्दी से कांप रहा था।

उसने भी रात बितोन का निवेदन किया। संत ने कहा - 'कुटिया तुम्हारी ही है मजे से रात बिताओ, परन्तु इस कुटिया में एक आदमी सो सकता है या दो आदमी बैठ सकते हैं या तीन आदमी खड़े हो सकते हैं। अंदर आ जाओ हम तीनों खड़े-खड़े बातें करते हुए रात बीता सकते हैं।' वह व्यक्ति भी अंदर आ गया। तीनों ने रात खड़े रहकर बिताई। सवेरे दोनों मेहमान संत अलवार को धन्यवाद देकर चले गए। हृदय में स्थान होना चाहिए, घर में स्थान अपने आप निकल आता है। ❖❖

आत्म शुद्धि का महापर्व पर्युषण - संवत्सरी

- डॉ. प्रेमसुख सुराणा जैन, अजमेर (राजस्थान)

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय - अनमोल वाणी में अभी जीवन के अन्तिम क्षणों में केवल ज्ञान-केवल दर्शन मिलाकर मोक्ष पाने वाले 90 जीवों का अन्तगड़ के माध्यम से वर्णन सुन रहे हैं। मात्र एक-एक देशना सुनकर जगने वाले कई प्राणी हैं। एक-एक निमित्त पाकर कर्म क्षय करने वालों के वर्णन अन्तगड़ में कहे जा रहे हैं। बच्चे भी हैं, युवा भी हैं तो अनुभवी वृद्ध भी हैं। राजगद्दी पर बैठने वाले भी हैं, तो राजरानियाँ भी हैं। मालाकार बन्धु भी हैं, तो श्रेष्ठी गाथापति भी साधना करने वाले हैं। जगने वालों का वर्णन इसलिये किया जाता है कि हमारी आत्मा में भी जागरण हो। जब तक आत्म जागरण नहीं होता तब तक साधना-आराधना नहीं हो सकती, इसीलिये पूर्वाचार्यों ने महापर्व संवत्सरी की आराधना के पूर्व ये सात दिन शुद्धि के रखे हैं। ये सात दिन भूमिका के हैं, तैयारी के हैं।

जो रोज साधना-आराधना नहीं करते उनके लिए सप्ताह होता है। आपने सुना होगा - भगवत् सप्ताह मनाया जाता है। रोज नहीं सुन सके वह भगवत् सप्ताह में तो सुने। शिक्षा का सप्ताह भी होता है। रोज-रोज नहीं पढ़ने वाला शिक्षा सप्ताह में कुछ तो पढ़े। कभी अनुशासन सप्ताह मनाया जाता है, तो कभी सफाई सप्ताह का आयोजन किया जाता है। दीपावली के पूर्व गाँवों में, नगरों में और महानगरों में सफाई सप्ताह मनाया जाता है। कभी कर्मचारी काम नहीं करते, काम करें उसके लिए अनुशासन सप्ताह रखा जाता है। जीवन में आत्मशुद्धि का सप्ताह भावना के साथ मना लिया जाय, तो बार-बार मनाना नहीं पड़ता।

अच्छे काम करने के लिए पहले शुद्धि आवश्यक है। बीज बोने वाला किसान बीज बोने के पहले खेत से काँटे-कंकर साफ करता है, जमीन को जोत कर उसे नरम बनाता है, खेत में अनावश्यक घास-फूस उग गये हैं तो उन्हें हटाता है फिर वर्षा होने पर बीज बोता है। रंगरेज को देखिये - वह कपड़े पर रंग लगाने के पहले कपड़े में रही पाण, कड़प, मैल है, उसे हटाता है फिर जो रंग चढ़ाना हो, चढ़ाता है। रंग चढ़ाने के पहले रंगरेज कपड़े की सफाई करता है। दृष्टान्त देने की दृष्टि से कहें और समझें तो आप भोजन करने बैठो, तो पहले क्या करते हो? हाथ धोते हो या नहीं? कपड़े पहनने हो तो? आप चाहे रोटी खाने बैठते हो या कपड़े पहनते हो तो सफाई का पहले ध्यान रखते हो। आप थाली पर बैठ गये, परोसगारी करने वाला दाल का हलुआ परोस रहा है और थाली में कचरा लगा है तो कहते हैं ठहरो भाई ! पहले थाली साफ कर लेने दो। खाना हो, पीना हो, पहनना हो आप सफाई का पहले ध्यान रखते हैं।

आत्म शुद्धि का पर्व संवत्सरी :- संवत्सरी है, दिल की दीवाली। आप इस दिल की दीवाली को मनाना चाहते हैं, तो पहले आत्मशुद्धि रूप सफाई करनी होगी। नोट कर लीजिये गारे की दीवार पर चित्र तभी बनेगा जब दीवार साफ हो। हिलती जमीन पर कोई मकान बनाना चाहे तो....? लोहे के बर्तन में शेरनी का दूध नहीं रखा जा सकता है, शेरनी के दूध के लिए तो स्वर्ण पात्र चाहिये। कच्चे घड़े में अमृत रखने से अमृत व्यर्थ जायेगा।

शास्त्रकार कह रहे हैं-मानव यदि तू साधक है तो आज के दिन बनाई आत्म शुद्धि कर अगर कोई साधु है, तो उन्हें रोज आत्म-निरीक्षण की भी जरूरत है। मैंने जो पाप छोड़े उनकी पालना में मैं कितना सजग हूँ? व्रतों के प्रति मेरी कितनी जागरूकता है, मैं कितने पाण का निकन्दन कर पाया हूँ? मुझे कहीं कोई हिंसा का दोष तो नहीं लग रहा है, छोटी-छोटी बाब से मन में उबाल तो नहीं आ रहा है? छल-कपट धोखा तो नहीं कह रहा हूँ? मैं साधु हूँ व आज साधुता की आलोचना करूँ। यह लौकिक पर्व नहीं, लोकोत्तर पर्व है।

पर्युषण पर्व पर आपको हमको सबको संवत्सरी मनानी है। संवत्सर है, नए वर्ष प्रवेश करना है। नए संवत्सर में प्रवेश के पहले, पूर्व में हुई भूलों को व्यक्त कर प्रायश्चित्त लूँ और शुद्धिकरण करूँ। मैंने जानते अनजानते जो भी पाप कर्म किये हैं, उसकी शुद्धि करूँ। मैं साथ हूँ तो सोचूँ कि मैंने जन

समुदाय को विरक्ति मार्ग में लगाने का कितना प्रयास किया है? आज आत्मशुद्धि का दिन है। हर व्यक्ति को अपना जीवन देखने की जरूरत है। ऐसा नहीं कि जनरंज के लिए भजन गा लिए, कहानियाँ कह दी, लोगों को चुटकले कह कर हँसा दिया। मेरे द्वारा असाता पहुँचे, कहीं ऐसा काम तो मैंने नहीं किया? सम्यक् दर्शन के जागरण में मैं कितना आगे बढ़ा कितनों को आगे बढ़ाया?

दान का अभिमान न करें : कोई दानवीर है तो वह सोचे कि मैंने कहीं मुँह देखकर तो तिलक नहीं लगाया? कभी देना पड़ता है इसलिए देता है। कभी अपने पाप ढ़ंकने के लिए देता है। कोई नाम के लिए, कोई प्रतिष्ठा के लिए दे रहा है। न्यायाधिपति जसराजजी चोपड़ा कहते हैं- 'किसी ने एक कमरे के लिए सहयोग किया तो बाहर नाम लिखायेगा फलाणाचंदजी की ओर से बेटा, पोता, पड़पोत सबके नाम। 'एक बार देकर तीन-तीन पीढ़ियों के नाम लिखवाने वाले हैं। कभी सोचते हैं - ओ आदमी लाख रूपयाँ री पूँजी राखे है, तो पाँच हजार दे दियो, मैं करोड़पति अगर पचास हजार नहीं दूँला तो भूण्डो लागेला। आप किसलिए दे रहे हैं, जरा चिन्तन करना। दान देकर दान का अभिमान मत कीजिये। ऐसे अभिमान को दूर करने के लिए आत्मशुद्धि की जरूरत है।

सेवा निःस्वार्थ करें : कोई सेवा करने वाला है, सेवा करता है। कब ? घर में पाँच आदमी बैठे हैं तो वह लोटा भर कर लाता है। पिताजी बीमार हैं, उन्हें दवा देनी है तो लोगों के बीच पूछता है आप कौन सी गोली लेते हैं, बताओ मैं लाता हूँ। सेवा दिखावे के लिए कर रहा है तो वह सेवा, सेवा नहीं है कभी कोई सेवा इसलिए भी करता है कि मैं इनकी सेवा करूँगा तो मुझे ये तिजोरी की चाबी सँभला देंगे। कोई साधु आचार्य महाराज की सेवा करे यह भावना लेकर कि कभी प्रायश्चित्त लगेगा तो मुझे कम प्रायश्चित देंगे। दिल की दीवाली मनाने वाले हर व्यक्ति को आज आलोचना करनी है।

आलोचना किसे कहते हैं ? : 'आमर्यादया लोचनम् आलोचनम्' मर्यादापूर्वक, अच्छी तरह अपने दोष देखकर उनकी आलोचना करें। दोष देखना कहाँ से चालू करें? स्वयं अपने दोष देखें तथा गुरु के समक्ष उनकी आलोचना करें, प्रायश्चित्त करें। किसी ने पूछा विद्यालय किसलिए? तो कहा पढ़ने-लिखने के लिए। यह हॉस्पीटल किसलिये? तो कहा बीमारी के इलाज के लिए। तुम डॉक्टर के पास क्यों दिखाते हो? तो कहा - ठीक होने के लिए। अब अगर कोई डॉक्टर के पास जाकर कहे डॉक्टर साहब! मेरी आँखें ठीक है, मेरे कान ठीक है। डॉक्टर कहेगा जब ठीक है तो मेरे पास क्यों आये? आज कई लोग हैं, जो हम संतों के पास आकर कहते हैं मेरे रात को नहीं खाने का नियम है, मैं रोज नवकारसी करता हूँ, मेरे अमुक व्रत है। अरे भाई! तुम जो कर रहे हो, उसे कहने या गिनाने की क्या जरूरत? क्या कोई डॉक्टर के पास जाकर यह कहता है कि मेरे को नींद अच्छी आती है, भूख अच्छी लगती है और मेरे कोई बीमारी नहीं है। हाँ, किसी का पेट दुःखता है और वह डॉक्टर के पास जाकर कहे, वह तो ठीक है। इसी तरह गुरु के पास भी अपने आत्मिक दोषों की चर्चा करनी चाहिए।

स्वयं के दोषों की आलोचना करें! : आलोचना दूसरों के दोष देखने के लिए नहीं है, अपने आपमें क्या कमीं है उसे देखना है। आप आत्मा से परमात्मा, जीव से शिव, नर से नारायण बनना चाहते हैं तो अपनी कमियाँ देखिये, उन्हें दूर करने का प्रयास कीजिये। आलोचना क्या और आलोचना किसकी? 'लोगों को डूंगर बलती दीखे, पगाँ बलती नहीं दीखे। दूसरों के दोष देखना आलोचना नहीं, कर्म बन्धन का कारण है, डूबने का रास्ता है। संसार में हर आदमी में कोई-न-कोई कमीं हो सकती है। किसी में कमीं निकालने के पहले अपने में क्या कमी है? उसे निकालने की चेष्टा करनी चाहिये। यह पर्व अपनी शुद्धि के लिए उपस्थित हुआ है।

कभी किसी की नहीं देखें। सावधान रहें! : सौ अच्छे काम करके भी एक कमीं रह जाय तो उस जीव का जन्म-मरण चलता रहेगा। पानी का बाँध ठीक है पर उसमें एक दरार आ गई तो? जहाज में हजारों आदमी बैठकर समुद्र पार करते हैं पर नाव में एक छिद्र है तो? इतना सा छेद है वह भी जहाज को डुबा सकता है। अगर छेद की उपेक्षा कर दी तो नाव में बैठने वालों का जीवन सुरक्षित नहीं है। आपका कमरा बढ़िया है, पलंग बिछा है, ऊपर मखमल की गादी है, ओढ़ने-बिछाने के लिए भी है पर कमरे में दो मच्छर

घुस जायें तो क्या नींद हराम तो नहीं होगी? इस शरीर में काँटा लग जाये तो ...? जब तक कांटा नहीं निकलता चैन नहीं पड़ता। आँख में फूस पड़ गया। जब तक तिनका नहीं निकलता तब तक कितना कष्ट रहता है।

दृष्टान्त को समझें :- पूर्व जन्म में राजरानी बनी अंजना अपनी सौत का एक रत्न चुरा लेती है और उसकी आलोचना नहीं की। दूसरे जन्म में अंजना से बारह साल तक पवनजी बोले नहीं। वह राजमहल में रहती है, पर जेलखाने में और राजमहल में कोई अन्तर नहीं। वह तरस गई। पति मिले या न मिले, एक बार दर्शन ही हो जाय। वह खिड़की से देखने का प्रयास करती है तो खिड़की के सामने दीवार चुनवा दी जाती है। शादी मेरे से, प्रेम किसी और से। उसने एक रत्न चुराया। नतीजा क्या हुआ?

सीता ने ब्राह्मणी के जन्म में अपनी दुकानदारी कम होती देख कर साधु पर कलंक लगा दिया। वह ब्राह्मणी थी ज्योतिष विद्या की जानकार, उसे नक्षत्रों का अनुभव था इसलिए मुहूर्त आदि देखकर बताया करती। किसी को नए मकान में प्रवेश करना हो तो वह ब्राह्मणी से मुहूर्त पूछता। घर में कोई काम हो तो कौनसा दिन श्रेष्ठ है जानकारी लेता। उस गाँव में एक दिन संत-मुनिराज पधारे। लोग आत्मकल्याण का रास्ता बताने वाले के यहाँ पहुँचने लगे, तो ब्राह्मणी के पास भीड़ कम हो गई। ब्राह्मणी ने एक सहेली के कान में कहा तूं यह बात किसी को मत बताना कि ये जो महाराज गाँव में आए हुए हैं, इनके यहाँ रात को एक औरत आती है। यह बात दो घंटे में सारे गाँव में फैल गई। लोगों ने सोचा ये महाराज ऐसे हैं? किसी बात को खोलनी है तो सामने वाले को कह दो यह तो मैं तुझे बता रहा हूँ, तूं किसी से कहना मत। कहीं-कहीं लिखा रहता है कि यहाँ पेशाब करना मना है तो उस जगह लोग अवश्य पेशाब करते हैं। कहीं लिखा होता हैं 'नो एडमिशन विदआउट परमिशन' तो झाँक कर जरूर देखा जाता हैं। गोचरी का समय हुआ, महाराज पात्र लेकर निकले। कोई सामने आता वह इधर-उधर गली में चला जाता। जिसकी भी महाराज पर नजर पड़ती, वह नजर बचाकर ओझल हो जाता। महाराज ने देखा, कल तक जो भक्ति भावना से सत्संग सेवा का लाभ ले रहे थे आज सामने आने के बजाय अपने-आप को छुपाते क्यों है? महाराज को एक बच्चा सामने मिल गया। बच्चे से पूछा क्या बात है आज गाँव के लोग सामने आने के बजाय छुपते क्यों है? बच्चे ने कहा- बात क्या है, यह तो मुझे नहीं मालूम कल रात भाईसा, बाईजी बात कर रहे थे कि 'इण महाराज रे ठिकाने रात को एक बाई आवे है।

पाप की आलोचना करें :- महाराज सोचने लगे यह शरीर नश्वर है। शरीर की मुझे चिंता नहीं, मेरी बदनामी हो जाय तो भी कोई बात नहीं, पर यहाँ तो जिन शासन की बदनामी हो रही है। जब तक मेरा कलंक दूर नहीं होता, मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा। एक-दो-तीन दिन बीत गये। संत तपस्वी थे, फक्कड़ थे। संत की तपस्या से देवता का आसन चलायमान हुआ। देवता चरणों में पहुँचा। संत ने कहा-मुझे मेरे शरीर की नहीं, शासन की चिंता है। वह तो देव शक्ति थी। देव ने ऐसा चक्कर चलाया कि ब्राह्मणी के पेट में दर्द होने लगा और वह तड़फने लगी। देव ने कहा-जो हुआ वह सत्य बता दे, नहीं तो मर जायेगी। ब्राह्मणी को सत्य कहना पड़ा कि मैंने अहंकार में आकर निर्दोष साधु पर झूठा कलंक लगाया है। ब्राह्मणी ने क्षमा याचना की, पर पाप की आलोचना नहीं की। ब्राह्मणी साध्वी बन गई, तपस्या की और वही जीव आगे चलकर सीता बना। सीता पर धोबी ने कलंक लगाया। राम वही है, लक्ष्मण वही है, हनुमान वही है, जिन्होंने सीता के लिए भंयकर युद्ध किया, समुद्र पार किया, वानर सेना बनाई। कर्म उदय में आया तो सब बदल गये। राम ने मात्र धोबी की बात सुनकर सीता को त्याग दिया। आप कहीं माल लेने जाते हो तो तराजू के पलड़े देखते हो, कोई समस्या आये तो फैसला करते हो, पर कर्म उदय में आयेगा, तो बचाने वाला कोई नहीं होगा। किसी को हल्का बताना सहज है, पर जब वही कर्म उदय में आता है तो भोगना मुश्किल हो जाता है। सीता के जीव ने आलोचना कर शुद्धिकरण नहीं किया तो उसे गर्भावस्था में जंगल में घूमना पड़ा। लव-कुश का जन्म जंगल में हुआ। वापस आने के लिए अग्नि परीक्षा देनी पड़ी।

कवि ने कहा है कि :- जरा कर्म देखकर करिए, इन कर्मों की बहुत बड़ी मार है, नहीं बचा सकेगा परमात्मा, फिर

ओरों की क्या बात है।

कर्म गति विचित्र है। आत्म पवित्र बनाऐं : कर्म बाँधना सरल है, भोगना उतना ही कठिन। अतः जब भी गलती हो, आलोचना करके शुद्धिकरण कर लें। तीर्थंकर ने वासुदेव के भव में अहंकार में आकर शय्यातर के कानों में शीशा डलवा दिया तो भगवान महावीर को कानों में कीले ठुकवाने पड़े। पाप और कोई जाने या नहीं जाने, पर पाप करने वाले की आत्मा जरूर जानती है। आपने क्या पाप कर्म किया है, आपकी आत्मा जान रही है और भगवान जान रहे हैं। आप आत्म शांति चाहते हैं तो कर्मरूपी काँटों को निकाल दें। जो भी सुखमय रहना चाहता है तो उसे दुःख रूप काँटों को निकालना ही पड़ेगा। जिसकी भी आत्मा पवित्र बनेगी वह निकट भव में मोक्ष का अधिकारी होगा।

पाप कर्म का उदय कब आयेगा। सावधान रहें। : जब तक पाप नहीं धुलेगा, मुक्ति हो नहीं सकती। 99 लाख भवों के बाद गजसुकुमाल के पाप कर्म का उदय आया। काचरा छोलकर राजी हो रहा है देखो मैंने किस सफाई से काम किया, किन्तु अन्यभव में उसे चमड़ी उधड़वानी पड़ी। आज भी हैं जो अहं में आकर कहते हैं - मेरे से मत अड़ना, छकड़ी भूल जाएगा। मैंने पैरों से बाँध दिया तो तेरे हाथों से नहीं खुलेगा। ऐसा कहना क्या बुद्धिमानी है?

आप कपड़े पर अच्छा रंग लगाना चाहते हैं तो पहले गन्दगी दूर कीजिये। शेरनी का दूध टिकाना चाहें तो स्वर्ण पात्र ले आईये। सुखी रहना चाहते हैं तो आलोचना-प्रतिक्रमण कर शुद्धि कीजिये। शुद्धि कर लेंगे तो कल 'खामेमि सव्वे जीवा' बोलना सार्थक होगा। हम सभी शुद्धि करे। शुद्धीकरण करने की जरूरत है। शुद्धिकरण के नाटक की जरूरत नहीं। आज आत्म शुद्धि के दिन अपना एक-एक दोष निकाल कर चलेंगे, तो आत्मा को परमात्मा बना सकेंगे। यहीं है आत्म शुद्धि का महा पर्व पयुर्षण एवं संवत्सरी। ❖❖

अगस्त 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यो को पूर्व की भांति अगस्त माह में सेवा प्रदान की है। हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है।

वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अगस्त माह में विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 1,55,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 54,000 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च की है। इस प्रकार कुल 2,09,000 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में अगस्त माह में सेवार्थ खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा जैन आदि की टीम की ओर से तहेदिल से आभार।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

❖❖

हर बात अनुपम थी उनकी

- प्रफुल्ल कुमार सी. कोटेचा, मदुरान्तकम (तमिलनाडू)

आनन्द बाबा अलौकिक थे, हर बात अनुपम थी उनकी ।
अनुपम ज्ञान था उनका और वाणी अनुपम थी उनकी ।।
स्वामी गुरु उनके रत्नऋषि जी, गुरुभक्ति अनुपम थी उनकी ।
धर्म के प्रति निष्ठा अन्यन्य, राष्ट्रभक्ति अनुपम थी उनकी ।।

यह अनुभवी कवि की उक्ति पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत के जीवन के विषय में सही रूप से घटित होती है। आचार्य भगवंत का जीवन खुली किताब के समान था। किताब का कोई भी पेज, पन्ना या अक्षर उठाकर पढ़ लो कुछ ना कुछ बोध मिलेगा। इसी तरह पू. गुरुदेव के जीवन का कोई भी क्षण-पल प्रसंग-घटना स्मरण प्रफुल्लित मन से करलो, बहुत कुछ मिलेगा। जैसे प्रफुल्ल कोटेचा को मिला है। पू. गुरुदेव का सादा जीवन उच्च विचार था। गुणग्राही के साथ-साथ दूरदृष्टा थे। पू. गुरुदेव श्रमणसंघ के एक ओजस्वी और तेजस्वी आचार्य थे। आपश्रीजी की प्रगाढ़ विद्वता, अदम्य साहस, उत्तम कर्त्तव्यनिष्ठा, उद्भुत त्याग, जन्म से विनय, नम्रता, संगठन के हिमायती थे। अधिकार प्राप्त होने पर भी आपश्री उसी प्रकार निर्लेप थे जैसे जल में कमल रहता है। पू. गुरुदेव को इसी भव में 6-6 पद प्राप्त हुए थे। सर्वप्रथम ऋषि सम्प्रदाय के युवाचार्य (1936), ऋषि सम्प्रदाय के आचार्य (1942), वीर वर्धमान संघ के पांच संप्रदाय के आचार्य (1949), श्रमणसंघ के प्रधानमंत्री (1952), श्रमणसंघ के उपाध्याय पद (1955) बाद में श्रमणसंघ के आचार्य सम्राट् का पद (1962) इतने सारे पद-अधिकार होते हुए भी स्वयं की प्रशंसा, बढ़ाई कभी नहीं की। पू. गुरुदेव ने सारा श्रेय प्रफुल्ल्ति मन से अपने उपकारी माता एवं गुरुवर को ही दिया। 36 गुणों से सुशोभित आचार्य भगवन्त श्री आनन्दऋषि जी म. की जन्मजयंति पर श्रीमति चम्पाबाई, प्रफुल्ल कुमार, सौ. राजश्री, कु. दीपिका, जयश्री कोटेचा एवं समस्त कोटेचा परिवार की ओर से आचार्य भगवंत के चरणों में कोटिशः कोटिशः वंदन ! नमन ! अभिनन्दन !

आपके प्रवचन में न किसी भी धर्म सम्प्रदाय और राष्ट्र के प्रति किसी प्रकार का आक्षेप है और पक्षपात, अपितु प्रवचन जीवनस्पर्शी और आत्मा को उन्नत बनाने वाले तथा सामाजिक विषमता तथा असंस्कारिता का नष्ट करते हुए आत्मिक आनंद की सच्ची अनुभति कराने वाले हैं। इनमें भक्ति त्याग और वैराग्य का अनुपम तेज है तथा मानवीय सद्गुणों के प्रतिष्ठान का प्रयत्न है। आपके चिन्तन की सूक्ष्मता, हृदय की विराटता, व्यक्तित्व की भव्यता और भाषा की सरलता, सरसता प्रवचनों में स्पष्ट झलकती है, जो जनमानस को सहज ही मंत्रमुग्ध करती हुई मार्ग-भ्रष्ट प्राणियों को सही दिशा पर लाने की क्षमता रखती है। अगर मानव शुद्ध हृदय और ग्राह्य भाव से प्रफुल्लित, प्रसन्नचित्त, प्रशांतमय, आनंदमय से इनका पाठन करे, चिन्तन और मनन करे तो कोई कारण नहीं है कि वह महामानव न बन सके। आचार्य भगवन्त जब बडनेरा थे उस वक्त मैं (प्रफुल्ल) छोटा था। आचार्य भगवन्त ने मुझे पास बिठाकर कहा - पूछा तू कित्ती में पढ़े? अच्छो पढ़े जै, थारा बाबूजी चंद्रशेखर जी और थारा दादाजी कांतिलाल जी को नाम रोशन कर जै। वो शिक्षा बालपण की शिक्षा मैं भूलकर भी नहीं भूला पाता हूं। ऐसा सरल स्वभावी के धनी थे आचार्य भगवन्त श्री आनंदऋषि जी म.सा.।

पू. श्री का सबसे ज्यादा जोर रहता था। बच्चों का जीवन सुसंस्कारों से पूरित करने पर। इसके लिए स्वयं ग्रामानुग्राम विचरण कर स्थान-स्थान पर पाठशाली संस्कारधाम की प्रेरणा देते थे। जन्म जयन्ति पर उन्हें मैं क्या भेंट दूँ। जो कुछ मेरे पास है यह सब उनका ही है। जो कुछ भी बना हूँ उनकी ही कृपाकिसरण से बना हूँ। ऐसे महामानव महायोगी की 124वीं जन्मजयन्ति पर हार्दिक-हार्दिक भावांजलि। जय गुरु आनंदबाबा। ❖❖

सफल जीवन का रहस्य

- डॉ. सम्पत सेठी

एक वैज्ञानिक का साक्षात्कार आ रहा था। उनसे पूछा गया आप गरीब परिवार में पैदा हुए। आज इतने ऊँचे पद पर आसीन हो गये हैं इसका क्या कारण है? आपके गुरु कौन हैं? वैज्ञानिक हँसने लगा हँसते उन्होंने बहुत ही मार्मिक बातें बता दीं। उनका पहला जबाब था- मैं कमरे की नियमित सफाई करता था और आज भी सफाई करता हूँ। मेरे कमरे का आप निरीक्षण कर सकते हैं। कहीं पर भी जाला गंदगी कबाड़ अव्यवस्थित वस्तुऐं नहीं मिलेंगीं। दूसरा कारण- मैं रोज सेविंग करता हूँ और आइने में अपनी शक्ल का दर्शन करता हूँ। तीसरा कारण मेंरे वस्त्र कभी फटे हुए एवं गंदे नहीं मिलेंगे। आज का काम कल पर नहीं छोड़ता। मैं अपने शब्दों में बताने का प्रयास करता हूँ। विद्वान वैज्ञानिक ने अपने छोटे से साक्षात्कार में **सागर को गागर में लाकर भर दिया था।**

उसके एक-एक शब्द आत्म विश्वास से लबालब है। आपने व्यवहारिक ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान, वास्तु विज्ञान, जीवन जीने की कला सभी को प्राप्त कर लिया। इनका जबाब था मैं कमरे की सफाई पहले भी करता था, आज भी करता हूँ। जहाँ पर गंदगी नहीं होती है वहाँ पर शक्तियाँ सकारात्मक ऊर्जाऐं, आध्यात्मिक ऊर्जाऐं आती हैं। उनका दूसरा जबाब था मैं सेविंग रोज करता हूँ। पुरुष वर्ग जब सेविंग करते हैं उनके चेहरे पर एक सुंदरता की आभा आ जाती है। दर्पण में अपने चेहरे को देखकर मन में प्रफुल्लता जागृत हो जाती है। आप अपने आप को फ्रेश एवं सुंदर महसूस करेंगे। आपके अंदर आत्मशक्ति का संचार हो जाता है। तीसरा कारण फटे व पुराने कपड़ों को कभी धारण नहीं करते हैं। अगर आपके वस्त्र फटे होते हैं तो आप अपने अंदर लक्ष्मी का अभाव महसूस करते हैं। शास्त्रों में ऐसा प्रमाण माना गया है- फटे वस्त्र पहनना दरिद्री को निमंत्रण देना है। गंदे वस्त्र नकारात्मक ऊर्जाओं से भरे होते हैं। नकारात्मक ऊर्जाऐं हमें आगे बढ़ने में रुकावटें पैदा करती हैं। आज का काम कल पर नहीं छोड़ता। यह दोहा प्रचलन में है-

वैज्ञानिक क्या कहना चाह रहे हैं- इंसान आज का काम कल पर छोड़कर अपने आपको चिंताओ से घेर लेता है। कल मुझे ये करना है। ऐसा करके वह एक नई चिंता को आमंत्रण देता है। अपने सुकून को अपने से अलग कर देता है।

इतिहास पढ़ता हूँ भविष्य की चिंता नहीं करता, वर्तमान में जीता हूँ। धन्य है यह वैज्ञानिक जिन्होंने एक लाइन में पूरा समय सार ही बता दिया। जो गुजर गया वह इतिहास है वह चाहे स्वयं पर गुजरा हो या किसी औरों पर गुजरा हो। इतिहास से शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। कल क्या होगा? क्या हम छोटी मौत से उठकर क्या कुछ कर पायेंगे। आज किसी ने कल को नहीं देखा है। जिसने भी देखा है आज को ही देखा है या फिर इतिहास को देखा है। जब आज को ही जीना है तो सुंदर तरीके से जीयें। जिंदगी का एक-एक दिन अनमोल है। ये किसी भी कीमत में वापस नहीं मिलेगा। जो चीज मिलने वाली नहीं है उसे व्यर्थ में नहीं गंवाना चाहिए। उसका सदुपयोग करना चाहिए। मैं अपने कार्य को परमात्मा का आदेश समझकर करता हूँ और परमात्मा को ही समर्पित कर देता हूँ। विश्व में जितने भी अल्प बुद्धिमान हों संसार की विपरीत क्रियाऐं करते हैं। मूर्खों की श्रेणी में आते हैं उनकी क्रियाओं को देखकर अपने आप को सावधान कर लेता हूँ। कोई गलत क्रिया मुझसे नहीं हो यही प्रयास करता हूँ। जिन क्रियाओं को देखकर, सुनकर ज्ञान की प्राप्ति होती है वह मेरे गुरुवर हैं।

अपने दिनचर्या पर शासन रखता हूँ। जिन्होंने स्वयं पर शासन किया विश्व उनके अधीन हो गया। अखिर में विद्वान ने सब बातों का सार कह दिया। जिस रूम या फ्लैट में निवास करना चाहते हैं अगर वास्तु अनुकूल नहीं है। सकरात्मक ऊर्जाओं से ओत प्रोत नहीं है वहाँ नहीं रहना चाहिए। वास्तु के मूल सिद्वान्त को मानने वाले शिखर पर पहुँच जाते हैं।

पाठक गण जब विद्वान वैज्ञानिक के साक्षात्कार का एक-एक शब्द मोतियों से पिरोया हुआ है। इस मोती की माला को अपने जीवन में उतार लें तो सफलता आपके कदम चूमेगी ❖❖

भूकंप आपदा पर कविता

- रिंकल कुम्भट जैन

बहुत दिनों से गुनगुनाती धूप नहीं देखी है,
बहुत दिनों से फसलों को खिलते हुए नहीं देखा है ।
डालियों पर कहीं फूलों को मुस्कुराते नहीं देखा है,
बहुत दिनों से घर के आंगन में चहकती हँसी नहीं देखी है।
ओढ़ के चंद्रमा का घूंघट सूरज कहीं छिप गया है,
ढ़लती शाम की शांझ में बहुत दूर चला गया है।

नदियां, समुद्र, तालाबों ने अपनी सीमाएं छोड़ दी हैं,
तूफानों से आपदा बड़ी आई है ।
किनारा ढूंढ़ रही है कश्ती, सांझ होने आई है,
सुहाने बरसात के मौसम में हवा दुखों के संगीत सुनाने आई है।
ओढ़ के चंद्रमा का घूंघट सूरज कहीं छिप गया है,
ढ़लती शाम की शांझ में बहुत दूर चला गया है।

घर की किलकारी दहशत में बदल गई है,
सपनों का इंद्रधनुष टूट कर बिखर गया है ।
आंसू की चादर ओढ़कर घूंट घूंट कर जिया है,
इस भूख की आग में सब कुछ अपना खोया है ।
ओढ़ के चंद्रमा का घूंघट सूरज कहीं छिप गया है,
ढ़लती शाम की शांझ में बहुत दूर चला गया है ।

बची हुई यादों से बनाना अपना आशियाना है,
मर्ज जिंदगी का यही, यहां से एक दिन चले जाना है ।
एक दूसरे का हाथ थाम अब किस पथ की ओर बढ़ना है,
विश्वास को मोती में पिरोकर मदद के लिए हाथ आगे अब बढ़ाना है ।
ओढ़ के चंद्रमा का घूंघट सूरज कहीं छिप गया है,
ढ़लती शाम की शांझ में बहुत दूर चला गया है ।

सूरज फिर गुनगुनाएगा,
फिर अपनी लालिमा बिखेर सृष्टि में प्रकाश फैलाएगा ।
रोशनी चिरागों की चमक रही अब नभतल में,
और उस रोशनी से पूरा आसमान जगमाएंगा ।
ओढ़ के चंद्रमा का घूंघट सूरज कही छिप गया है,
ढ़लती शाम की शांझ में बहुत दूर चला गया है ।

जैनत्व की झाँकी - क्षमा वीरस्य भूषणम्

- **शुभांगी मनोजकुमर कात्रेला जैन,** निगड़ी प्राधीकरण (महाराष्ट्र)

आया है पर्व पर्युषण हम को ये बात बताने, क्षमा के धागे से सब दिल से दिल को मिलाने आओ हम वैर भाव त्यागे क्षमा का दीप जलाये, कहते है भगवान, हमको भावना हम ये लायें आओ हम माँगे क्षमा, करे दूसरों को क्षमा यही है जैनत्व की झाँकी, थोडा चिंतन किया है और बहुत है वाकी ...

अध्यात्म जगत का आधार धर्म है। धर्म ही तो हमारा जीवन है, नहीं तो जीवन में कुछ सार नहीं। धर्म की शुरुवात ही सम्यक्त्व से और सत्य से होती है। क्षमा ही जीवन का आधार है, क्षमा जीवन को प्रकृति से मिला हुआ मधुर रसमय उपहार है, जो हमकों शांति के शीतल झरने प्राप्त कराता है। क्षमा ये दो अक्षर हमारे तन-मन में शांति का संचार कराते है। पर्युषण पर्व अलौकिक पर्व है। मानव संस्कृति के पुनरुत्थान का प्रतीक यह पर्व हमारे आचार संहिता के निर्माण का पर्व है। हमारे पाश्विक वृत्तियों के विसर्जन का मानवीय गुणों के अर्जन का दिव्यता के सृजन का और आत्मतत्व के परिमार्जन का और हमारे जैनत्व के झांकी का महापर्व है। जैसे मंत्रों में महामंत्र का, तीर्थों में शत्रुंजय पर्वत का, ध्यान में शुक्ल ध्यान का, रसायनों में अमृत का, दान में अभयदान का, रत्नों में चिंतामणि का वैसे ही पर्वों में पर्युषण पर्व का और उसमें क्षमा का महत्त्व है, क्योंकि क्षमा वीरस्य भूषणम्।

भारतीय संस्कृति में पर्व का बहुत बड़ा महत्त्व है। पर्युषण पर्व विशुद्ध आध्यात्मिक पर्व है। यह पर्व अपने आपको देखने एवं बुराईयों से हटने की प्रेरणा देता है। आत्म जगत् में फिर से नई क्रांति उत्पन्न करना और इन्द्रिय भोगों पर त्याग का अंकुश लगाना यही पर्युषण पर्व का संदेश है। पर्युषण पर्व आत्म जागृति का पर्व है। तीर्थंकरों ने आत्मा को जगाकर उसमें परमात्म भाव प्रकट कर लिया था। आत्म चिंतन से परमात्म शक्ति को जगाया था। यह शक्ति हसमें भी है, उस शक्ति को जगाने की आज आवश्यकता है।

पर्युषण पर्व भी जीवन में एक नया परिवर्तन लाता है. मोड लाता है, उल्लास और उमंग जागृत करता है। इसलिए इन आध्यात्मिक दिनों को हमने पर्व कह दिया है। पर्व का अर्थ होता है 'पवित्र दिन जैनाचार्यों की दृष्टि हमेशा ही आध्यात्म प्रधान रही है। इसलिए पर्व का अर्थ धर्म संचय का दिन कहा है। इस पर्व में वीतराग भाव की विशेष साधना की जाती है। परस्पर वैर-विरोध को शान्त कर क्षमा प्रेम एवं मैत्री भाव की गंगा बहाई जाती है।

शत्रु से शत्रु भी इस दिन एक-दूसरे को क्षमादान करके मन को शांत एवं निर्मल बनाने का प्रयास करते है। इसी दृष्टि से पर्युषण पर्व के अन्तिम दिन को क्षमावाणी अथवा विश्वमैत्री दिवस के रुप में मनाया जाता है। इस पर्व की भावना जो एक दिन जागृत होती है। यदि हमारे जीवन में सदा-सदा के लिए आ जाये तो सच में संसार स्वर्ग बन जायगा, फिर कोई किसी का शत्रु न रहे। सर्वत्र बंधुभाव का दर्शन होगा और 'वसुधैव कुटुम्बकम' का स्वप्न साकार हो जायेगा।

पर्युषण पर्व की क्षमा पर्व के रुप में ही सर्वाधिक प्रसिद्धि है। इसका कारण है कि इस पर्व पर सबसे अधिक बल क्षमा पर ही दिया है। 'पज्जूसमणा' का अर्थ ही 'पर्युपशमना' यानि कषाय भावों की सब प्रकार से शान्ति करना। पर्युषण पर्व शान्ति अनुभव करने का पर्व है।

खमियव्वं खमावियव्वं, उवसमियव्वं उवसमावियव्वं किसी को कटुवचन कह दिया हो, किसी को ठेस पहुंचाई हो तो उसी समय, उससे क्षमायाचना करनी चाहिए, क्षमा माँगनी चाहिए और जो क्षमा माँगता है, उसे क्षमा देनी चाहिए। स्वयं को शान्त होना चाहिए और जो प्रतिपक्षी सामने खड़ा है उसे भी उपशान्त होने का अवसर देना चाहिए। क्योंकि **'जो उवसमइ तरस अत्थि आराहणा । जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा।।** जो उपशान्त होता है, उसकी ही धर्माराधना सफल होती है, जो उपशान्त नहीं होता, उसकी सब धर्माराधना व्यर्थ जाती है। राख में डाले हुए घी की भाँति अनुपशान्त व्यक्ति का तप भी व्यर्थ हो जाता है। भगवान ने कहा है। **उवसमसारं खु सामण्णं,** उपशम भाव-क्षमा, यही साधुता का सार है। एक बार श्री जवाहरलाल नेहरुजी ने कहा था बिना क्षमा का जीवन रेगिस्तान है, यह मैंने प्रत्यक्ष जीवन

में अनुभव किया है।' जो क्रोध आदि का उपशमन करता है, खमत-खामणा करता है वही आराधक होता है।

राजा उदायन ने भी पर्युषण पर्व की आराधना के लिए उसने अपने अपराधी दुश्मन चंडप्रद्योत को भी जाकर सरलता और विन्रमता के साथ खमाया। वह व्यंग्य में बोलता गया तब दुश्मन चंडप्रद्योत बोला यह कैसा खमत खमाना ? मुझे बंदी बनाकर खमा रहे है? मैं तो ऐसे क्षमापना नहीं करता। पहले मुझे बंधन मुक्त करो, तभी मैं क्षमापना करूंगा? सरल हृदय उदायन ने अपने पौषध व्रत की, पर्युषण पर्व की आराधना के लिए मन को निःशल्य बनाया और सचमुच में शत्रु को बन्धन मुक्त करके उसे समानता का अधिकार दिया और फिर उससे क्षमापना कर आपनी सरलता, नम्रता और उपशान्त वृत्ति का अद्‌भूत परिचय दिया। उदायन राजा का यह क्षमापना ढ़ाई हजार वर्ष बीत जाने पर आज भी आदर्श बना हुआ है और हमें पर्युषण में क्षमापना की अगर प्रेरणा दे रहा है।

गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से पूछा कि क्षमा (खंति) से क्या लाभ होता है? तब भगवान महावीरस्वामी ने बताया **'खंतिए णं जीवे परिसहं जिणइ'** क्षमा से प्राणी परीषह को जीत लेता है। क्षमा करने की वृत्ति से मनुष्य को सहनशीलता आती है, सहिष्णुता आती है, धीरता और गंभीरता आती है। कई बार जीवन में भी कष्ट आते है, विपत्तियाँ आती है उनसे लड़ने के लिए, संकटों पर विजय प्राप्ति के लिए मनुष्य को सहिष्णुता और धीरता की सबसे अधिक जरुरत है। सहिष्णु और धीर व्यक्ति ही जीवन में विजयी हो सकता है, संसार में प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति वह प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार क्षमा से लौकिक एवं पारलौकिक दोनों ही जीवन सफल हो जाते हैं। भगवान महावीर का कथन है क्षमा मांगनी चाहिए, क्षमा देनी चाहिए, क्योंकि जो क्षमा याचना करके कषायों का उपशम कर लेता है, वह ही आराधक है। श्रमण संस्कृति का सार ही उपशम। अर्थात जैन धर्म की स्थापना का आधार ही क्षमा है। क्षमा का उत्कृष्ट रुप यही है कि बदला लेने की शक्ति होते हुए भी अपराधी को क्षमा कर दिया जाए।

'कर्म पोथी के कोरे पन्नों मे रंग भरे मानवीय संवेदनाएँ स्वस्थ तन हो, निर्मल मन हो, शांति-अहिंसा अलख जगाएँ। क्षमा का दीप मन में चेतना जगाएँ अहिंसा के धर्म पथ पर चलकर विश्व शांति और विश्व मैत्री का संदेश पहुंचाये।

जहां अनेक प्राचीन सभ्यताओं, रीति-रिवाजों, भाषाओं आदि का संसार से लोप हो रहा है वहीं प्रेम और मैत्री का संदेश वाहक होने के कारण क्षमापना दिवस को जैन समाज अत्यंत श्रद्धा और उल्लास से मनाता है। आज के संदर्भ में अतीव आवश्यकता है कि इस पर्व को साम्प्रदायिक चार दिवारी से बाहर जन-जन तक पहुंचाया जाए। वर्तमान युग में जब मानवीय भावनाएं खोखली होती जा रही है। अपनों से दूर हम सब अपने-अपने दायरों में कैद होकर अकेलेपन का अभिशाप झेल रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता की ओर उन्मुख होकर उनका अनुसरण कर रहें हैं। राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विकासोन्मुखी कार्याक्रमों का न केवल निर्शारण ही करें बल्कि कटिबद्ध होकर सम्यग् पुरुषार्थ की छैनी में प्रवर्तित होना अत्यावश्यक होगा। इसके हमें रिश्वत एवं भ्रष्टाचार का भंडाफोड करना, कालाबाजार, मिलावट, अप्रामाणिक व्यवसायों का समूलोच्छेदन करना होगा। राष्ट नेताओं की आध्यात्मिक चेतना को जागृत करना होगा। तभी उज्ज्व्ल पवित्र पावन बन पायेंगे और पर्युषण पर्व का अभिवादन कर पायेंगे फिर जीवन का कण-कण आलोक से जगमगाएगा। आज जरुरत है इस पर्युषण पर्व की प्रासंगिकता को पहचानते हुए अपनी सभ्यता, संस्कृति की ओर उन्मुख होने का प्रयास करें। क्षमा यह कमजोरी नहीं है, क्षमा तो बहुत बड़ी फौलादी ताकत है। दुनिया क्या मानती है, दुनिया क्या कहती है यह बात ही जाने दो। क्षमा तो ऐसा बल है, जो तुम्हें जीने का संकल्प देता है। स्वंय को जीतने का प्रबल संबल देता है। तुम अपने आप को समझ सकते हो। स्वंय को जीतने से बढ़कर नहीं कोई सिद्धि इस जगत में। बस पूरे दिल और मन से दो हाथ जोड़ने हैं। यकीन मानो दो हाथ जोड़ने से केवल हाथ नहीं जुड़तें बल्कि दो दिल भी जुड़ जाते है। दुश्मन भी दोस्त बन जाते हैं। हृदय में पड़े अवसाद घुल जाते हैं। मन की गांठें खुल जाती हैं। बस जरुरत है एक कदम आगे बढ़ाने का, तो आयें इस क्षमापना दिवस पर हम सब एक दूसरे से बिना किसी मतभेद के पूरे मन से क्षमा मांग ले, क्षमा कर दें। ❖❖

समाचार प्रकाश

चातुर्मास प्रारंभ से ही शिवाचार्यश्रीजी के दर्शन हेतु उमड़ा जनसमुदाय

सूरत (गुजरात) : जैन धर्म में चातुर्मास के चार माह का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। चार माह में त्याग, तपस्या, करुणा, परोपकार, जीवदया आदि अनेक धार्मिक कार्यों द्वारा श्रावक-श्राविका अपने जीवन का उत्थान और विकास करते हैं। धर्म कार्य में प्रवृत्ति और पापों से निवृत्ति का नाम है चातुर्मास। 4 कशायों और 5 इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है चातुर्मास। जिनवाणी श्रवण करके अपने कर्मों की निर्जरा चातुर्मास का प्रमुख ध्येय होता है। जैसे किसी किसान से पूछा जाये की 12 में से 4 गये तो कितने बचे तो वह किसान कहेगा की कुछ नहीं बचा, वर्षाकाल के चार माह अगर बारीश नहीं होगी तो खेती नहीं होगी, खेती नहीं होगी तो किसान खायेगा क्या, तो किसान वर्षा का महत्त्व जानता है। वैसे ही जैन धर्म के प्रत्येक अनुयायी के लिए चाहे वह साधु हो या साध्वी श्रावक हो या श्राविक। अगर चातुर्मास काल के 4 महीने धर्म ध्यान नहीं किया तो खाली हाथ मलने के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं होगा।

चातुर्मास प्रारम्भ हो चुका हैं, आपमें शक्ति है, सामर्थ्य है, आपके पास समय है तो धर्म ध्यान अवश्य कीजिए। संसार के समस्त सुख, वैभव, रिश्ते, नाते, पद, प्रतिष्ठा, धन, दौलत यहीं छूट जाएगी साथ जायेगा आपका धर्म, उस धर्म के लिए कुछ समय जरूर निकालें। प्रवचन सुनें, प्रतिक्रमण करें, कोई न कोई प्रत्याख्यान जीवन में धारण करें या परोपकार का कोई न कोई कार्य अवश्य करें, जिससे आपका जीवन सार्थक होगा और चातुर्मास भी सार्थक होगा। साधु-साध्वीवृंद का आपके नगर में दूर-दूर से विहार करके आना सार्थक हो जायेगा।

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा. आदि ठाणा आत्म भवन अवध्ध संगरीला में सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। आचार्य भगवन की आत्म-ध्यान-साधना निरन्तर गतिमान है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका निरन्तर भगवन के दर्षनार्थ दूर-दूर से पधार रहे हैं।

26 जून को सरलमना महासाध्वी श्री इन्दुप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-6 का राजस्थान से विहार करके गोडादरा चातुर्मास हेतु सूरत पधारना हुआ। महासाध्वीजी अवध संगरीला में आचार्य भगवन के दर्शन हेतु पधारे, इन्दौर साधु-सम्मेलन के पश्चात साध्वीवृंद का मिलना हुआ। इस अवसर पर गोडादरा श्रीसंघ के सदस्य उपस्थित थे। दिनांक 29 जून 2024 को श्री सुरेन्द्रजी जैन अशोक विहार दिल्ली से आचार्यश्रीजी के दर्षनार्थ उपस्थित हुए।

दिनांक 1 जुलाई 2024 को श्री सुनील जैन प्रीत विहार दिल्ली से श्री प्रशांत गांधी पूणे से आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। दिनांक 2 जुलाई 2024 को मेवासा, महाराष्ट्र से डॉ. फिरोदियाजी आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। दिनांक 11 जुलाई, 2024 को प्रातःकाल की स्वर्णिम प्रभा के साथ खरतर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी महाराज, गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी एवं मुनि श्री विरक्तप्रभ सागर जी आदि ठाणा आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा से आध्यात्मिक मिलन हेतु उपस्थित हुए। इस दौरान उन्हें यह ज्ञात हुआ कि श्रमण संघ के आचार्यश्रीजी बलेश्वर स्थित आत्म भवन, अवध संगरीला में अपनी आत्म साधना हेतु विराजमान हैं तो वे आचार्यश्री से आत्मीय मिलन हेतु पधारे। इस आध्यामिक मिलन के अवसर पर दोनों महान आचार्य भगवतों ने आध्यात्मिक चर्चा की जिसमें जैन धर्म में संवत्सरी एकता किस प्रकार हो? कैसे हम सभी जैनत्व को जन-जन से जोड़ें? किस प्रकार आज का युवा वर्ग धर्म के प्रति आकर्षित हो? प्रभु महावीर की मूल आत्म ध्यान, भेद विज्ञान, वीतराग साधना आदि विाशेष विषय रहे। गच्छाधिपतिजी ने शिवाचार्यश्रीजी की आत्म-ध्यान-साधना, सरलता, मिलनसारिता, जैन एकता, तप, त्यागमय जीवन की अंतःकरण से अनुमोदना करते हुए पूर्व में 1 जून 2017 को महिदपुर, उज्जैन के मार्ग में हुए मिलन को भी याद किया। आचार्यश्रीजी ने गच्छाधिपतिजी से खरतरगच्छ

की जानकारी लेते जैन एकता एवं एक संवत्सरी एकता पर विशेष वार्ता की। इस अवसर पर आचार्यश्रीजी ने गच्छाधिपतिजी को आगामी चातुर्मास की शुभकामनाएं देते हुए अपना साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर अवध संग्रीला, पर्वत पाटिया एवं पाल क्षेत्र से श्रावक समुदाय उपस्थित था।

दिनांक 13 जुलाई षनिवार को प्रातः 9:15 बजे श्रमण संघ के आचार्य सम्राट पूज्य शिवमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-7 चातुर्मास पूर्व स्थान परिवर्तन कर आत्म भवन से विहार कर श्री रमेश भाई जैन के आवास पर पधारे जहां जैन परिवार द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री रविन्द्रनाथ जैन, ट्रस्टी श्री रोहित जैन, रेखा पाठक ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की।

दिनांक 15 जुलाई 24 को चन्द्रशेखर आजाद नगर, भीलवाड़ा के 15 सदस्यों एवं श्री कांतीकारकुमार जैन मुंबई से ने आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। दिनांक 17 जुलाई को श्रीमती साधना रूणवाल, औरंगाबाद से सपरिवार आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। दिनांक 19 जुलाई शुक्रवार को अवध संगरीला स्थित आत्म शिव भवन में आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म.सा. के सान्निध्य एवं शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउण्डेशन के तत्वावधान में निःषुल्क पैरों की समस्या निवारण हेतु एक दिवसीय षिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अवध संगरीला एवं आस-पास के लगभग 80 महिला पुरुषों ने रजिस्ट्रेशन करवाकर शिविर का लाभ लिया। दिनांक 20 जुलाई को चातुर्मासिक पक्खी के अवसर पर शिवाचार्य समवसरण में आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में नवकार महामंत्र के सामूहिक जाप के साथ चातुर्मास का प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर उन्होंने फरमाया कि भारतवर्ष में अनेक स्थानों पर साधु-साध्वीवृदं चातुर्मास कर रहे हैं, सभी चातुर्मास उत्तम धर्म आराधना से युक्त हो, चातुर्मास में आत्म साध्ना, धर्माराधना को प्रमुखता दी जाए। आडम्बर से बचने का प्रयास करें। अधिक से अधिक तप, त्यागमय जीवन जीयें।

इससे पूर्व श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरिषमुनिजी म.सा., युवा मनिषी श्री शुभममुनिजी म.सा., श्री शमितमुनिजी म.सा., श्री निशांतमुनिजी म.सा., श्री शाश्वतमुनिजी म.सा., श्री शौर्यमुनिजी म.सा. ने चातुर्मास के चार माह को महत्त्वपूर्ण बताते हुए लक्ष्य की ओर पुरुषार्थ करने के भाव प्रकट किये। चातुर्मास में प्रतिदिन प्रातः 06:30 से प्रार्थना एवं आत्म-ध्यान का प्रयोग होगा तथा प्रातः 10 बजे से 11 बजे तक श्रीतत्त्वार्थ सूत्र एवं श्री उपासकदशांग सूत्र पर प्रवचन होंगे। इस अवसर पर श्री विभोर जैन दिल्ली से, साधिका सुनीता जैन राहता से, श्री अशोक जैन, घाटकोपर, मुंबई से, श्री अरिहंत जैन, भीलवाड़ा से, श्री महेन्द्र पोखरना, उदयपुर से आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

दिनांक 21 जुलाई को गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आचार्यश्रीजी ने सतगुरु का जीवन में क्या महत्त्व होता है इस विषय पर विशेष उद्बोध्न प्रदान किया। इस अवसर पर दिल्ली, लुधियाना, सोनीपत, बारडोली, अंकलेश्वर, सूरत, मुंबई, राहाता, नाशिक, उदयपुर आदि अनेक क्षेत्रों से गुरुभक्त अपने श्रद्धा को समर्पित करने हेतु उपस्थित थे। इस अवसर पर सरवण गांव बारडोली से श्रीमती ललिता जी कुमट ने आचार्यश्रीजी के सान्निध्य में 35 उपवास की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इस अवसर पर तपस्वी ललिताजी कुमट का शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेषन की ओर से माला एवं अभिनन्दन पत्र द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री संतोष जैन, श्रीमती सुदेश जैन, गुड़गांव से, साधिका कमलेश जैन, चंडीगढ़ से आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

साध्वी डा. दर्शनप्रभाजी म.सा. के पावन सान्निध्य में यशवंतपुर स्थानक में 150 से अधिक भाइयों की विशाल भिक्षु दया का आयोजन

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ यशवंतपुर बेंगलोर में दिनांक 05.08.24 को साध्वी पू. डा. दर्शनप्रभाजी म.सा. ने यशवंतपुर स्थानक की धर्मसभा में आज राजस्थान सिंहनी चारित्रप्रभा की जन्म जयंती बड़े

ही धूमधाम से भाईयो की विशाल भिक्षु दया के साथ मनाई, जिसमें करीबन 150 भाईयो ने एक दिन की साधुचर्या को अपनाया। महावीर जैन नवयुवक मंडल ने पूरे कार्यक्रम को बहुत ही सुंदर और व्यवस्थित रूप से संपन्न कराया। युवा मंडल के अध्यक्ष राकेश संचेती, मंत्री मनोज बोहरा, जैन कॉन्फ्रेंस, कर्नाटक युवा शाखा के युवा अध्यक्ष विकास कोठारी, एस.एम. एस. विहार सेवा से राकेश बोहरा और पूरे युवा संघ ने इसे सफल बनाने पूरा सहयोग दिया। सभी भिक्षु दया करने वालो को अशोक कुमार महेंद्र कुमार रांका की और से प्रभावना दी गई। जिसमें गंगानगर संघ के कार्याध्यक्ष जशवंत गन्ना, टी दासरहल्ली से भेरूलाल काल्या, पारसमल बागरेचा, कैलाश सेहलोत, दिनेश पोखरणा आदि अनेक भाईयो की उपस्थिति रही।

प्रेषक : रमेश बोहरा जैन, मंत्री

मरूधर केसरी पू. श्री मिश्रीलालजी म.सा. और शेर ए राजस्थान प्रवर्तक श्री रूपचंदजी म.सा. 'रजत' की जयंती मनाई

बैंगलोर (कर्नाटक) : उपाध्याय प्रवर केवल मुनि जैनोदय ट्रस्ट के तत्वावधान और बसंतमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में मरूधर केसरी मिश्रीलालजी म.सा. की जन्म जयंती और शेर ए राजस्थान प्रवर्तक पू. श्री रूपचंदजी म.सा. 'रजत' की पुण्यतिथि, धर्म आराधना और तप जप एवं व्रत पचक्खान से ,अशोक नगर में मनाई गई। बसंतमुनिजी म.सा. ने कहा कि स्थानकवासी जैन संप्रदाय के घटकों को एकजुट करने में मिश्रीमलजी म.सा. का विशेष सहयोग रहा। सादड़ी और जोधपुर साधु अधिवेशन के सफल और सकारात्मक संयोजन में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। अनेक जैन ग्रंथों की रचनाएं आपने की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए ट्रस्ट के महामंत्री श्री प्रेमकुमार कोठारी जैन ने बताया कि श्री मिश्रीमलजी म.सा. द्वारा जैन समाज में अद्वितीय सेवाओं और जीवदया पर आपके सहयोग को देखते हुए केन्द्र सरकार ने डाक टिकट जारी किया। आपने सौ से अधिक शिक्षण संस्थानों, छात्रावास, स्थानक भवन, चिकित्सालय, गोशाला और बकरा शालाओं के निर्माण में प्रेरणा दी। प्रवर्तक रूपचंद्रजी म.सा. 'रजत' का जन्म नाडोल में चौहान परिवार में हुआ। आपकी जैनेश्वरी दीक्षा जोधपुर में हुई। आपका देवलोकगमन जैतारण में हुआ। दक्षिण भारत के अनेक श्रेष्ठी श्रावक-श्राविकाओं को आशीर्वाद और मार्गदर्शन दिया। आपको श्रमण संघ के बेताज बादशाह की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस प्रसंग पर माया कोठारी ने गायन और आशा गादिया ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम में श्री जैन संघ ट्रस्ट के अध्यक्ष देवराज चोपड़ा, केवल मुनि जैनोदय ट्रस्ट के अध्यक्ष महावीर मरलेचा, साधुमार्गी संघ के महावीर चोपड़ा, सुधर्मा श्रावक संघ के मनोहर गादिया, रत्न हितैषी संघ के यशवंत खींचा, श्रमण संघ के राजेंद्र मरलेचा, शूले कल्याण मित्र मंडल के महेन्द्र मेहता, शूले युवा संगठन के सुमित कोठारी, संस्कार महिला मंडल अध्यक्ष ललित कोठारी के अलावा शूले, आस्टीन टाउन, अलसूर, इंद्रानगर और मैसूर से अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे। इस प्रसंग पर रमेश चोपड़ा ने कहा कि श्री जैन सेवा महिला मंडल की तरफ से अशोक कोठारी की सेवा भक्ति को देखते हुए उनका सम्मान किया गया।

प्रेषक : डॉ. बी. रमेश गादिया जैन

महापुरुषों का साहित्य, ज्ञान और आदर्श सदैव हमारे साथ रहेगा - डॉ. श्री वरुणमुनिजी म.सा.

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ राजाजीनगर, बैंगलोर के तत्वावधान में उप-प्रवर्तक पू. श्री पंकजमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में दक्षिण सूर्य पू. डॉ. वरुणमुनिजी म.सा. ने आचार्य सम्राट् श्री आनंदऋषिजी म. सा. के 124वें और उपाध्याय पू. श्री केवलमुनिजी म.सा. के 111वें जन्मोत्सव के अवसर पर कहा कि आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. अपने युग के अद्वितीय महान संत थे। उन्होंने भारतीय धर्म दर्शन और जैन आगमो का गहरा अध्ययन

किया। गुरु आनंद, आनंद के देवता थे, जन-जन की आस्था के केंद्र थे। जो भी गुरु आनंद का नाम लेते उनका बेड़ा पार हो जाता है। ऐसी अलौकिक शक्ति उनके नाम मात्र में है। आचार्यश्रीजी का सम्पूर्ण जीवन अलौकिक गुणों का संगम स्थल था। विनय, सरलता, गुरु भक्ति और समभाव की साधना उनके जीवन की महान अंतरंग साधना थी। उनके आनंद प्रवचन बहुत ही विख्यात हुए। उन्होंने गहरा ज्ञान अपने प्रवचनो में संजोया। संघ समाज का संगठन ही आपका उद्देश्य था। आचार्य आनंदऋषि कई शिक्षण संस्थानों के संस्थापक थे। उनके नाम से अहमदनगर में आनंदऋषि अस्पताल आज भी संचालित है। वे सोलह भाषा के ज्ञाता थे।

उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा. का गुणगान करते हुए उन्होंने कहा कि श्री केवलमुनिजी म.सा. एक सरल महाविभूति थे। जिनकी वाणी के अंदर माधुर्य था, व्यक्तित्व के अंदर आकर्षण था। जो एक बार उनके दर्शन कर लेता उनको मधुर वाणी को उनके व्यक्तित्व को कभी भुला नहीं पाता। शिक्षा और साहित्य में उनकी विशेष रुचि थी। साहित्य के सम्राट थे। 100 से भी अधिक ग्रंथों की रचना की। उन्होंने अपने संयम जीवन में त्याग और वैराग्य की अनेक प्रेरणादायक कहानियाँ लिखी। उन्होंने सात दशक तक संयम जीवन में जिनशासन की सेवा की मानवता की सेवा की। वें महापुरुष भले ही आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनका साहित्य, उनका ज्ञान और उनके आदर्श हमारे साथ है। ऐसे महान संतो का आशीर्वाद सदैव हम सभी पर बना रहे यही मंगलकामना। बच्चों को सामायिक आराधना की प्रभावना अजीतमल पदमचंद भूरट परिवार की ओर से दी गई। दोपहर में त्रिशला महिला मंडल की ओर से गुरु मिश्री-रूप-सुभद्र के जीवन चारित्र पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अध्यक्ष प्रकाशचंद चाणोदिया ने आभार व्यक्त किया और संचालन संघ महामंत्री नेमीचंद दलाल ने किया।

प्रेषक : नेमीचन्द दलाल जैन

आनंदऋषिजी म.सा. की जन्म जयंति पर गुणानुवाद सभा का आयोजन

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा. की 124वीं जन्म जयंति पूरे भारतवर्ष में एक साथ मनाई गई। उसी क्रम में जय आनंद मधुकर रतन भवन बांध तालाब दुर्ग में भी गुणानुवाद सभा का आयोजन साध्वी सुमंगलप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित किया गया। पूज्य गुरुदेव आनंदऋषिजी म.सा. का प्रमुख तप जिसकी नियमित आराधना और साधना किया करते थे और यह तप करने की हमेशा प्रेरणा दिया करते थे 90 वर्ष की उम्र में भी प्राकृत भाषा का ज्ञान लेते थे, हमेशा गुलाब की तरह खिलता हुआ चेहरा गुरु भक्तों को एक नई ऊर्जा देता था।

जय आनंद मधुकर रतन भवन की धर्म सभा को संबोधित करते हुए गुरु आनंद के गुणों का बखान करते हुए साध्वी सुमंगलप्रभाजी म.सा. ने कहा गुरु की महिमा अपरंपार होती है और गुरु कृपा चार प्रकार की होती है। स्मरण शक्ति दृष्टि शब्द और स्पर्श के रूप में गुरु की कृपा हमेशा बनी रहती है, हमें सिर्फ पावन पवित्र पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है।

धर्म सभा के आयोजन में श्रवण संघ महिला मंडल के सदस्य सदस्यों ने गुरु पर समर्पित शानदार भक्ति गीत प्रस्तुत किया जिनमें रचना श्रीश्रीमाल, रुचिता बाघमार परिधी मोदी कविता रतन बोहरा पायल पारख चंचल श्रीश्रीमाल ने हृदय स्पर्शी मंत्र मुग्ध कर देने वाले शानदार गीत की प्रस्तुति दी तथा 70 लोगों ने आयंबिल तप की आराधना की।

प्रेषक : नवीन संचेती जैन

पशु में मानवता

प्रसिद्ध लेख्का अल्बर्ट श्वाइब्जर ने एक जगह लिखा है - 'हेनोवर (जर्मनी) में मेरे एक मित्र छोटा सा कहवाघर चलाते थे। वे रोज चिड़ियों के लिए डबलरोटी के टुकड़े डाला करते थे।' एक दिन उन्होंने देखा कि एक गौरैया लंगड़ी होने के कारण ठीक से फुदक नहीं पा रहा है।

उसे देखकर बड़ा विस्मय हुआ कि दूसरी गौरैया उस गौरैया के आसपास के टुकड़ों को नहीं छूती थी, ताकि वह निर्विघ्न अपना पेट भर सके।

शोक समाचार

पू. श्री अबीरमुनिजी म.सा. का संथारा सहित पंडित मरण

अहमदनगर (महाराष्ट्र) : कर्नाटक गज केसरी महान क्रान्तिकारी युग पुरुष परम पूज्य श्री गणेशीलालजी म.सा. की उज्ज्वल परंपरा के संत रत्न, श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक परम श्रद्धेय श्री श्रुतमुनिजी म.सा. के शिष्य रत्न आत्मार्थी. तपस्वी. सेवाभावी. मधुर भाषी पूज्य श्री अबीरमुनिजी म.सा. का चार दिवसीय संथारा सहित पंडित मरण (दिनांक 16 अगस्त 2024 स्थल आनन्द पावन धाम अहमदनगर) में देवलोकगमन से कोटा संप्रदाय के साथ अपितु श्रमण संघ में अपूर्णीय क्षति हुई आपके सद्गुणों, अवदानो, सत्कार्यों को स्मरण वंदन करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से आपके उच्च भव की मंगलकामनाएं करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

पूज्य श्री गौतममुनिजी म.सा. का देवलोकगमन

अहमदनगर (महाराष्ट्र) : श्रमण संघीय बालबोधक पू. श्री गौतममुनिजी म.सा. का लम्बी बीमारी के पश्चात करीब दिनांक 16.7.2024 अहमदनगर के समीप क्षेत्र में देवलोकगमन हो गया। आपके चातुर्मास चेन्नई, मदुरांतकम सहित दक्षिण भारत के अनेक क्षेत्रों में भी सम्पन्न हुए। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से आपके श्रीचरणों में भावपूर्ण हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

महासाध्वी पूज्या डॉ. श्री मंजुश्रीजी म.सा. का संथारे सहित देवलोकगमन

भिवरी (महाराष्ट्र) : आगमाचार्य, जिनशासन गौरव, परम पूज्या महासाध्वी डॉ. श्री मंजुश्रीजी म.सा. का संथारे सहित देवलोकगमन दिनांक 18 अगस्त 2024 हो गया। मृत्यु जीवन का अटल सत्य है। प्रत्येक व्यक्ति को एक न एक दिन इस संसार से विदा लेनी ही पड़ती है। इस परम सत्य को स्वीकार करते हुए भी परम पूज्य महासाध्वी डॉ. श्री मंजुश्रीजी म. सा. के गोलोकवासी होने के दुखद समाचार से हम सब आहत है। आप संस्कृत, प्राकृत और जैन धार्मिक साहित्य, जिन्हें आगम नाम से अभिहित किया जाता है, पर उनका प्रभुत्व सर्वविदित था। अत्यंत मृदुभाषी एवं विनम्रता की प्रतिमूर्ति मंजुश्रीजी का सब आदर करते थे। संथारा से अपनी देह का त्याग करना पुण्यात्मा का लक्षण है। साध्वीजी का संपूर्ण जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्पद है। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि, विन्यांजलि अर्पित करते हैं।

समता विभूति साध्वीरत्ना पू. श्री सुचेताजी म.सा. का संल्लेखना पूर्वक समाधि मरण

लुधियाना (पंजाब) : समता विभूति साध्वीरत्ना पू. श्री सुचेताजी म.सा. का संल्लेखना पूर्वक समाधि मरण दिनांक 17 जुलाई को लुधियाना में हो गया। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि, विन्यांजलि अर्पित करते हैं।

श्रीमती सुषपाजी जैन का देवलोकगमन

दिल्ली : सुश्राविका श्रीमती सुषमाजी जैन धर्मपत्नी श्री सत्यभूषणजी जैन-राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस का दिनांक 24 जुलाई को देवलोकगमन हो गया। आप एक आदर्श सुश्राविका तथा साधु-साध्वीजी म.सा. की सेवा में रत रहने वाली महिला थी। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार आपके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

श्रीमती चुकीदेव गादिया जैन का स्वर्गवास

कुड़की (राजस्थान) : श्रीमती चुकीदेवी गादिया जैन धर्मपत्नी स्व. श्री तेजराजजी गादिया जैन का दिनांक 09 अगस्त को आकस्मिक निधन हो गया। विधि की विडम्बना के आगे हम सब नतमस्तक हैं।

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

नई दिल्ली : 26 जुलाई 2024 को जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति की सभा केन्द्रीय कार्यालय जैन भवन में सम्पन्न।

भारत के 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के केंद्रीय कार्यालय जैन भवन, नई दिल्ली में स्टॉफ एवं अथितिगण द्वारा झंडारोहण कर राष्ट्रगान किया गया।

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

रोहिणी, दिल्ली : संघ गौरव गुरूदेव श्री प्रेमसुख जी म. सा. के 27वें पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित विश्व शान्ति महायज्ञ के अवसर पर उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म., सलाहकार श्री रमणीक मुनि जी म., शास्त्री श्री उपेन्द्र मुनि जी म. तथा अन्य साधु-साध्वी जी म. ने भी सहभागिता की। हजारों भक्तों की उपस्थिति ने इस आयोजन को भव्य बनाया।

हनुमंत नगर, बैंगलोर : उपप्रवर्तक श्री पंकज मुनि जी म. सा., महासती श्री धर्मप्रभा जी म. सा. आदि ठाणा चतुर्विध संघ के सान्निध्य में सम्पन्न गुरु मरूधर केसरी गुरु रूप रजत जन्मोत्सव।

बदनापुर, महाराष्ट्र : प्रवर्तिनी महासती श्री प्रतिभाजी म. सा. एवं महासती श्री सिद्धिसुधाजी म. सा. आदि ठाणा एवं उपस्थित दर्शनार्थी।

उदयपुर : महासती श्री संयमलता जी म. सा. आदि ठाणा एवं उपस्थित दर्शनार्थी।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 बेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित